RNI No. :BIHHIN/2013/53084

संपादक
अभिजीत कुमार, 9431006107
प्रबंध संपादक
मुकेश कुमार सिंह, 9534207188
समाचार संपादक
अखिलेश कुमार, 9431089053
राजनीतिक संपादक
प्रो. नीरज कुमार सिंह, 9431049337
मैनेजिंग एडिटर
बिधुरंजन उपाध्याय, 8969478180
सहायक संपादक
प्रभाकर कुमार राय/एस. एन. श्याम
संपादकीय सलाहकार
राजीव कुमार सिंह 9431210181
रंजीत कुमार 8800689555
कॉन्सेप्ट एडिटर
अनूप कुमार शर्मा, 7004821433
विधि सलाहकार
वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट
बिहार ब्यूरो
अनूप नारायण सिंह, साहब तनवीर 'शब्बू'
मुख्य संवाददाता
सोनू सिन्हा,9431006189
आशीष कुमार
जिला ब्यूरो
बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316
अमित सिंह, 9430595995
भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार, (ब्यूरो चीफ), 9334114515
सारण प्रमंडल : सचिन पर्वत, 9430069987
समस्तीपुर : मृत्युंजय कुमार ठाकुर, 8406039222
चांदन : अमोद कुमार दूबे : 8578934993
हसनपुर : विजय चौधरी : 9155755866
मुंगेर प्रमंडल : बिधुरंजन उपाध्याय
सहरसा: आशीष झा
जमुई: सुशान्त साईं सुन्दरम
किशनगंज : हबीबउर रहमान
बाराहाट : हेमन्त कुमार (संवाददाता)
सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संवाददाता)
बिहार-झारखंड : अभिनव कुमार 7903292877
दिल्ली : नवल वत्स
ग्रेटर नोएडा : अरमान कुमार, 8920215318

प्रधान कार्यालय
गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7, पटना - 800 020 (बिहार)
मो.- 9431006107, 9939815347
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7 पटना - 800 020 (बिहार) से प्रकाशित व एस. एम. ऑफसेट पंडुईकोठी लंगर टोली, डीएन दास लेन, पटना-800 004,से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विवाद के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे। इसके लिए संपादक से सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का निबटारा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक

डॉ. संजय मयूख
राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी भाजपा
जय जयराम सिंह
JJRS CONSTRUCTION PVT. LTD.

चर्चित बिहार

वर्ष : 7, अंक : 3, नवंबर 2019, मूल्य : 25/- राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

4 आजादी से पहले और आजादी के बाद आमने-सामने रहे हिंदू...

अब थियेटरों के कारण ... 21

जानिए कौन है डॉक्टर ... 23

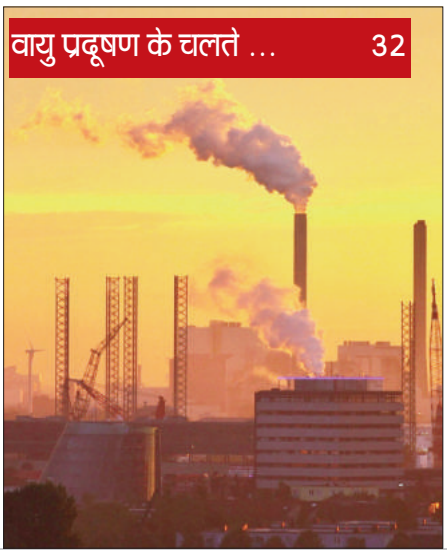

वायु प्रदूषण के चलते ... 32

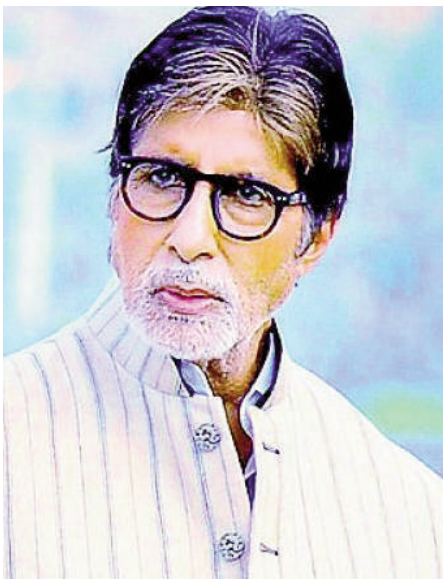

शिक्षा का कोरियाई मॉडल ... 44

प्रदूषण एक गंभीर संकट

अभिजीत कुमार
संपादक
9431006107
cbhindi.news@gmail.com

पर्यावरण में दूषक पदार्थों के प्रवेश के कारण प्राकृतिक संतुलन को पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त कर देने का नाम ही प्रदूषण है। इससे पर्यावरण के साथ-साथ सभी प्रकार के जीवों को भारी हानि पहुँच रही है। हवा,पानी, मिट्टी आदि सभी दूषित हो रहा है। इसका मुख्य कारण है कि प्रकृति द्वारा निर्मित वस्तुओं एवं व्यवस्थाओं को जब मानव निर्मित हानिकारक वस्तुओं के साथ मिला दिया जाता है तो जल,थल अथवा वायुमण्डल सभी क्षेत्रों में विनाशकारी तत्वों का जन्म आरंभ हो जाता है। प्राकृति की संरचनाओं के अनुसार पृथ्वी और आकाश के मध्य एक परत है जोकि सम्पूर्ण पृथ्वी को सुरक्षित रखने में सहायक है जोकि पृथ्वी के बहुत ही नजदीक है। वैज्ञानिक अनुमान के अनुसार पृथ्वी से लगभग 70 किलोमीटर की ऊँचाई पर स्ट्रेटोस्फीयर है जिसमें ओजोन का स्तर होता है। यह स्तर सूर्यप्रकाश की किरणों को शोषित कर पृथ्वी तक सीधे पहुंचने से रोकता है। जोकि समस्त जीवों के लिए अत्यंत आवश्यक है। जिस ओजोन की हम बात कर रहे हैं उस ओजोन का बहुत ही तेजी के साथ विघटन हो रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार दक्षिण ध्रुव के ओजोन क्षेत्र में विघटन 40%-50% हो चुका है। जोकि खतरे की बड़ी घंटी है। क्योंकि, किसी भी वस्तु को 50% तक क्षतिग्रस्त हो जाने के बाद उसकी क्या दशा होगी इसका आंकलन किया जा सकता है। जिसके परिणाम पृथ्वी पर दिखाई देने लगे हैं। ओजोन के क्षतिग्रस्त होने के कारण बर्फे पिघलने लगी हैं तथा मानव को अनेकों प्रकार के रोगों का सामना करना पड़ रहा है। आज हमारा वातावरण बहुत ही तेजी के साथ दूषित हो रहा है। वाहनों तथा फैक्ट्रियों से निकलने वाले गैसों के कारण हवा तेजी के साथ प्रदूषित हो रही है। मानव कृतियों के कारण कचरे को नदियों में डाला जाता है जिससे जल भी प्रदूषण हो रहा है। सामान्यतः वायु प्रदूषण कार्बन मोनोआक्साइड, सल्फर डाईआक्साइड, क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी) तथा उद्योग एवं मोटर वाहनों से निकलने वाले नाइट्रोजन आक्साइड जैसे प्रदूषणों से गंभीर समस्या होती है। प्रदूषण के सूक्ष्म कण मनुष्य की सांसों के साथ फेफड़ों में पहुंचकर बड़ी से बड़ी बीमारियों को जन्म दे देते हैं। हवाओं में अवांछित गैसों की उपस्थिति से मनुष्य, पशुओं तथा पक्षियों को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इससे दमा, खाँसी, अँधापन, श्रव का कमजोर होना, त्वचा रोग जैसी बीमारियाँ तेजी के साथ पैदा हो रही हैं। बड़े शहरों में प्रदूषण के कारण अब आँखों में जलन भी होने लगी है जोकि खतरे का बड़ा अलार्म है। बता दें कि ओजोन परत हमारी पृथ्वी के चारों ओर एक सुरक्षात्मक परत है जोकि हमें सूर्य से आने वाली हानिकारक अल्ट्रावायलेट किरणों से बचाती है। प्रदूषण के कारण ही पृथ्वी का तापमान बढ़ता जा रहा है। क्योंकि, सूर्य से आने वाली गर्मी के कारण पर्यावरण में कार्बनडाई आक्साइड, मीथेन तथा नाइट्रस आक्साइड का प्रभाव कम नहीं हो रहा जोकि बहुत ही हानिकारक है। नदियों में कूड़े-कचरे, मानव-शवों और पारम्परिक प्रथाओं का पालन करते हुए उपयोग में आने वाले प्रत्येक घरेलू सामाग्रियों का जल स्त्रोतों में डाला जाना अत्यंत हानिकारक है। इससे जल की वास्तविकता को बहुत ही क्षति पहुँचती है। गंदे नालों सीवरों के पानी को नदियों मे छोडे जाने के कारण मनुष्य, पशु तथा पक्षियों के स्वास्थ्य को खतरा उत्पन्न हो रहा है। इससे टाईफाइड, पीलिया, हैजा, जैसी बीमारियाँ जन्म लेती हैं। हाल के वर्षों में प्रदूषण की दर बहुत ही तेजी से बढ़ रही है क्योंकि औद्योगिक पदार्थ सीधे मिट्टी, हवा और पानी में मिश्रित हो रहे हैं।

सुप्रीम कोर्ट का सुप्रीम फैसला

सरकार को तीन महीने के भीतर ट्रस्ट बनाकर,मंदिर बनाने का आदेश,मुस्लिम पक्ष को दूसरी जगह मिली जमीन

वरिष्ठ पत्रकार मुकेश कुमार सिंह का बेहद खास विश्लेषण

देश के सबसे बड़े कोढ़ और सबसे पुराने जहरीले मामले पर देश की सर्वोच्च अदालत का फैसला आ गया है ।दशकों से विवादित अयोध्या राम जन्मभूमि विवाद का पटाक्षेप करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने अपने सुप्रीम फैसले में कहा है कि जमीन का फैसला सबूतों के आधार पर होगा ।इस बहुप्रतीक्षित फैसले में आदेशोप्रांत कहा गया है कि विवादित जमीन रामलला को दे गयी है और सरकार को ट्रस्ट बनाकर यहां मंदिर बनाने का आदेश दिया गया है ।इसके साथ हीं 5 एकड़ वैकल्पिक जमीन मुस्लिम पक्ष को देने का आदेश, अलग से दिया है ।कोर्ट ने इस पूरे कार्य के लिए सरकार को 3 महीनों की मोहलत दी है । सबसे पहले चीफ जस्टिस रंजन गोगई ने शिया वक्फ बोर्ड की याचिका खारिज करने की बात बताई ।इसके बाद निमोर्ही अखाड़े का भी दावा खारिज कर दिया गया ।अब सुप्रीम कोर्ट ने अहम और सबसे बड़ा फैसला सुनाया है ।सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा है कि मुस्लिम पक्ष को वैकल्पिक जमीन दी जाए । यानि कोर्ट ने मुस्लिमों को दूसरी जगह जमीन देने का आदेश दिया है ।कोर्ट ने फैसले में कहा है कि मुस्लिम पक्ष जमीन पर दावा साबित करने में नाकाम रहा । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अयोध्या मामले पर सुप्रीम कोर्ट के द्वारा दिए गए फैसला का स्वागत किया है ।पीएम मोदी ने ट्वीट करते हुए लिखा कि यह फैसला न्यायिक प्रक्रियाओं में जन सामान्य के विश्वास को और मजबूत करेगा । हमारे देश की हजारों साल पुरानी भाईचारे की भावना के अनुरूप हम 130 करोड़ भारतीयों को शांति और संयम का परिचय देना है ।भारत के नागरिकों को अब,शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की अंतर्निहित भावना का परिचय देना है

राम मंदिर पर फैसले के बाद बीजेपी नेताओं की जुबान पर चढ़े ताले

अयोध्या राम मंदिर-बाबरी मस्जिद विवाद पर सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला आ गया है ।विवादित भूमि को कोर्ट ने राम मंदिर बनाने के लिए केंद्र सरकार को सौंप दिया है ।केंद्र में बीजेपी की सरकार है ।उस बीजेपी की, जिसका सबसे बड़ा चुनावी मुद्दा राम मंदिर रहा है ।लेकिन हैरतअंगेज बात यह है कि इतना बड़ा फैसला अपने पक्ष में आने के बाबजूद बीजेपी का कोई नेता बयान नहीं दे रहा है ।नेता से लेकर कार्यकर्त्ता,कहीं भी,खुशी और जश्न मनाते नहीं दिख रहे हैं । हमेशा विवादित बयान देनेवाले बीजेपी के नेता,लगता है कि कहीं नजरबंद हो गए हैं और उनकी लंबी जुबान पर ताले लग गए हैं ।देश के लगभग सभी पार्टी दफ्तर से कार्यकर्त्ता गायब हो गए हैं ।दो चार नेता कार्यकर्त्ता जो दफ्तर में हैं,चुपचाप कमरे में बैठकर टीवी डिबेट देख रहे हैं ।इसमे शक की कोई गुंजाईश नहीं कि ऐसा करके बीजेपी ने समझदारी दिखाई है । जश्न मनता तो हुड़दंग भी होता और सामाजिक प्रेम और भाईचारे पर ग्रहण लगता ।आईसे संवेदनशील मसले पर,अक्सर जश्न,जंग में तब्दील हो जाते हैं । ऐसे में इस ऐतिहासिक जीत पर किसी तरह का जश्न नहीं मनाने का बीजेपी का फैसला काबिले तारीफ है ।एक बीजेपी नेता का कहना है कि ऐसे मौकों पर जश्न मनाने पर असामाजिक तत्व जश्न पर कब्जा कर लेते हैं ।जश्न को को वे हुड़दंग में बदल देते हैं और पार्टी के माथे पर कलंक का टीका लगने की आशंका रहती है ।ऐसे में बड़ी सहजता के साथ शांतिपूर्ण ढंग से हम बंद कमरे में सेलिब्रेशन कर रहे हैं ।

आजादी से पहले और आजादी के बाद आमने-सामने रहे हिंदू और मुस्लिम पक्ष

अयोध्या में राममंदिर-बाबरी मस्जिद विवाद को लेकर हिंदू और मुस्लिम पक्ष के बीच मुकदमेबाजी आजादी से पहले ही शुरू हो गयी थी ।हम आजादी से पूर्व की बातों की चर्चा अब जरूरी नहीं समझते हैं,इसलिए आजादी के बाद,इस मामले को सलीके से परोसने की कोशिश कर रहे हैं ।जब हिंदुस्तान आजाद हुआ,तो यह लड़ाई रुकी नहीं बल्कि 1950 से ही इस लड़ाई का श्री गणेश हो गया ।1950 में इस मामले में पहला मुकदमा दर्ज करवाया गया था ।बाद के वर्षों में इस मामले में राजनीतिक रंग चढ़ता गया और यह विवाद काफी बढ़ा और मुकदमेबाजी का दौर शुरू हो गया ।सामाजिक, राजनीतिक और कानूनी नजरिए से इस मसले का हल तलाशने की बहुतों कोशिशें हुई लेकिन इस मामले को जितना सुलझाने की कोशिश हुई,यह उतना ही उलझता चला गया ।गौरतलब है कि 1990 के राममंदिर आंदोलन और 1992 के बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद ये मामला और भी पेंचीदा हो गया ।इस मामले में कई मुकदमे दर्ज किए गए ।30 सितंबर 2010 का ईलाहाबाद हाईकोर्ट का फैसला एक अहम पड़ाव जरूर रहा,जब हाईकोर्ट ने विवादित परिसर के मालिकाना हक पर फैसला सुनाते हुए उसे तीन हिस्सों में बांट दिया था ।इधर एक तरफ बाबरी मस्जिद विध्वंस की सुनवाई हाईकोर्ट में चलती रही, दूसरी तरफ विवादित परिसर पर मालिकाना हक को लेकर लड़ाई सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच गयी ।ईलाहाबाद हाईकोर्ट का फैसला आने के 9 साल बाद सुप्रीम कोर्ट इस मामले की रोज सुनवाई पर राजी हुआ ।ईलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले के बाद ये पूरा मामला सुप्रीम कोर्ट में इस तरह से लगातार चलता रहा ।दिसंबर 2010 में ईलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफ अखिल भारत हिंदू महासभा ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका डाली ।हिंदू महासभा ने विवादित परिसर के एक तिहाई भाग मुस्लिमों को देने के खिलाफ याचिका दाखिल की थी ।

मई 2011 में हिंदू महासभा की याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने मई 2011 में ईलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले पर रोक लगा दी ।ईलाहाबाद हाईकोर्ट ने विवादित परिसर के 2.77 एकड़ जमीन को तीन हिस्सों में बांट दिया था ।सुप्रीम कोर्ट ने बंटवारे वाले इस फैसले पर रोक लगा दी ।

सुप्रीम कोर्ट में 9 साल चला मामला

5 दिसंबर 2017 में सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल करने के 7 साल बाद इस मामले की सुनवाई शुरू हुई ।सुप्रीम कोर्ट के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश दीपक मिश्रा की अध्यक्षता में तीन जजों की बेंच ने इस मामले की सुनवाई शुरू की थी ।इसके बाद मामले की सुनवाई फरवरी 2018 तक के लिए स्थगित कर दी गई । स्थगन के बाद,इस मामले को बड़ी बेंच को भेजने की सलाह दी गई ।8 फरवरी 2018 में मामले की सुनवाई फिर से शुरू हुई । सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में कुछ अन्य दस्तावेज की मांग की ।याचिका दायरकताओं के द्वारा सुप्रीम कोर्ट में इस मामले की रोज सुनवाई की मांग की गई ।लेकिन कोर्ट ने तत्काल,इस मांग को ठुकरा दिया ।बताते चलें कि इस मामले को मार्च 2018 तक के लिए स्थगित कर दिया गया था ।

14 मार्च 2018 को सुप्रीम कोर्ट में इस मामले में हस्तक्षेप करने वाली 30 अर्जियां दाखिल की गई ।सुप्रीम कोर्ट ने इन सभी अर्जियों को खारिज कर दिया ।कोर्ट ने अपने रजिस्ट्रार से शख्त हिदायत देते हुए कहा कि किसी भी थर्ड पार्टी को अर्जी देने से रोका जाए ।कोर्ट ने यह साफ लहजे में कह दिया कि इस मामले के सिर्फ ऑरिजनल पार्टी को ही सुना जाएगा ।23 मार्च 2018 को सुप्रीम कोर्ट में इस मामले के मुस्लिम पक्षकार ने दलील दी कि अयोध्या विवाद में इस्माईल फारूखी के फैसले पर फिर से विचार किया जाए ।1994 के इस्माईल फारूखी मामले के फैसले में मस्जिद को इस्लाम में नमाज पढ़ने के लिए जरूरी जगह मानने से इनकार कर दिया था ।

27 अप्रैल 2018 को हिंदू पक्ष की तरफ से बहस करते हुए सीनियर वकील हरीश साल्वे ने कहा कि ये पूरा मामला जमीन पर मालिकाना हक को लेकर है और इसे इसी तरह से लिया जाना चाहिए ।जाहिर तौर पर,इस मामले की राजनीतिक और धार्मिक संवेदनशीलता को देखते हुए इसे बड़ी बेंच को भेजने की सलाह दी गई ।यही वजह है कि सुप्रीम कोर्ट में इस मामले की 40 दिनों तक मैराथन रोजाना सुनवाई चली ।15 मई 2018 को सुप्रीम कोर्ट में मुस्लिम पक्ष की तरफ से बहस करते हुए सीनियर वकील राजीव धवन ने कहा कि किसी भी तरह से ये संदेश नहीं जाना चाहिए कि हिंदू धर्म की पूजा पद्धति मुस्लिम धर्म की पूजा पद्धति से ज्यादा महत्वपूर्ण या ज्यादा अहमियत रखती है । बेहद अहम है कि संविधान का आर्टिकल 25 और आर्टिकल 26 सभी धर्म के लोगों को समान धार्मिक अधिकार देता है ।

13 जुलाई 2018 को सुप्रीम कोर्ट में शिया वक्फ बोर्ड की तरफ से कहा गया कि वो अपनी मर्जी से अपने हिस्से की जमीन हिंदू पक्ष को देने को तैयार है ।वक्फ बोर्ड का कहना था कि शांति और सौहार्द बनाने के लिए उसे अपनी हिस्से की जमीन देने में कोई हर्ज नहीं है ।बाबरी मस्जिद विध्वंस का जिक्र करते हुए राजीव धवन ने कार सेवकों के लिए हिंदू तालिबान शब्द का इस्तेमाल किया था ।उन्होंने बाबरी मस्जिद विध्वंस की तुलना अफगानिस्तान में तालिबान द्वारा बामियान प्रतिमाओं के तोड़े जाने से की थी ।यह जानना बेहद जरूरी है कि 20 जुलाई को हुई सुनवाई में ज्यादा गहमागहमी रही ।कोर्ट ने हिंदू तालिबान शब्द का इस्तेमाल किए जाने पर आपत्ति जाहिर की थी ।इसके बाद तीन जजों की बेंच ने इस बात पर मशविरा किया कि क्या इस्माईल फारूखी मामले पर फिर से विचार करने की जरूरत है ?27 सितंबर 2018 को सुप्रीम कोर्ट ने इस्माईल फारूखी केस के फैसले पर दोबारा विचार करने से इनकार कर दिया ।स्पष्ट है कि कोर्ट ने इसकी जरूरत नहीं समझी ।

अयोध्या में विवादित जमीन को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने ऐतिहासिक फैसला सुनाया है ।

29 अक्टूबर 2018 को चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा के रिटायर होने के बाद इस मामले की सुनवाई नए बने चीफ जस्टिस रंजन गोगोई की अध्यक्षता में तीन जजों की बेंच ने शुरू की ।जस्टिस संजय किशन कौल और जस्टिस के.एम. जोसेफ,बांकि के दो जज थे ।मामले पर बनी नई बेंच ने केस की सुनवाई जनवरी 2019 तक के लिए स्थगित कर दी थी ।

4 जनवरी 2019 को सुप्रीम कोर्ट के तीन जजों की बेंच ने इसकी सुनवाई शुरू की ।बेंच ने कहा कि मामले की सुनवाई उचित बेंच करेगी और कोर्ट अब नए सिरे से सुनवाई की तारीख भी तय करेगी ।9 जनवरी 2019 को मामले की सुनवाई के लिए पांच जजों के बेंच का गठन हुआ ।इस बेंच के अध्यक्ष चीफ जस्टिस रंजन गोगोई बनाए गए ।इसके साथ ही बेंच में एस.ए. बोबडे,एन.वी. रामना,यू.यू. ललित और डी.वाई. चंद्रचूड़ को शामिल किया गया ।

10 जनवरी 2019 को जस्टिस यू.यू. ललित ने इस मामले से खुद को अलग कर लिया ।उनका तर्क था कि चूंकि उन्होंने बाबरी मस्जिद विध्वंस मामले में आरोपी रहे कल्याण सिंह के लिए बहस की थी,इसलिए उनका सुनवाई में शामिल होना ठीक नहीं हैं ।

25 जनवरी 2019 को जस्टिस यू.यू. ललित के बेंच से अलग होने के बाद एक नए बेंच का गठन,फिर से हुआ ।चीफ जस्टिस रंजन गोगोई की अध्यक्षता में इस बेंच में जस्टिस एस.ए. बोबडे, डी.वाई. चंद्रचूड़,अशोक भूषण और एस अब्दुल नजीर को शामिल किया गया ।29 जनवरी 2019 को केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में एक आवेदन देकर विवादित परिसर के पास वाली जमीन को उसके ऑरिजनल मालिक को देने की ईजाजत मांगी ।26 फरवरी 2019 को सुप्रीम कोर्ट ने सभी पक्षों से विवाद के हल के लिए मध्यस्थता की संभावना टटोलने को कहा ।

8 मार्च 2019 को सुप्रीम कोर्ट की संवैधानिक पीठ ने अयोध्या मामले को मध्यस्थता के लिए भेजा ।इसके लिए एक मध्यस्थता पैनल का गठन किया गया ।पैनल में सुप्रीम कोर्ट के जज एफ.एम.आई. खलिफुल्ला, आध्यात्मिक गुरू श्री श्री रविशंकर और सीनियर वकील श्रीराम पंचू को शामिल किया गया ।कोर्ट ने कहा कि मध्यस्थता को गोपनीय रखा जाए और किसी भी तरह से इसकी रिपोर्ट की जानकारी मीडिया तक नहीं पहुंचे और ना ही सार्वजनिक होने दिया जाए ।10 मई 2019 को सुप्रीम कोर्ट ने मध्यस्थता की प्रक्रिया के लिए समय सीमा 15 अगस्त तक के लिए बढ़ा दी ।मध्यस्थता पैनल ने कोर्ट में एक रिपोर्ट सौंपी थी, जिसमें समय सीमा बढ़ाने की गुजारिश की गई थी ।11 जुलाई 2019 को सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अगर इस मामले का निपटारा मध्यस्थता के जरिए नहीं होता है तो कोर्ट इस मामले की सुनवाई रोज करेगा और उसके आधार पर फैसला सुनाएगा ।इसी मद्देनजर, मध्यस्थता पैनल से उसकी रिपोर्ट सौंपने को कहा गया ।2 अगस्त 2019 को सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मध्यस्थता पैनल इस मामले को निपटाने में नाकाम रहा है ।इस मामले में मध्यस्थता के जरिए सेटलमेंट नहीं किया जा सका । सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मामले की सुनवाई 6 अगस्त से दोबारा शुरू होगी और इस मामले की रोज सुनवाई होगी ।इसके बाद 6 अगस्त 2019 से सुप्रीम कोर्ट में अयोध्या राममंदिर-बाबरी मस्जिद विवाद की रोजाना सुनवाई शुरू हुई ।लेकिन 9 अगस्त 2019 को सीनियर वकील राजीव धवन ने इस मामले की सुनवाई के दिनों पर आपत्ति जाहिर की ।उनका कहना था कि वकील को मामले की तैयारी करने में दिक्कत हो रही है ।सुप्रीम कोर्ट ने उनकी अपील खारिज कर दी ।कोर्ट ने कहा कि मामले की सुनवाई हर हफ्ते पांच दिन होगी ।

30 अगस्त 2019 को राजीव धवन ने सुप्रीम कोर्ट में एक अर्जी दाखिल की ।उन्होंने कहा कि मुस्लिमों का पक्ष रखने की वजह से उन्हें धमकियां मिल रही हैं । उन्होंने चेन्नई के एक प्रोफेसर के ऊपर धमकी देने का आरोप भी लगाया ।लेकिन अब सुप्रीम कोर्ट ने अयोध्या पर अपना फैसला सुना दिया है ।पांच जजों की पीठ ने यह फैसला सुनाया ।

12 सितंबर 2019 को सीनियर वकील राजीव धवन ने कहा कि उन्हें लगातार धमकियां मिल रही हैं ।उन्होंने कोर्ट को बताया कि उनके क्लर्क को भी धमकाया गया है ।इस मसले को गम्भीरता से लेते हुए,सीजेआई रंजन गोगोई ने धवन को सुरक्षा दिलवाने को कहा ।लेकिन धवन ने सुरक्षा लेने से इनकार कर दिया ।18 सितंबर 2019 को सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि इस मामले के पक्षकार अगर मध्यस्थता से मामले का हल निकालना चाहें,तो इस पर कोर्ट को आपत्ति नहीं होगी ।कोर्ट ने इस मामले की सुनवाई और फैसले की अवधि तय करने की अपील भी की ।सभी पार्टियों ने मिलकर बहस और उसके नतीजों के लिए समय अवधि तय की और 18 अक्टूबर तक सुनवाई पूरी कर लेने की डेडलाइन रखी गयी ।

16 अक्टूबर 2019 को सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि 40 दिनों के मैराथन बहस के बाद सुनवाई पूरी कर ली गई है ।इस मामले में फैसला सुरक्षित रख लिया गया है ।9 नवंबर 2019 को सुप्रीम कोर्ट ने राममंदिर-बाबरी मस्जिद विवाद में अपना सुओरिम फैसला सुना दिया ।कोर्ट ने ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए राममंदिर निर्माण का रास्ता साफ कर दिया ।सुप्रीम कोर्ट ने विवादित जमीन पर रामलला विराजमान करने का आदेश दे दिया ।कोर्ट ने कहा कि सरकार एक ट्रस्ट बनाकर मंदिर का निर्माण करवाए ।विवादित परिसर पर सरकार का कब्जा होगा ।वहीं सुन्नी वक्फ बोर्ड को मस्जिद के लिए अयोध्या में किसी दूसरी जगह 5 एकड़ जमीन दिए जाने का आदेश दिया ।सुप्रीम कोर्ट ने निमोर्ही अखाड़े के दावे को सिरे से खारिज कर दिया है ।यह सुप्रीम कोर्ट का सुप्रीम फैसला है जिसे देश के सभी धर्म के लोगों को हृदय से स्वीकार कर के प्रेम,भाईचारे,सहयोग और मिल्लत की नई ईबारत लिखनी चाहिए ।श्री राम सनातनी धरोहर हैं ।ये सभी धमार्लंबियों के कर्तव्य और कर्मों के प्रेरणा स्रोत्र हैं ।राजनीतिक मुनाफे के लिए दशकों से,इस मसले को उलझाकर रखा गया ।हम हिन्द के वासी हैं ।इस महान फैसले का हम हृदयतल से स्वागत करते हैं ।सभी धर्मों के श्रेष्ठ और ओजस्वी अलौकिक ताकत,हमसभी के आदर्श और प्रेरणा स्रोत्र हैं ।मंदिर,मस्जिद,गिरजा,तख्त और तमाम धार्मिक स्थल,हमारे जीवन के लिए अकूत सम्बल स्थल और पावन मार्ग के प्रेरक और प्रहरी हैं ।

तेजस्वी यादव अब फ्रंटफुट पर खेल रहे

नीतीश सरकार पर हमला करते हुए कहा वंचितों की हकमारी कर रही है सरकार

वरिष्ठ पत्रकार मुकेश कुमार सिंह

पटना (बिहार) लोकसभा चुनाव में मिली करारी शिकस्त के बाद बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष सह राजद के युवराज तेजस्वी यादव,राजनीतिक मैदान में पूरी तरह से गुमशुदा दिख रहे थे ।इसको लेकर सत्ताधारी दल के जदयू,बीजेपी और लोजपा के नेता लगातार उनपर हमलावर थे ।खासकर के मुजफ्फरपुर में इंसेफ्लाइटिस से सैकड़ों बच्चों की मौत पर तेजस्वी की चुप्पी को।लेकर सभी ने उन्हें जमकर लताड़ा ।उसके बाद पटना में जल जमाव से एक पखवाड़े से ज्यादा बाढ़ की विकट स्थिति बनी हुई थी ।तेजस्वी यादव इस विपदा में भी पीड़ितों के साथ खड़े नहीं मिले ।लेकिन बिहार में विधानसभा की पांच सीटों पर हुए उपचुनाव में राजद ने तीन सीटों पर जीत दर्ज कर,अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज की ।अब तेजस्वी यादव खुलकर राजनीतिक मैदान में हैं और फ्रंटफुट पर खेल रहे हैं ।विभिन्य विरोधी पार्टियों पर अब तेजस्वी हमलावर हैं और तल्ख सवालों और हमलेसे उन्हें घेरने में लगे हुए हैं ।

अभी बिहार में कुल 1311 पदों पर फार्मासिस्ट की बहाली को लेकर फ्छरढ सुप्रीमों उपेंद्र कुशवाहा ने सवाल क्या उठाया,तेजस्वी यादव ने भी इसी मुद्दे को लेकर नीतीश सरकार पर, जबरदस्त हमला बोल दिया है ।प्रतिपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने फार्मासिस्टों की बहाली को लेकर नीतीश सरकार पर बड़ा हमला बोला है ।तेजस्वी यादव ने ट्वीटर पर लिखा है कि मैं दिनदहाड़े इसे नीतीश कुमार की गुंडागर्दी और वंचितो की हकमारी कहूँगा ।

जनादेश चोर डरपोक उट ने फ्रर/इखढ से गरीबों के आरक्षण और संविधान को खत्म करने की सुपारी ले ली है ।फार्मासिस्ट के लिये संविदा पर निकाली गयी 1311 सीटों में,बैकवर्ड क्लास के लिये एक भी वेकेंसी नहीं है ।बेहद खास बात है कि बीते 3 अक्टूबर को रालोसपा प्रमुख उपेंद्र कुशवाहा ने फार्मासिस्ट की वैकेंसी को लेकर नीतीश सरकार की मंशा पर गम्भीर सवाल उठाया था ।उन्होंने सरकार पर आरोप लगाया था कि इस बहाली में बीसी कैटगरी के लिए कोई सीट आरक्षित नहीं है ।उन्होंने कहा की आखिर इस तरह से कैसे हो सकता है,जबकि दूसरे कोटे का पूरा स्थान है ।उपेंद्र कुशवाहा ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को इस पूरे मामले देखना चाहिए ।उन्होंने,नीतीश कुमार से इस शिकायत को दूर करने की अपील भी की है ।गौरतलब है कि बिहार में स्वास्थ विभाग के नियंत्रणाधीन अस्पतालों के लिए फार्मासिस्ट के लिए कुल 1311 स्थायी पदों के लिए वैकेंसी निकाली गई है लेकिन फॉर्म में बीसी कैटगरी के लिए कोई सीट आरक्षित नहीं है ।बैकवर्ड क्लास वाला कॉलम पूरी तरह से खाली है ।जबकि बाकी क्लास के लिए सीट आरक्षित की गई हैं ।

तेजस्वी यादव ने इस मुद्दे पर ट्वीट करने के बाद,चुप्पी नहीं साध रखी है ।वे लगातार मीडिया के माध्यम और विभिन्य मंचों से सरकार से सवाल कर रहे हैं ।तेजस्वी यादव को बैठे-बिठाए एक बढ़िया मुद्दा मिल गया है जिसे लेकर वे काफी उग्र तेवर में हैं ।यही नहीं तेजस्वी यादव बिहार में बढ़ते अपराध के लिए सीधे तौर पर नीतीश कुमार को जिम्मवार ठहरा रहे हैं ।तेजस्वी यादव का कहना है कि वर्तमान सरकार अपराधी और माफिया चला रहे हैं ।आमलोगों की जान और उनकी संपत्ति की कोई अहमियत नहीं है ।नौकरशाही हावी है ।सरकार के हर विभाग में घूसखोरी चरम पर है ।बिना चढ़ावे का कोई भी काम नहीं होता है ।राज्य में अराजक स्थिति है ।ऐसे में बिहार सरकार को नैतिक आधार पर जनता से मांफी मांगते हुए,राष्ट्रपति शासन की अनुशंसा करनी चाहिए ।राज्य में पुलिस और कानून नाम की कोई चीज नहीं है ।अभी बिहार में गुंडाराज है ।तेजस्वी यादव के तेवर से यह साफ जाहिर हो रहा है कि अब वे डिफेंसिव होने के मूड में नहीं हैं ।राजनीतिक समीक्षकों और जानकारों की मानें,तो नीतीश कुमार पर हमलावर होकर,तेजस्वी यादव ने आगामी 2020 में होने वाले विधानसभा चुनाव की तैयारी शुरू कर दी है ।

बहुत कठिन है डगर पनघट की ?

नीतीश कुमार के लिए 2020 का विधानसभा चुनाव चुनौतियों से है भरा

वरिष्ठ पत्रकार मुकेश कुमार सिंह का विश्लेषण

देश के मौजूदा राजनीतिक परिदृश्य में,हरियाणा और महाराष्ट्र विधान सभा के चुनाव के नतीजे ठऊअ के लिए,कहीं से भी बहुत उत्साहित करनेवाले नहीं हैं ।हरियाणा में स्पष्ट बहुमत नहीं मिला और महाराष्ट्र में भी बीजेपी को सीटों का नुकसान हुआ है ।बीजेपी के लिए इसी माह से शुरू हो रहे झारखण्ड विधानसभा में भी जेडीयू एक बड़ी चुनौती बनी हुई है क्योंकि वहाँ जेडीयू अलग से चुनाव मैदान में उतर चुकी है ।जेडीयू ने झारखण्ड की कुल 81 विधानसभा सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारने की घोषणा भी कर दी है ।राजनीति का यह बेहद तिलस्मी और काला चेहरा है ।एक राज्य बिहार में जेडीयू और भाजपा एकसाथ हैं जहाँ से जेडीयू के सुप्रीमों नीतीश कुमार मुख्यमंत्री हैं ।वही जेडीयू झारखण्ड में बीजेपी को चुनौती दे रही है ।

नीतीश की क्या है 2020 के चुनाव की चुनौतियां

सबसे बड़ा सवाल है कि बिहार ठऊअ की कमान संभाल रहे नीतीश कुमार के लिए आगामी बिहार विधानसभा चुनाव में कौन कौन-कौन सी और कैसी चुनौतियाँ होगीं ? सुशासन के लिए जाने जानेवाले नीतीश कुमार के सामने पहली और सबसे बड़ी चुनौती 2020 के चुनाव को जीतना है ।पांच साल पहले नीतीश कुमार ने ठऊअ से नाता तोड़कर,लालू प्रसाद यादव की पार्टी राजद के साथ चुनाव लड़ा था ।उस चुनाव में नीतीश कुमार को बड़ा जनादेश भी मिला था ।उस चुनाव की सबसे बड़ी खासियत यह थी कि लगभग जमीनदोज हो चुका राजद ना केवल संजीवनी पाकर पुनः जीवित हो उठा बल्कि बिहार की सबसे बड़ी पार्टी भी बन के भी उभरा ।लेकिन महागठबंधन से अलग होने के बाद एकबार फिर नीतीश कुमार बीजेपी के साथ हैं ।यहाँ यह उल्लेख करना बेहद जरूरी है कि आगामी 2020 के चुनाव की परिस्थितियाँ,पहले से बिल्कुल अलग हैं ।जेडीयू,बीजेपी के साथ है जरुर लेकिन दोनों के बीच पहले जैसा रिश्ता नहीं है ।रिश्ते में ना तो गर्माहट है और ना ही कोई बेशकीमती ताजगी ।दोनों पार्टियाँ के बीच,एक दुसरे को नीचा दिखाने की पुरजोर कोशिशें चल रही हैं ।इस विपरीत माहौल में पहले से बेहतर और बीजेपी से अच्छा प्रदर्शन की चुनौती नीतीश कुमार के सामने है ।2020 के चुनाव नीतीश कुमार के नेतृत्व में लड़ने के अमित शाह के ऐलान के बाबजूद जिस तरह से सिवान के दरौंधा विधान सभा सीट से जेडीयू उम्मीदवार को हारने के लिए बीजेपी के नेताओं-कार्यकताओं ने ऐड़ी-चोटी का जोर लगा

दिया,वह नीतीश कुमार की आंखें खोलने के लिए काफी हैं ।यहीं नहीं सहरसा के सिमरी बख्तियारपुर सीट पर पूर्व जदयू विधायक डॉक्टर अरुण कुमार की हार भी,नीतीश कुमार के लिए एक बड़ी सबक है ।जाहिर है नीतीश कुमार के लिए यह एक बड़ी चुनौती है ।अबतक नीतीश कुमार बीजेपी के साथ बड़े भाई की भूमिका में रहे हैं ।उनकी पार्टी बीजेपी से तीन दर्जन से ज्यादा सीटों पर चुनाव लडती रही है । बीजेपी,पहले से ही,लोकसभा चुनाव की तर्ज पर बराबर-बराबर सीटों पर चुनाव लड़ने का दबाव बना रही है ।ऐसे में इसबार बीजेपी से ज्यादा सीटें लेकर बड़े भाई की भूमिका में बने रहने की नीतीश कुमार के सामने बड़ी चुनौती है ।एनडीए में बीजेपी के साथ होने के बाद भी नीतीश कुमार और उनकी पार्टी कई मुद्दों पर बीजेपी से अलग राय रखती है ।चाहे बात,आरक्षण,जम्मू-कश्मीर की धारा 370 और 35 ए,तीन तलाक की हो या फिर राम मंदिर और एनआरसी की ।ये सभी वो मुद्दे हैं जो बिहार के चुनाव में भी विपक्ष के लिए मुद्दा बन सकते हैं ।नीतीश कुमार के ऊपर बड़ी जिम्मेदारी है कि इन मुद्दों पर भी उनके प्रवक्ता नपा-तुला बयान दें, जिससे बीजेपी और उनकी पार्टी के बीच आयी खटास में कमी आये ।बिहार की पांच सीटों के लिए हुए उपचुनाव में जेडीयू और बीजेपी दोनों को हार का सामना करना पड़ा था ।ऐसे में इस चुनाव परिणाम के बाद एनडीए के लिए चुनौती बढ़ती दिख रही है । खासकर कोसी और सीमांचल के इलाके में जहां ओवैसी की पार्टी के एक प्रत्याशी ने जीत हासिल कर एक साथ कई सवाल खड़े कर दिए हैं ।उपचुनाव के नतीजों के बाद महागठबंधन की तरफ से चुनौती बढ़ गई है ।ऐसे में ये देखना दिलचस्प होगा कि वो इस चुनौती से कैसे उबर पाएंगे। नीतीश कुमार को उनकी पार्टी जेडीयू भले ही नेशनल लेवल का नेता मानती हो लेकिन उनकी पार्टी,अभी भी बिहार को छोड़कर अन्य राज्यों में अपनी पहचान बनाने के लिए लगातार संघर्ष कर रही है । जेडीयू को राष्ट्रीय पार्टी बनाने की बड़ी जिम्मेदारी नीतीश कुमार के पास है ।जाहिर सी बात है कि दिल्ली और झारखंड में होने वाले चुनाव पर भी लोगों की नजरें टिकी होंगी । पार्टी बिहार के बाहर कई राज्यों में चुनाव लड़ चुकी है लेकिन उसे उस तरह के नतीजे नहीं मिल सके हैं जिसकी आस और जरूरत थी ।उनकी पार्टी झारखण्ड विधानसभा का चुनाव लड़ रही है ।राजनीतिक जानकारों का मानना है कि इस चुनाव में दमखम दिखाकर ही नीतीश कुमार बिहार विधानसभा चुनाव में बीजेपी पर ज्यादा दबाव बना पायेगें ।इधर मुकेश सहनी भी अपनी भीआईपी पार्टी के साथ एनडीए में शामिल होने के लिए बेताब हैं ।सिमरी बख्तियारपुर विधानसभा उप चुनाव में उनकी पार्टी के उम्मीदवार दिनेश निषाद को लगभग 26 हजार मत मिले थे ।मुकेश सहनी इस सीट पर मिले मत को अपना जनाधार होने का दावा कर रहे हैं ।अगर इनकी पार्टी एनडीए का हिस्सा बनती है, तो इसका फायदा एनडीए को निसन्देह होगा लेकिन नीतीश कुमार के लिए सीट के बंटवारे में फिर से एक नई मुसीबत गले आ लगेगी ।नीतीश कुमार को लोजपा का भी ख्याल रखना है ।कुल मिलाकर आगामी विधानसभा चुनाव नीतीश कुमार की राजनीति की अग्नि परीक्षा साबित होने वाली है ।यानि बहुत कठिन है डगर पनघट की ।

मांझी ने किया महागठबंधन से अलग होने का ऐलान

हम पार्टी सुप्रीमों जीतन राम मांझी ने बिहार महागठबंधन से अलग होकर अकेले चुनाव मैदान में उतरने का एलान कर दिया है ।अपने सरकारी आवास पर जिला अध्यक्ष,केंद्रीय एवं राज्य कार्यकारिणी की बैठक के बाद जीतन राम मांझी ने यह ऐलान किया है ।हम के राष्ट्रीय अध्यक्ष जीतन राम मांझी ने बिहार विधानसभा 2020 का चुनाव ओबेसी और पप्पू यादव की पार्टी के साथ तालमेल कर के लड़ने का फैसला किया है ।अगर इन नेताओं से इनका तालमेल नहीं बन सका,तो वे अकेले चुनाव लड़ेंगे ।उन्होंने कहा कि महागठबंधन में कोआर्डिनेशन कमेटी के नहीं होने एवं सर्वसम्मति से निर्णय नहीं लिए जाने के कारण वे महागठबंधन के भीतर काफी असहज महशुस कर रहे थे ।मांझी ने कहा कि आज की बैठक के दौरान,विचारोपरांत निर्णय लिया गया कि झारखंड विधानसभा चुनाव में हम पार्टी अपना उम्मीदवार अलग से खड़ा करेगी ।सर्वसम्मति से झारखंड का चुनाव स्वतंत्र रूप से लड़ने का निर्णय लिया गया है ।झारखंड में होने वाले चुनाव के लिए पार्टी ने आगे निर्णय लेने के लिए राष्ट्रीय प्रधान महासचिव डॉ संतोष कुमार सुमन को अधिकृत किया है ।पार्टी के प्रदेश मीडिया प्रभारी सह प्रवक्ता अमरेंद्र कुमार त्रिपाठी ने बैठक की जानकारी देते हुए बताया कि बिहार में,सदस्यता अभियान चलाकर 30 दिसंबर 2019 तक हर हाल में बूथ स्तर की कमेटी बना लेने का निर्देश पार्टी के बिहार प्रदेश अध्यक्ष बीएल वैश्यन्त्री के द्वारा जिला अध्यक्षों को दिया गया है । ऐसा ना करने पर 30 दिसंबर के बाद वे जिला अध्यक्ष,अपने पद पर नहीं रह पाएंगे ।चर्चित बिहार से खास बातचीत में मांझी ने बिहार में ओबीसी की पार्टी टक्टक्ट और पप्पू यादव की पार्टी खअअढ के साथ मिलकर तीसरा मोर्चा बनाने के भी खुले संकेत भी दिए और कहा कि दलित और अल्पसंख्यक समाज में सबसे ज्यादा उपेक्षित हैं इसलिए उन्हें गोलबंद करना बहुत जरुरी है । दलित और अल्पसंख्यक जिस दिन गोलबंद हो जायेगें,उन्हें उनका हक मिल जाएगा ।मांझी का तीन पार्टियों वाला गठबंधन आगे बन पाएगा कि नहीं,इसपर संसय बरकरार है लेकिन महागठबंधन से मांझी के बाहर होने का,बिहार में सीधा फायदा एनडीए को मिलना तय है ।

सवर्णों को हासिये पर रखना नीतीश के गले की बनी हड्डी

उपचुनाव के नतीजे,नीतीश के लिए बड़ी सबक

वरिष्ठ पत्रकार मुकेश कुमार सिंह

बीते 24 अक्टूबर को बिहार उपचुनाव के परिणाम आये,जिसके कई राजनीतिक मायने निकाले जा रहे हैं ।हांलांकि उपचुनाव के परिणाम को एक झटके में विधानसभा के चुनाव से जोड़ कर देखना बेहद जल्दबाजी होगी ।लेकिन इस चुनाव परिणाम ने जदयू खेमे में एकतरह जहाँ मायूसी लायी है वहीँ जदयू सुप्रीमों सह सूबे के मुखिया नीतीश कुमार को बहस और विमर्श के लिए मजबूर किया है ।विधानसभा के इस उपचुनाव में पाँच सीट में जदयू चार सीट पर चुनाव लड़ रही थी ।जदयू को तीन सीटों पर उसे मुंहकी खानी पड़ी है,जबकि एक सीट पर उसे जीत मिली है ।2020 में बिहार विधानसभा के चुनाव होने हैं ।ऐसे में यह परिणाम बड़े उलट-फेर वाले साबित ना हों लेकिन इस परिणाम के जरिये राजद का मनोबल जरूर बढ़ा है ।लोकसभा चुनाव परिणाम के बाद,जनता से नजरें चुराने वाले राजद के युवराज तेजस्वी यादव,अब फ्रंट फुट पर आकर बयानबाजी करते दिख रहे हैं ।इस चुनाव परिणाम से महागठबंधन के बीच की खटास और दूरी कितनी कम होगी,इसपर अभी कोई कयास लगाना बेमानी है ।लेकिन सोसल इंजीनियरिंग के महारथी नीतीश कुमार के लिए चुनाव में सवर्णों की उपेक्षा,एक बड़ी सीख के रूप में उभरी है ।दरौंदा और सिमरी बख्तियारपुर के चुनाव परिणाम, नीतीश कुमार की राजनीतिक लोकप्रियता की कमी का जिंदा इश्तेहार है ।सिमरी बख्तियारपुर में सवर्णों ने खासकर राजपूत और ब्राह्मण समाज के लोगों ने जदयू प्रत्याशी डॉक्टर अरुण कुमार को सिरे से खारिज कर दिया ।यहाँ,सवर्णों के 80 से 90 प्रतिशत मत राजद के जफर आलम को मिले,जो उनकी जीत के लिए मजबूत आधार साबित हुए ।नीतीश कुमार को अभी से विधानसभा की तैयारी शुरू करने की जरूरत है जिसमें सवर्णों को रिझाना,उनके लिए बड़ी चुनौती साबित होगी ।यही नहीं,अब समय बदल रहा है और बदलते हुए समय में राजनीति भी करवट बदल रही है ।राजनीति के इस बदलते दौर में,चंद जातियों को समेटकर,अब बड़ी जीत की संभावनाओं पर पुनःविचार करने का समय आ चुका है ।जातीय समीकरण और ध्रुवीकरण जीत के आधार रहे हैं लेकिन अब सबजन और सर्वसमाज को साथ लेकर चलने की जरूरत है ।बीजेपी मौके की नजाकत को समझकर राजनीति करती है लेकिन

नीतीश कुमार अपनी जिद की राजनीति करते हैं ।नीतीश कुमार को सबसे पहले सवर्णों को अपने विश्वास में लेने की महती जरूरत है ।बिहार में नीतीश कुमार की बड़े भाई की भूमिका है लेकिन दम्भ और अहंकार की वजह से कहीं नीतीश कुमार छोटे भाई ना बन जाएं ।वैसे भी बीजेपी नीतीश कुमार पर अपना दबाब बनाने और दबाब बढ़ाने के लिए कोई भी खेल,खेल सकती है ।दरौंदा उपचुनाव में निर्दलीय व्यास सिंह की जीत को बीजेपी अपनी जीत मान रही है ।नीतीश कुमार को एनडीए के साथ आगामी विधानसभा चुनाव लड़ने के लिए अपने सोशल इंजीनियरिंग को फिर से दुरुस्त करना होगा ।जाहिर तौर पर,नीतीश कुमार को निचली और पिछली जातियों पर,नए सिरे से मजबूत पकड़ बनाने के साथ-साथ सवर्णों को अपने पाले में लाने की बेहद बड़ी चुनौती है ।राजनीति के जानकारों का कहना है कि लगभग जमीनदोज हो चुके राजद को 2015 के विधानसभा चुनाव में,जीवनदान देकर नीतीश कुमार ने जो,बड़ी राजनीतिक भूल की, उसे सुधारने के लिए सबका साथ, सबका विकास को जमीनी स्तर से समझना होगा ।अब व्यक्तिगत और पार्टी फायदे के लिए छोटे से बड़े फैसले लेने में चिंतन और बदलाव की जरूरत है ।90 के दशक में लालू प्रसाद यादव ने भूरा बाल साफ करो का नारा देकर,सवर्णों का बेहद अपमान किया और निचली-पिछड़ी जातियों की आवाज बनने का हिमायती बनकर सत्ता को हासिल किया ।उस दौर में,निचले तबके के लोगों को सामाजिक रूप से उकसाकर,राजनीति की गई ।निचले तबके के लोग शिक्षा से महरूम रहे लेकिन उनकी आवाज में कड़ुआहट जरूर आयी ।यह समाजवाद का दौर नहीं था ।यह दौर,जातिवादी धरा को सम्बल देने वाला काला काल था ।निचली जातियों में,जमकर विष भरे गए थे ।इस कालखंड में अपराधियों का खूब महिमामंडन होता था ।लेकिन समय के साथ सत्ता बदली और नीतीश कुमार का सुशासन राज आया ।नीतीश सरकार का पहला फेज,वाकई कालजयी था,जिसमें विकास और सामाजिक समरसता की नई ईबारत लिखी गयी ।बीते लोकसभा चुनाव में तेजस्वी यादव का यह बयान की सवर्ण उनकी पार्टी के वोटर नहीं हैं,काफी दुःखद बयान था ।अगर तेजस्वी यादव में परिपक्क्तता और समझ-बुझ रहती,तो वे पिता की पुरानी गलती को,फिर से नहीं दुहराते ।सवर्ण नीतीश कुमार की उपेक्षा से तंग आकर तेजस्वी की ओर देख रहे थे ।एकतरह से सवर्ण उनके पाले में जाने के लिए व्यग्र और विकल थे लेकिन तेजस्वी के रवैये से वे मजबूर हो गए ।तेजस्वी यादव की कम शिक्षा,राजनीतिक अपरिपकक्ता और विशेष राजनीतिक सलाहकार की कमी ने उन्हें सवर्ण समाज सहित सर्वसमाज का रीयल हीरो नहीं बनने दिया ।वैसे अभी लालू प्रसाद यादव के घर पारिवारिक महाभारत से राजद की भद,अलग से पिट रही है ।इसबार सिमरी बख्तियारपुर उप चुनाव में सवर्णों ने राजद को वोट कर के,तेजस्वी यादव को सुधरने और सम्भलने का संदेश दिया है ।अगर तेजस्वी यादव को राजनीति में लंबी रेस का घोड़ा साबित होना है,तो उन्हें जातीय गोलबंदी की जगह,सभी जातियों को सम्मान के साथ,समेटकर चलने की विधा सीखनी होगी ।इधर नीतीश कुमार को अब सबसे पहले सवर्णों को अपने पाले में लेने की जुगत करनी होगी ।कुल मिलाकर आगामी विधानसभा चुनाव में सवर्ण वोटरों की भूमिका बेहद मजबूत होने वाली है ।बड़ा सवाल यह है कि इस उपचुनाव के परिणाम से क्या नीतीश कुमार सबक और सीख लेंगे ?निसन्देह,बिहार अब बदलाव की घण्टी बजा रहा है ।इस ऊहापोह की राजनीति में बीजेपी अलग से अपनी रणनीति बनाने में जुटी हुई है ।आगामी विधानसभा चुनाव में महागठबंधन में फूट और कांग्रेस का अपने दम पर चुनाव लड़ना, जैसी कई संभावनाएं पनप रही हैं ।नीतीश कुमार के लिए बीजेपी के अलावे किसी और पार्टी के साथ जाने से,उनके राजनीतिक जीवन के अंत की शुरूआत हो जाएगी ।राजनीतिक समीक्षकों का कहना है कि नीतीश कुमार थक-हारकर एनडीए के ही हिस्सा बने रहेंगे ।कुल मिलाकर बीजेपी के लिए भी सवर्णों को अपने पाले में रखने की मजबूरी है ।यानि आगामी विधानसभा चुनाव में सवर्ण मतदाता,महत्वपूर्ण भूमिका में रहेंगे ।

बिहार के रिजनिंग के चर्चित शिक्षक आर.के झा

पटना से अनूप नारायण सिंह

कहते हैं कि दिल में अगर कुछ कर गुजरने की का जज्बा हो तो तमाम मुश्किलों के बावजूद इंसान अपनी मंजिल को प्राप्त कर ही लेता है कठिन से कठिन परिस्थितियों में अपने अदम्य साहस और आत्मबल के सहारे रिजनिंग के जादूगर के रूप में विख्यात चर्चित शिक्षक आर.के झा बिहार के श्रेष्ठ शिक्षकों में शामिल हैं जिनसे पढ़ने की तमन्ना लिए हजारों छात्र पटना आते हैं. प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के सर्वश्रेष्ठ संस्थान के रूप में इनका आर के झा रिजनिंग क्लासेज आज बिहार में स्थापित है बिहार की राजधानी पटना प्रारंभिक काल से ही शिक्षा के केंद्र बिंदु रही यहां के शिक्षकों का डंका पूरे देश ही नहीं विदेशों तक मे बजता आ रहा है. इसी पटना के बाजार समिति ईलाके मे स्थापित है आर के झा रिजनिंग क्लासेज .जहां हजारों की तादाद में छात्र विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के लिए रिजनिंग पढ़ने इनके पास आते हैं .बिहार का बेगूसराय जिला अपनी बौद्धिक उर्वरता के कारण आज देश ही नहीं पूरी दुनिया में अपनी अलग पहचान रखता है गंगा के अविरल धारा के समानांतर जिलों में कलम क्रांति का आगाज हुआ करता है. राष्ट्रकवि दिनकर की इस पवित्र भूमि के बछवारा में एक ऐसे ही अनमोल रत्न के रूप में पैदा हुए बिहार के संप्रति रिजनिंग के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक आरके झा. आरके झा का बचपन अपने गांव में ही बीता कॉलेज की शिक्षा भागलपुर से हुई जहां इनके पिता प्रोफेसर थे. इनके पिता इन्हें आईएएस आईपीएस की जगह एक योग्य नागरिक बनाना चाहते थे .उनका कहना था कि जिस क्षेत्र में जाइए श्रेष्ठ बनिये और समाज के उत्थान के लिए काम कीजिए इस बात को अपने जीवन का मूल मंत्र बनाया आरके झा ने उनका कहना है कि पिता के दिए गए ज्ञान ने उनके जीवन का मार्ग परिवर्तित कर दिया. पिता ही इनके पहले गुरू थे .भागलपुर व पटना से उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बाद वर्ष 1996 में पटना के चर्चित करतार कोचिंग से अपने शिक्षण करियर की शुरूआत की ।इनके संस्थान मे निर्धन विकलांग छात्रों को नाममात्र के शुल्क पर शिक्षा दी जाती है. इनके संस्थान में लाइव वीडियो क्लासेज की व्यवस्था भी है. सफलता की कहानी इनकी धर्मपत्नी के बिना अधूरी है 23 वर्षों के पढ़ाने के अभियान मे इनका योगदान काफी बेहतर है. छात्रों के आर्थिक स्थिति को देखते हुए उनके लिए आर्थिक आधार पर भी काफी सहूलियत की व्यवस्था करती हैं .इनके संस्थान में पढ़ने वाले छात्र कहते हैं इनके पढ़ाने की तकनीक काफी अलग है जिस कारण से रिजनिंग जैसे कठिन विषय भी छात्रों को कंठस्थ हो जाते हैं. जिस तकनीक से पढ़ाते हैं .उसके कारण विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं में रिजनिंग के प्रश्न हल करना काफी आसान हो जाता है .इसी कारण छात्रों की दिली तमन्ना रहती है कि वह झा रिजनिंग मे जरूर पढ़े. विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित रिजनिंग के जादूगर आरके झा को उत्तराखंड के मुख्यमंत्री हरिश रावत पूर्व सीबीआई डायरेक्टर जोगिंदर सिंह ने श्रेष्ठअवार्ड से भी सम्मानित किया है. बातचीत के क्रम में उन्होने बताया कि पढ़ने पढ़ाने के अलावा वे कुछ भी नहीं सोचते हैं उन्हें लगता है कि छात्रों के अंदर सब कुछ है बस उसे परोसने की कला सीखनी है. रिजनिंग के बारे में छात्रों के दिमाग में बचपन से ही बैठा दिया जाता है कि कठिन है लेकिन तकनीक के माध्यम से पढ़ाते है जिससे छात्रों को लगता है कि अन्य विषय से रिजनिंग के सवालों को हल करना काफी आसान है। अरिहंत और रायल पब्लिकेशन से भी इनके रिजनिंग के कोई किताब प्रकाशित हो चुके हैं जिससे देशभर के बच्चे पढ़ते हैं।

पूर्व सांसद आनंद मोहन को जेलवास से, मिलने वाली है मुक्ति

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार रिहाई की देने वाले हैं हरि झंडी

वरिष्ठ पत्रकार मुकेश कुमार सिंह

डेढ़ दशक पहले जिस बाहुबली, दबंग और रॉबिनहुड राजनीतिक सूरमा की एक आवाज पर बिहार की सियासत हिल जाती थी,उस राजनीतिक बाजीगर की अब जेल से रिहाई तकरीबन सुनिश्चित हो गयी है ।जी हाँ ! हम बात कर कर रहे हैं बीते करीब 14 वर्षों से बिहार के सहरसा जेल में बन्द पूर्व सांसद आनंद मोहन की ।आनंद मोहन बिहार के तत्कालीन गोपालगंज डीएम जी.कृषनैया की हत्या मामले में आजीवन कारावास के सजायाफ्ता हैं और लंबे समय से सहरसा जेल में बन्द हैं ।हांलांकि एक मामले में कुछ दिन पहले पेशी के लिए उन्हें दिल्ली ले जाया गया था ।पेशी के बाद उनकी पहली पारिवारिक तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हुई है ।तस्वीर में आनंद मोहन सहित उनके दो बेटों चेतन आनंद,अंशुमान मोहन और बेटी सुरभि आनंद के साथ उनकी पत्नी पूर्व सांसद लवली आनंद के चेहरे पर खुशी की झलक साफ तौर पर देखी जा सकती है ।यह खुशी संतोष, तयशुदा महोत्सव और नए जीवन के आगाज की है ।यहाँ यह भी गौरतलब और बेहद खास बात है कि पूर्व सांसद आनंद मोहन लगभग 14 वर्ष की सजा जेल के सलाखों के भीतर,अबतक गुजारकर,लगभग सजा काट ली है ।पूर्व सांसद आनंद मोहन ने आजीवन कारावास की सजा को तिहाड़ जेल,बेउर, मुजफ्फरपुर, भागलपुर,दरभंगा,पुर्णिया और सहरसा जेल में रहकर काटी है ।लंबे समय से वे सहरसा जेल में बन्द हैं ।अब उनकी रिहाई के लिए सिर्फ राज्य सरकार से हरी झंडी मिलने भर की देर है ।वैसे बतौर आनंद मोहन और राजनीतिक जानकारों की मानें,तो आनंद मोहन की सजा के लिए नीतीश कुमार को ही षड्यंत्रकारी और जिम्मवार ठहराया जाता रहा है ।हांलांकि नीतीश कुमार इसे न्यायालय और कानून का फैसला बताकर,खुद को लगातार बेकसूर बताते रहे हैं ।वैसे हमसे खास बातचीत के दौरान पूर्व सांसद आनंद मोहन ने वक्त,अपनों की दगाबाजी और हालात को सजा के लिए जिम्मेवार ठहराया है ।पूर्व सांसद ने कहा कि उन्होंने सदैव न्यायपालिका का सम्मान किया है और उनकी उंगली कभी कानून की ओर नहीं उठेगी ।नीतीश कुमार के प्रति उनके मन में कोई कलेष,दुःभावना और दुराव नहीं है ।राजनीति में नफा-नुकसान के खेल में वे बिना किसी कसूर के सजायाफ्ता हो गए ।वे जब जेल से बाहर आएंगे,तो बेशर्त, साफ-सुथरी,सबजन हितार्थ और मूल्यों की राजनीति को ना केवल हवा देंगे बल्कि उसके मजबूत झंडादार बनेंगे ।नीतीश से गहरे मनमुटाव को कैसे पाटेंगे,का जबाब उन्होंने बेहद मुस्कुराते हुए दिया और कहा कि चौदह वर्षों के वनवास के बाद मित्रता को जगह मिलनी चाहिए ।राजनीति में कभी दोस्ती और दुश्मनी स्थायी नहीं होती है ।पूर्व सांसद के बातचीत के लहजे से यह साफ पता चल रहा था कि वे अब नीतीश के हाथ को मजबूत करेंगे ।बीते लोकसभा चुनाव के दौरान आनंद मोहन और नीतीश कुमार के बीच मधुर संबंध स्थापित हुए थे ।यही कारण थी कि आनंद मोहन की पत्नी लवली आनंद और बड़े बेटे चेतन आनंद कॉंग्रेस में रहते हुए भी नीतीश कुमार और एनडीए के लिए चुनाव प्रचार कर रहे थे ।उस समय कयास यह लगाया जा रहा था कि बीते 2 अक्टूबर को आनंद मोहन की रिहाई तय है लेकिन आनंद मोहन 2 अक्टूबर को रिहा नहीं किये गए ।बिहार सरकार के सूत्रों से जो हमें जानकारी मिली है,उसके मुताबिक,उस दैरान तात्कालिक अड़चन और किसी राजनीतिक विवशता की वजह से पूर्व सांसद आनंद मोहन की रिहाई पर ग्रहण लग गया था । अभी बिहार उपचुनाव के जो परिणाम आये हैं,वह नीतीश कुमार को संभलने का संदेश दे रहा है ।राजनीति में सवर्णों की उपेक्षा,अब नए परिणाम दे रहे हैं ।अब कुछ जातीय समीकरण

बनाकर,राजनीतिक सफर मजबूती से तय नहीं किया जा सकता है ।नीतीश कुमार सोसल इंजीनियरिंग के भीष्म पितामह माने जाते हैं ।वे उपचुनाव के परिणाम पर,निसन्देह गहन चिंतन और बहस-विमर्श करेंगे ।जदयू के भीतरखाने के सूत्रों से मिल रही जानकारी के मुताबिक आनंद मोहन के बेहद करीबी देश के जाने-माने,एक वरिष्ठ पत्रकार नीतीश कुमार के संपर्क में हैं,जो आनंद मोहन की रिहाई का लगभग रास्ता साफ करा चुके हैं ।विश्वस्त सूत्रों के हवाले से मिल जानकारी के मुताबिक एक पैनल के द्वारा,आनंद मोहन के जेल प्रवास के दौरान उनकी सारी गतिविधियों और आचरण की समीक्षात्मक रिपार्ट तैयार की जा चुकी है ।इस रिपोर्ट में इस बात का उल्लेख है कि अपनी जेल यात्रा में पूर्व सांसद मृदुभाषी, मिलनसार,जेल अधिकारियों के साथ मधुर संबंध बनाए रखने और जेल मैनुअल का पालन करने में बेहद अग्रणी रहे ।जेल यात्रा के दौरान वे एक स्थापित कवि,प्रखर कथाकार और ओजस्वी साहित्यकार के रूप में उभरे हैं ।जेल से उनकी चार पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं ।उनका एक आलेख सीबीएसई के पाठ्यक्रम में भी शामिल है ।कुल मिलाकर,रिपोर्ट में उन्हें एक असाधारण व्यक्तित्व का स्वामी बताया गया है ।अब इससे इतर राजनीति की ओर मुड़ें,तो यहाँ यह जिक्र करना बेहद लाजिमी है कि सवर्ण की उपेक्षा,अब नीतीश कुमार किसी भी सूरत में नहीं करेंगे ।आगामी 2020 के विधानसभा चुनाव में उन्हें एक मजबूत सवर्ण नेता का साथ चाहिए ।ऐसे में पूर्व सांसद आनंद मोहन सवर्ण के साथ-साथ सबजन के नेता हैं और उनका साथ नीतीश कुमार के लिए तुरुप का पत्ता और अलाउद्दीन का चिराग साबित होगा ।मोटे तौर पर रास्ता पूरी तरह से साफ हो चुका है ।पूर्व सांसद आनंद मोहन के इसी वर्ष किसी भी दिन रिहाई की खबर देश के लिए सुर्खी बन सकती है ।अभी हमारी इस एक्सक्लूसिव जानकारी और रपट पर आनंद मोहन सहित उनके परिवार के अन्य सदस्यों की सोसल मीडिया पर वायरल तस्वीरों की शारीरिक भाषा,इस बात की तकसीद कर रही है ।अभी जो बिहार सहित देश की राजनीति है,उसमें कहीं से भी आनंद मोहन की पुरजोर दखल नहीं है ।लेकिन राजनीतिक जानकार और समीक्षकों का कहना है कि आनंद मोहन के जेल से बाहर निकलते ही खास कर के बिहार की राजनीतिक फजां बिल्कुल बदल जाएगी ।आनंद मोहन एक बड़े जनाधार वाले नेता हैं और वे हवा का रुख मोड़ने में माहिर रहे हैं ।जाहिर तौर पर आनंद मोहन के जेल से बाहर आते ही देश का राजनीतिक समीकरण बदलेगा और बड़े बदलाव की संभावना बढ़ेगी ।आनंद मोहन के समर्थकों,चाहने वालों से लेकर उनके विरोधियों और लगभग तमाम राजनीतिक पार्टियों के नेताओं को आनंद मोहन के जेल से बाहर निकलने का इंतजार है ।सच तो यह है कि हमें भी उनके जेल से बाहर निकलने का इंतजार है ।

आजीवन कारावास के सजायाफ्ता पूर्व सांसद आनंद का नया अवतार

वरिष्ठ पत्रकार मुकेश कुमार सिंह

एक सजायाफ्ता राजनेता अब एक समृद्ध कवि,विराट कथाकार और मूर्धन्य साहित्यकार हो चुके हैं ।सी.बी.एस.ई के आठवें क्लास के हिंदी की नयी पुस्तक है जिसके एक अध्याय के लेखक हैं क्षत्रिय की आन,बान, शान और शौर्य के प्रतीक पूर्व सांसद आनंद मोहन.पुस्तक का नाम है मधुरिका हिंदी पाठमाला. आनंद मोहन के लिए कभी दबंग,तो कभी बाहुबली,तो कभी क्रांतिवीर और कभी रॉबिन हुड की संज्ञा.लेकिन अब एक नया अवतार.आनंद मोहन को अब एक लेखक के रूप में देश भर के बच्चे जानने लगे हैं .इस पुस्तक में जो आलेख या फिर निबंध है उसका नाम है पर्वत पुरुषः दशरथ.फिलवक्त ये लेखक बिहार के गोपालगंज के पूर्व जिलाधिकारी जी कृष्णैया की हत्या के आरोप में सहरसा के मंडल कारा में उम्र कैद की सजा काट रहे है. सबसे पहले मैं आपको इनका जरा परिचय करवा दू .इनका जन्म 26 जनवरी 1956 में बिहरा के सहरसा जिले के पंचगछिया गाँव के एक स्वतंत्रता सैनानी परिवार में हुआ.शुरूआती दिनों में आनंद मोहन पहले के सहरसा जिला और अब सुपौल जिला के त्रिवेणीगंज प्रखंड स्थित अपने ननिहाल

90 के दशक में पप्पू और आनंद के बीच खूनी संघर्ष

90 का दशक बिहार की राजनीति का काला दशक था ।इस दौर में अपराधियों को राजनेताओं के द्वारा ईश्वर सरीखा सम्मान और भाव दिया जाता था ।समाज में बैकवर्ड और फॉरवर्ड की सामाजिक लड़ाई जारी थी ।इसी दौरान पूर्व सांसद आनंद मोहन और अभी के जाप सुप्रीमो पूर्व सांसद पप्पू यादव और उनके समर्थकों के बीच कई बार खूनी संघर्ष हुए ।इस संघर्ष में दोनों तरफ से कई लाशें गिरीं ।समाज का माहौल बेहद खराब था ।पप्पू यादव पर लालू प्रसाद यादव का अशीर्वाद था लेकिन आनंद मोहन के सर पर ऐसे किसी कद्दावर नेता का हाथ नहीं था ।आनंद मोहन, सवर्ण समाज के साथ-साथ निचली जातियों के बीच खासा लोकप्रिय थे ।आनंद मोहन के साथ क्रांतिकारियों की एक बड़ी फौज थी,जो पप्पू यादव से निपटने के लिए हर वक्त तैयार थी ।लेकिन समय बदला और आनंद मोहन के साथ-साथ पप्पू यादव के हृदय का भी परिवर्तन हुआ ।पप्पू यादव ने आनंद मोहन को अपना बड़ा भाई स्वीकारा और कोसी-सीमांचल में शांति की शुरूआत हुई ।पहले की अदावत की जगह अब आनंद मोहन और पप्पू यादव के बीच मधुर संबंध हैं ।दिल्ली में सेवा आश्रम के बूते पप्पू यादव ने हजारों गरीब मरीजों को जीवनदान दिए ।किसी भी जाति के परिवार में दुःख की घड़ी हो,पप्पू यादव पहुंचते हैं और उस परिवार को ढांढ़स बंधाने के साथ-साथ आर्थिक मदद भी भी करते हैं ।सिस्टम जनित पटना की बाढ़ में उनके कार्यों की चर्चा, राज्य,देश और विश्व स्तर पर हुई ।अपने बड़बोले पन पर पप्पू यादव लगाम लगाएं,तो एक झटके में उन्हें विराट मानव की संज्ञा दी जा सकती है ।इधर आनंद मोहन के बारे में कहा जाता है कि वे अख्खड़,जिद्दी और किसी भी सूरत में झुककर समझौता करने वाले नहीं हैं ।उनमें असली क्षत्रप के गुण हैं,जो उन्हें सजायाफ्ता होने के बाद भी देशभर में उनकी एक अलग पहचान देता है ।बिहार में तो आनंद मोहन को आधुनिक काल का महाराणा प्रताप कहा जाता है ।

मानगंज गाँव में रहते थे.वहीँ से वे जे.पी के सम्पूर्ण क्रांति में कूद पड़े और त्रिवेणीगंज में पुलिस फायरिंग का जमकर विरोध किया.इसमें उनके कुछ छात्र साथी भी पुलिस की गोली लगने से मारे गए.उन शहीद साथियों का इन्होनें शहीद स्मारक बनवाया.इन सबके बीच इन्होंने अपने सम्पादन में " क्रान्ति दूत" नाम का एक साप्ताहिक अखबार का प्रकाशन प्रकाशित भी शुरू किया.जब 1977 में जनता पार्टी की सरकार बनी और तत्कालीन प्रधानमंत्री मुरारजी देसाई का सहरसा आगमन हुआ तो सैद्धांतिक और वैचारिक मतभेदों के कारण इन्होंने,उन्हें काला झंडा दिखाया.बाद में चलकर त्रिवेणीगंज विधानसभा से वे चुनाव भी लड़े,लेकिन चुनाव में इन्हें शिकस्त मिली.इस क्रम में इनपर कई राजनीतिक और अपराधिक मुकदमे दर्ज हुए और इन्हें देखते ही गोली मारने का वारंट भी जारी हुआ.उस वक्त आनंद मोहन को लोग रोबिन हुड की छवि के रूप में जानने लगे थे.आनंद मोहन कोसी-सीमांचल के अलावे बिहार की विभिन्य जिलों में शरण लेते रहे ।वे पुलिस की गोलियों से बचने के लिए कुछ समय तक पड़ोसी देश नेपाल में भी रहे ।वर्ष 1983 में पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय सत्येन्द्र नारायण सिंह का आगमन सहरसा में हुआ और पूर्व से तय कार्यक्रम के मुताबिक दस लाख से अधिक भीड़ की मौजूदगी में आनंद मोहन ने उनके समक्ष आत्मसमर्पण किया.इस आत्मसमर्पण में दिवंगत समाजवादी पुरोधा और शलाका पुरुष उमेश प्रसाद सिंह का विराट योगदान था ।दिवंगत उमेश प्रसाद सिंह देश के ख्यातिलब्ध शिक्षाविद,अंग्रेजी और हिंदी साहित्यकार के साथ-साथ प्रखर पत्रकार भी थे ।स्वर्गीय उमेश प्रसाद सिंह का सत्येंद्र नारायण सिंह से पारिवारिक रिश्ते थे ।यही नहीं उनके सम्बन्ध बिहार सहित देश के अनन्य कद्दावर नेताओं और अधिकारियों से भी थे ।स्वर्गीय उमेश प्रसाद सिंह,आनंद मोहन को बेटे की तरह मानते थे ।आत्मसमर्पण के बाद आआनंद मौहन ने लंबा समय जेल में बिताया ।बाद में चलकर,आनंद मोहन न्यायालय से बड़ी हुए.1990 के विधानसभा चुनाव में तत्कालीन कॉंग्रेस के कद्दावर नेता लहटन चौधरी को सहरसा जिले के महिषी विधानसभा क्षेत्र से रिकॉर्ड 63,000 मतों से पराजित कर आनंद मोहन ने अपनी पहली राजनीतिक उपस्थिति दमदार तरीके से दर्ज करायी.क्षत्रिय समाज से आने वाले आनंद मोहन को आधुनिक महाराणा प्रताप भी कहा जाता था ।बाहुबली के तौर पर राजनीति में इनका गहरा प्रभाव बन गया ।फिर इन्होंने अलग से अपनी पार्टी "बिहार पीपुल्स पार्टी" के नाम से बनाई और वे शिवहर से सांसद चुने गए.लगातार तीन बार शिवहर से वे सांसद रहे.1994 में इनके एक साथी मुजफ्फरपुर के नेता छोटन शुक्ला की हत्या हो गयी.आनंद मोहन मृतक छोटन शुक्ला की दिवंगत आत्मा की शांति के लिए अपनी पत्नी लवली आनंद के साथ मृतक के पैतृक गाँव गए और परिजनों को ढांढ़स बंधाया और वहां से निकल पड़े ।इधर मृतक की अर्थी जुलूस निकाली गयी जिसमें लालबत्ती गाड़ी को देख भीड़ बेकाबू हो गयी और उस पर टूट पड़ी.उस गाड़ी में बैठे गोपालगंज के तत्कालीन जिलाधिकारी जी कृष्णैया की भीड़ ने पीट-पीट कर हत्या कर दी.इस हत्या का आरोप आनंद मोहन पर लगा,जबकि घटना के समय वे घटनास्थल पर मौजूद नहीं थे ।इस हत्या के आरोप में आनंद मोहन,हाजीपुर से गिरफ्तार कर लिए गए ।निचली अदालत से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक मामला चला और पूर्व सांसद आनंद मोहन को उम्र कैद की सजा हो गयी.बीते कई वर्षों से आनंद मोहन सहरसा जेल में बंद हैं.सहरसा जेल के अंदर के कालखंड को आनंद मोहन ने अंतस से उपयोग किया और एक नए कवि और लेखक आनंद मोहन का जन्म हुआ ।जेल डायरी,कैद में आजाद कलम, स्वाधीन कलम और काल कोठरी नाम से इनकी पुस्तक प्रकाशित हुई है,जिसकी चर्चा देश स्तर पर, लगातार होती रही है ।इनके इतिहास की कड़ी को थोड़ा और आगे बढ़ाएं तो इनकी शादी सहरसा जिले के अतलखा गाँव के महान स्वतंत्रता सैनानी माणिक प्रसाद सिंह की पुत्री लवली आनंद से 13 मार्च 1991 को हुयी.आनंद मोहन ने अपने राजनीतिक प्रभाव से अपनी पत्नी को दो बार विधायक और एक बार सांसद बनाया. आनंद मोहन के दादा राम बहादुर सिंह देश के चर्चित

स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे.आजादी से पूर्व आनंद मोहन के घर महात्मा गांधी,राजेन्द्र प्रसाद,विनोबा भावे से लेकर जे.बी.कृपलानी तक का आना-जाना रहा. हालिया वर्षों की बात करें तो पूर्व प्रधानमन्त्री चंद्रशेखर और पूर्व उप राष्ट्रपति भैरो सिंह शेखावत तक आनंद मोहन के घर आ चुके हैं. बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और जदयू के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष,शरद यादव जिन्होंने अपनी अलग पार्टी क्लोज्ड बना ली है ने भी,आनंद मोहन के घर जाकर अपनी हाजिरी लगाई है.कोसी-सीमांचल सहित बिहार के बुद्धिजीवियों में इस बात की खुशी है की देश के पाठ्यक्रम में इतने बड़े कवि और लेखकों के बीच आनंद मोहन को भी शामिल किया गया है.जाहिर तौर पर आनंद मोहन के चाहने वालों में काफी खुशी है.आनंद मोहन के समर्थक कहते हैं की आनंद मोहन ने अपनी लेखनी से साहित्कारों के बीच एक दमदार उपस्थिति दर्ज की है.

जिस व्यक्ति के विषय में विरोधियों ने बहुत तरह की बातें फैलाई और उनको हमेशा बाहुबली ही घोषित किया लेकिन गद्य एवं पद्य के माध्यम से जो उपस्थिति उन्होंने दर्ज की है और उनके लिखे हुए गद्य का सी.बी एस.ई में प्रविष्ट होना,उनके विरोधियों को करारा जवाब है. बेशक,कहानी और कविता के माध्यम से आनंद मोहन ने जेल के भीतर अपने एक-एक पल को जिया है. बुद्धिजीवी कहते हैं कि जिस पाठ्यक्रम में इतने बड़े-बड़े साहित्कारों की रचनाओं का संग्रह किया गया है उसमे आनंद मोहन की गद्य रचना का आना बड़ी बात है.आनंद मोहन की गद्य रचना किस स्तर की होती है,ये इसका ही एक प्रमाण है ।ये बड़ी उत्कृष्ट खासियत है की आनद मोहन ने जेल की काल कोठरी में रहकर भी ऐसी रचना लिखी है.देश के जाने माने वयोवृद्ध पत्रकार यू.एन.मिश्रा भाव-विह्वल हैं और आनंद मोहन की इस गद् और पद् यात्रा को श्रेष्टतम यात्रा करार रहे हैं.बड़े बेबाक लहजे में इनका कहना है की आनंद मोहन अब साहित्यिक इतिहास की धरोहर बन चुके हैं.ओमप्रकाश नारायण यादव,प्रियदर्शी पाठक,दिनेश प्रसाद सिंह,सुरेश सिंह,रमेश प्रसाद सिंह,वार्ड पार्षद सह प्रखर समाजसेवी राजेश कुमार सिंह, ध्यानी यादव,पवन राठौर,दीपक सिंह,अमित सिंह किनवार,छन्दन सिंह,चुन्नू भदौरिया,सोना सिंह भदौरिया,मोनू सिंह,अजय कुमार सिंह "बबलू" जैसे आनंद मोहन के सैंकड़ों समर्थक कोसी और सीमांचल सहित पूरे बिहार में घूम-घूमकर आनंद मोहन की इस बेहद खास छवि से लोगों का परिचय करा रहे हैं.

इनलोगों का समवेत कहना है की आनंद मोहन के भीतर की संवेदना सदैव जागृत रही है और साहित्य में इनका यह स्थापन,उसी का फलाफल है.पूर्व सांसद आनंद मोहन ने चर्चित बिहार से खास बातचीत में कहा की जेल के भीतर उन्होनें निर्गुण में शगुन तलाशने की कोशिश की है. उन्होनें तल्ख तेवर में कहा की राजनीतिक साजिश के तहत मैं जेल में बंद हूँ.और जिनलोगों ने यह सोचा की आनंद मोहन को सजा कराकर,अभिशाप के तौर उन्हें अभिशप्त कर दिया है,उस अभिशाप को मैंने वरदान में बदलने की कोशिश की है.उन्होनें कहा की उनके लिए काफी हर्ष का क्षण है और घर के लोगों से लेकर तमाम उनके समर्थक तक काफी खुश हैं. इनकी नजर में राजनीति पर जबतक साहित्य की छाँव रही,राजनीति निर्मल रही. लेकिन आज राजनीति बेईमानी और गंदगी का ना केवल पर्याय बन चुकी है बल्कि राजनीति निष्ठुर हो गयी है.साहित्य के दायरे में आगे राजनीति जब आएगी तब वह राजनीति पुरुषार्थ की होगी. मंडल कारा में कैद पूर्व सांसद आनंद मोहन द्वारा लिखित नई पुस्तक "गाँधी" (कैक्टस के फूल) का लोकार्पण आगामी नवम्बर माह में बिहार के पटना के 'रविन्द्र भवन' के सभागार में होना तय हुआ है लेकिन इसकी तिथि की अभी घोषणा नहीं की गयी है. इस लोकार्पण समारोह में देश के जाने-माने कई गांधीवादी चिंतक, प्रखर और मूर्धन्य साहित्यकार, लेखक,शायर,राजनेता सहित कई गणमान्य लोगों के उपस्थित रहने के कयास लगाए जा रहे हैं . पूर्व सांसद आनंद को लेकर सबसे अहम जानकारी हमारे पास यह है कि पूर्व सांसद आनंद मोहन आजीवन कारावास के सजायाफ्ता हैं और अब उनकी सजा लगभग पूरी हो चुकी है. राजनीतिक जानकारों का मानना है कि आनंद मोहन जैसे ही जेल से बाहर निकलेंगे बिहार सहित देश की राजनीतिक हवा बिल्कुल बदल जाएगी.यह सभी को पता है कि आनंद मोहन सवर्णों से लेकर सर्वसमाज के बीच गहरी पैठ रखते हैं और उनका बड़ा जनाधार है.पूर्व सांसद आनंद मोहन के जेल से बाहर निकलने का इंतजार लगभग तमाम राजनीतिक पार्टियों के साथ-साथ कई बड़े राजनीतिक सुरमा नेताओं को है .हमें भी उनके जेल से बाहर आने का इंतजार है.

एक अजीम पत्रकार,जो बन चुके हैं किवदंती

उनकी टकसाल में पलती है मानवता और इंसानियत

अभिजीत कुमार,संपादक

बिहार के सहरसा जिले के रहने वाले मुकेश कुमार सिंह, जिन्हें लोग प्यार और अतिशय सम्मान से दादा ठाकुर कहते हैं और उन्हें लोग देश स्तर पर आधुनिक काल का महामानव मानते हैं ।दादा ठाकुर 34 वर्षों से पत्रकारिता में हैं ।दादा ने स्कूली शिक्षा पैतृक जिला सहरसा से ली और उच्च शिक्षा पटना विश्वविद्यालय और ईलाहाबाद से ली ।दो विषयों से एमए और इतिहास से पीएचडी किये ।दादा ने वर्ष 1986 में बिहार के पटना से पत्रकारिता का आगाज किया ।उन्होंने अपनी पत्रकारिता की शुरूआत द टाईम्स ऑफ इंडिया अखबार से की ।बेहद कम उम्र में ही वे इस अखबार में एक साथ तीन कॉलम लिखते थे ।फिर द रीडर्स डाइजेस्ट में लिखना शुरू किया ।वीमेंस एरा,पायोनियर में भी वे लिखते रहे ।उसके बाद दादा का रुझान हिंदी पत्रकारिता की ओर हुआ ।लखनऊ में रहकर वर्षों जनसत्ता में अपनी सेवा दी ।कई पत्रिकाओं के संपादक भी रहे । दादा ने दिल्ली, मुंबई, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, पंजाब, राजस्थान,यूपीसहित कई प्रांतों में अपनी सेवा दी है ।दिल्ली प्रेस पत्र भवन से भी वर्षों जुड़े रहे ।दिल्ली से प्रकाशित साप्ताहिक अखबार बिहारी खबर को इन्होंने नई ऊंचाई दी ।इसी दौरान,दादा का अचानक रुख बदला और वे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की ओर मुड़े और 2002 में जी न्यूज से जुड़े लेकिन कलम से आग उगलने की पिपासा पूरी तरह से जिंदा थी ।दादा 2006 में सन्मार्ग अखबार में बतौर स्टेट हेड अपनी सेवा देनी शुरू कर दी ।लेकिन उसके बाद 2008 में महुआ टीवी,फिर महुआ न्यूज से जुड़े ।2013 तक महुआ न्यूज में रहे और 2013 में ही जी न्यूज के रिजिनल चैनल जी बिहार-झारखण्ड के ब्यूरो हेड बने ।2017 में जी न्यूज से रिजाइन कर इंडिया न्यूज से जुड़े ।फिर पीटीएन न्यूज ग्रुप के मैनेजिंग एडिटर बने ।दादा द वर्ल्ड टीवी न्यूज के भी मैनेजिंग एडिटर हैं ।वे देश के

सर्वश्रेष्ठ बेबपोर्टल और कई यूट्यूब चैनल से भी जुड़े हुए हैं ।दादा के कर्मरत जीवन के दौरान कई उतार-चढ़ाव हुए और दादा का कई चैनल में आना-जाना लगा रहा ।दादा अभी जनतंत्र टीवी में बिहार-झारखण्ड ब्यूरो हेड हैं ।पत्रकारिता के लंबे सफर में बेहतरीन पत्रकारिता के लिए दादा को डेढ़ दर्जन से ज्यादा राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं । देश के शीर्ष घराने के अखबार और पत्रिकाओं के द्वारा लगातार उनसे आलेख मंगाए जाते हैं और उन्हें वरीयता के साथ प्रकाशित किया जाता है ।1990 में जम्मू-कश्मीर में कश्मीरी पंडितों पर हुए अत्याचार और उनके पलायन,केदारनाथ त्रासदी,नेपाल में हुए लैंडस्लाइड और भूकम्प,सालाना कोसी बाढ़ त्रासदी,कुसहा बाढ़ त्रासदी और पुर्णिया में आये तूफान में,उनकी रिपोर्टिंग को पीढियां याद रखेंगी ।दादा देश के जाने-माने पत्रकार संघ "अखिल भारतीय पत्रकार सुरक्षा समिति" के राष्ट्रीय संयोजक हैं ।आपको यह बताते हुए काफी हर्ष हो रहा है कि दादा जब छठी कक्षा के छात्र थे,तभी से उनकी कविता और कहानी, बालक,नंदन,पराग,चंपक सहित कई अखबारों में छपते थे ।बेहद अजीम और गौरवशाली बात यह है कि छात्र

जीवन से ही दादा को देश के विभिन्य हिस्सों से पत्रकारिता सहित अन्य सामाजिक विषयों पर व्याख्यान के लिए बुलाया जाता रहा है ।खासकर व्यवहारिक पत्रकारिता की मौलिकता और उसकी अहमियत पर दादा के व्याख्यान और उनके आलेख,पत्रकारिता की नई पीढ़ी के लिए अचूक औषधि और संजीवनी हैं ।इस कड़ी में यह उल्लेख करना बेहद लाजिमी है कि दादा ने देश के कई आंदोलन के नेतृत्व भी किये हैं, जहां उनके बेबाक भाषण ने आंदोलन को नई दिशा देने के साथ-साथ अकूत ऊर्जा के सृजन भी किये हैं ।दादा ठाकुर अभी भी सेमिनार के नाम पर देश के बड़े मंचों पर,अपने विचारों को लगातार साझा कर रहे हैं ।इसके अलावे देश के सर्वोच्च अखबारों में राजनीति से लेकर सामाजिक सरोकार से जुड़े विभिन्य विषयों पर उनके तराशे हुए आलेख,आज भी लगातार अनुकरणीय और संग्रहणीय होते हैं ।यहाँ यह बताना बेहद लाजिमी है कि दादा के सैंकड़ों शिष्य पत्रकारिता जगत में शीर्ष पर हैं ।

यही नहीं देश सहित विदेशों में भी इनके शिष्य पत्रकारिता सहित अन्य क्षेत्रों में धमाल मचा रहे हैं ।हिंदुस्तान के विभिन्य प्रांतों में इनके शिष्य और मित्रों की एक बड़ी जमात है,जो मीडिया क्षेत्र के अलावे उद्योग,व्यवसाय और सरकारी विभागों में ऊंची जगहों पर हैं ।अपनी पत्रकारिता में सदैव सच उकेरने की वजह से दादा सदैव सरकार और सिस्टम के निशाने पर रहे हैं ।अपराधियों ने भोपाल और ग्वालियर में उनपर दो बार गोलियों की बरसात भी की लेकिन हजारों लोगों की दुआओं से वे बच निकले ।इस साल उनके पैतृक जिले में उनपर हमला हुआ ।तीन गोलियाँ उनपर चली लेकिन उन्हें कुछ भी नहीं हुआ ।इस हमले में दादा ने अपराधी की पिस्टल छीन ली ।लेकिन बाद में उन्होंने सामाजिक पहल से उस अपराधी को माफ कर दिया ।देश के बड़े नेता और मंत्रियों से मधुर संबंध रहने के बाद भी वे कभी किसी से आजतक,व्यक्तिगत फायदे के लिए अपने जमीर को,कभी भी गिरवी नहीं रखा ।अपने सुर-ताल, धुन और जिद की जिंदगी जीने वाले दादा ठाकुर ने,कभी किसी के लिए ना तो बुरा सोचा और ना ही किसी को टारगेट किया । दादा ठाकुर पत्रकारिता के साथ-साथ समाजसेवा के क्षेत्र में विख्यात रहे हैं ।देश के सबसे बड़े सामाजिक संगठन श्री राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना के दादा राष्ट्रीय संयोजक सह बिहार-झारखण्ड और दिल्ली के मुख्य संगठन प्रभारी हैं ।बेहद अजीम और खास बात यह है कि दादा ने अपने इस जीवन काल में अभीतक अपने गृह जिला बिहार के सहरसा के साथ-साथ देश के विभिन्य प्रांतों में 3 हजार यूनिट से ज्यादा ब्लड डोनेट करवाये हैं ।हजारों मरीज के ईलाज में मदद की है ।तीन सौ से ज्यादा मरीजों का अपने खर्चे पर इलाज करवाये हैं और यह सिलसिला बदस्तूर जारी है ।4 सौ से ज्यादा लावारिश शवों का उनके धर्म के अनुसार दाह-संस्कार और दफन करवाये हैं ।कई गरीब बच्चियों के विवाह करवाने के साथ-साथ गरीब बच्चों की पढ़ाई की व्यवस्था करवाई है ।दादा ठाकुर की पत्नी बीणा बिसेन गृहणी रहते हुए,सधी हुई लेखिका हैं ।उनके आलेख भी देश के प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में लगातार छपते रहते हैं ।दादा के तीन बेटे हैं ।बड़ा बेटा संकेत सिंह ने गुरु जांवेश्वर यूनिवर्सिटी जालंधर से मास कम्युकेशन से स्नातक और पीजी की डिग्री हासिल की है ।वह अभी पीएचडी की तैयारी में जुटे हैं ।दो अन्य बेटे निर्देश सिंह और आदेश सिंह,मंगलमयी इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट,ग्रेटर नोएडा से बीबीए की पढ़ाई कर रहे हैं । कुल मिलाकर दादा ठाकुर एकतरफ जहाँ ईमानदार पत्रकारिता के बड़े झंडादार रहे हैं,वहीं उन्होंने इंसानियत की नई और घाणी ईबारत लिखी है ।देश में दादा ठाकुर की छवि एक समृद्ध महानायक की है ।निश्चित तौर पर दादा,नई पीढ़ी के लिए अकूत ऊर्जा के स्रोत हैं ।दादा इंसानियत के जीवंत प्रयोगशाला हैं जिनसे सबक लेते हुए बहुत कुछ सीखा जा सकता है ।मोटे तौर पर,दादा ठाकुर बिहार ही नहीं बल्कि देश का गौरव होने के साथ-साथ अजीम और शलाका पुरुष हैं ।बेहिचक इन्हें सरस्वती पुत्र और युग पुरुष की संज्ञा दी जा सकती है ।

चिराग पासवान के हाथों लोजपा की कमान

संसदीय क्षेत्र जमुई में कार्यकताओं ने मनाया जश्न

विधुरंजन उपाध्याय

वर्ष 2000 में गठित लोक जनशक्ति पार्टी को 19 वर्षों के बाद नया राष्ट्रीय अध्यक्ष मिला है। पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में 5 नवंबर को रामविलास पासवान ने अपने पुत्र एवं जमुई लोकसभा से सांसद चिराग पासवान को पार्टी की कमान सौंपी। बता दें कि लोजपा के स्थापना के समय से ही रामविलास पासवान के पास ही पार्टी की कमान थी। विगत दिनों मिडिया को संबोधित करते हुए रामविलास पासवान ने यह संकेत दिया था की चिराग पासवान को पार्टी के राष्ट्रिय अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी जाएगी। हाल ही में रामविलास पासवान की रजामंदी के बाद उनके भतीजे एवं समस्तीपुर लोकसभा के नवनिर्वाचित संसद प्रिंस राज को लोजपा का बिहार प्रदेश अध्यक्ष मनोनीत किया गया था। दिल्ली के 12 जनपथ स्थित रामविलास पासवान के आवास पर लोजपा के कार्यकारिणी समिति के सभी पदाधिकारियों सहित सभी प्रदेशों के अध्यक्ष शामिल हुए। बैठक में दलित सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष और लोजपा सांसद पशुपति कुमार पारस ने लोजपा संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष एवं सांसद चिराग पासवान को लोजपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए जाने का प्रस्ताव रखा। लोजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सभी सदस्यों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया और सर्वसम्मति से चिराग पासवान को लोजपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुन लिया गया। बैठक में राष्ट्रीय स्तर पर कई राजनीतिक प्रस्तावों पर भी चर्चा हुई। रामविलास पासवान के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहते भी बतौर लोजपा संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष पार्टी के कई फैसले चिराग ही लेते थे। हर चुनाव में उम्मीदवारों के चयन में चिराग की भूमिका प्रमुख रहती थी। लेकिन मंगलवार से चिराग ने पार्टी की कमान पूरी तरह से संभाल ली है। रामविलास ने चिराग को केवल लोजपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष ही बनाया है, केंद्रीय मंत्री वे खुद ही बने रहेंगे।वर्ष 2019 के आम चुनाव में भी भी सीटों के बंटवारे, उम्मीदवारों के चयन और सभी को जिताने में चिराग ने अहम भूमिका निभायी थी। समस्तीपुर से सांसद रहे चिराग के चाचा रामचन्द्र पासवान के निधन के बाद हुए उपचुनाव में रामचंद्र पासवान के पुत्र और चिराग के भाई प्रिंस राज को उम्मीदवार बनाकर एनडीए की तरफ से उतारा गया था, जिनकी जीत के लिए चुनाव प्रचार की कमान चिराग ने अपने हाथ मे रखी थी। जीतोड़ मशक्कत के बाद चिराग ने प्रिंस को जीत दिलवाकर ही दम लिया। चिराग को राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाये जाने के बाद मीडिया से बात करते हुए रामविलास पासवान ने कहा था कि हम चाहते हैं कि अगली पीढ़ी अपना काम संभाले। जैसे ही यह खबर चिराग पासवान के संसदीय क्षेत्र जमुई पहुंची, लोग खुशी से झूम उठे। चिराग यहां से 2019 में लगातार दूसरी बार सांसद चुने गए हैं। चिराग यहां के लोगों के काफी चहीते हैं। खासकर युवा वर्ग के बीच उनकी काफी पकड़ है। अपने चहेते नेता चिराग भैया के लोजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने की खबर मिलते ही लोजपा कार्यकताओं के साथ-साथ जमुई लोकसभा के निवासी काफी उत्साहित हो गए और एक-दूसरे को बधाई देने लगे। लोजपा के जिलाध्यक्ष रुबेन सिंह एवं युवा लोजपा के जिलाध्यक्ष ई. निर्भय सिंह के नेतृत्व में द्वारिका विवाह

बिहार की सियासत की बड़ी खबर, लोजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनें चिराग पासवान

बिहार की सियासत से` बड़ी खबर आ रही है. सांसद चिराग पासवान को लोक जनशक्ति पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए गए हैं. पिता की जगह चिराग पासवान को पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया है.लोक जनशक्ति पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में लोजपा सुप्रीमो रामविलास पासवान ने चिराग पासवान को राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए जाने का एलान किया. इससे पहले लोजपा की बिहार प्रदेश इकाई के प्रदेश अध्यक्ष बदले जा चुके हैं. पशुपति कुमार पारस के इस्तीफे के बाद सांसद प्रिंस राज को प्रदेश अध्यक्ष बनाया जा चुका है. अब राष्ट्रीय अध्यक्ष की कुर्सी भी युवा हाथों में चली गई. इसी महीने लोजपा का सदस्यता अभियान और फिर सांगठनिक चुनाव की प्रक्रिया शुरू होने वाली है. माना ये जा रहा था कि सांगठनिक चुनाव के दौरान चिराग पासवान को अध्यक्ष चुना जायेगा. लेकिन अपने गिरते स्वास्थ्य से परेशान रामविलास पासवान ने बीच में ही अध्यक्ष पद छोड़ने का फैसला ले लिया है. सोमवार की रात रामविलास पासवान ने अपने नजदीकी लोगों को इस फैसले की जानकारी दी. इसके बाद चिराग की ताजपोशी करने का फैसला लिया गया और आज राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में चिराग पासवान को राष्ट्रीय अध्यक्ष घोषित कर दिया गया.

भवन से बजरंगबली चौक तक अंग्रेजी बाजा के साथ जुलूस निकाला गया।

इसमें सभी लोजपा कार्यकताओं ने एक-दूसरे को गुलाल लगाकर मुंह मीठा कराया और अपनी खुशी का इजहार किया। अपने सांसद को पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए जाने के बाद युवा वर्ग में विशेष उत्साह देखा जा रहा है। जमुई वासियों को उम्मीद है कि इस नई जिम्मेदारी पर चिराग पासवान अवश्य ही खरे उतरेंगे और जमुई को एक नई ऊंचाई मिलेगी। युवा लोजपा के जमुई जिलाध्यक्ष ई. निर्भय सिंह ने जमुई सांसद चिराग पासवान को पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाये जाने पर शुभकामनाएं दीं और कहा कि युवा नेतृत्व में लोजपा राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान हासिल करेगा। चिराग पासवान ओजस्वी वक्ता होने के साथ-साथ कुशल राजनेता बनकर राष्ट्रीय पटल पर उभरे हैं। उनकी भाषा शैली एवं कार्यशैली से माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी प्रभावित हैं। तभी उन्होंने अपनी कैबिनेट के अन्य सदस्यों को भी चिराग पासवान से सीखने को कहा। चिराग पासवान के नेतृत्व में जमुई लोकसभा क्षेत्र का चौमुखी विकास हुआ है। कई

योजनाएं जो आजादी के बाद से अब तक यहाँ नहीं आ सकी थीं, उन सभी को जमुई लोकसभा क्षेत्र में लाने का काम चिराग पासवान ने किया है। ई. निर्भय ने कहा कि यूँ तो सभी युवा चिराग पासवान के नेतृत्व कौशल के कायल होकर उनके समर्थन में हैं लेकिन अब लोक जनशक्ति पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाये जाने पर पार्टी की ओर युवाओं का झुकाव और बढ़ेगा। चिराग पासवान में सबको साथ लेकर चलने का हुनर है, जो पार्टी को आगे ले जाने में कारगर साबित होगा। इस मौके पर लोजपा जिलाध्यक्ष रुबेन सिंह, युवा लोजपा के जिलाध्यक्ष ई. निर्भय सिंह, दलित सेना के जिलाध्यक्ष रवि शंकर पासवान, दलित सेना के प्रदेश महासचिव सुभाष पासवान, दीपक सिंह, विकास सिंह, शिव शंकर सिंह, बालकरण गुप्ता, रुपेश रावत, रतन दास, सुदेश रावत, गौतम पासवान, दिलीप सिंह, मनोज यादव, हरिनारायण यादव, सूर्य नारायण रावत, बनारसी यादव, हरेराम रावत, रोशन कुमार, गौरव कुमार, अखिलेश पासवान, मिथलेश पासवान, चन्दन सिंह सहित लोजपा के सैंकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

नेशनल एथलेटिक्स चैंपियनशिप में जमुई के दो एथलीट ने बिहार को दिलाया गोल्ड

सुशान्त साईं सुन्दरम

दशकों से नक्सलवाद का धब्बा झेल रहे जमुई ने खेल के क्षेत्र में बिहार की झोली में नवंबर माह में बड़ी उपलब्धि दिलवाई है। 35वें जूनियर नेशनल एथलेटिक्स चैंपियनशिप में बिहार की 34 सदस्यीय टीम में जमुई जिला से 6 एथलीट शामिल किए गए। यह आयोजन 2 से 6 नवंबर तक आंध्र प्रदेश के गुंटूर, विजयवाड़ा में आयोजित हुआ।

इस चैंपियनशिप में जेवलिन थ्रो (भाला फेंक) प्रतिस्पर्धा में अंडर-20 बालिका वर्ग में जमुई की अंजनी कुमारी ने 45.94 मीटर भाला फेंक कर बिहार को गोल्ड मेडल दिलवाया। अंजनी बिहार के जमुई जिला के बरुअट्टा की रहने वाली हैं।

वहीं अंडर-16 जेवलिन थ्रो बालक वर्ग प्रतिस्पर्धा में जमुई के राजकुमार गुप्ता ने 59.23 मीटर भाला फेंककर बिहार के लिए गोल्ड जीता। राजकुमार जमुई जिला के खैरा के रहने वाले हैं।

दोनों ही एथलीट के इस उपलब्धि पर अंजनी एवं राजकुमार के गृह जिले में खुशी का माहौल है। जेवलिन थ्रो के राष्ट्रीय स्तर के एथलीट एवं अंजनी कुमारी व राजकुमार के कोच आशुतोष सिंह सूरज इस प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा कि दोनों ही बच्चे लगन से नियमित प्रैक्टिस करते हैं एवं हमेशा नया करने का प्रयास करते हैं। इस वजह से उन्हें आज यह उपलब्धि हासिल हुई है। शिक्षिका एवं सामाजिक कार्यकर्ता आर्या सिंह ने अंजनी एवं राज कुमार को ऊनी शुभकामनाएं व आशीर्वाद देते हुए कहा कि जमुई जिला प्रतिभाओं की खान है। यहाँ के नौनिहालों में आगे बढ़ने की ललक है। राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण जीतना मामूली बात नहीं है। वह भी तब जब ये बच्चे बेहद कम संसाधनों में तैयारियां करते हैं। अगर पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराई जाए तो पुरस्कारों की संख्या आने वाले समय में बढ़ेगी। बिहार के लिए एक ही दिन में दो गोल्ड मेडल जीतने वाले एथेलीट अंजनी एवं राजकुमार को हरेराम कुमार सिंह, राकेश सिंह तोमर, सुभाष कुमार सिंह, संजीत कुमार, अनुराग सिंह, पंकज सिंह, अतुल सिंह, अपराजिता सिन्हा, मोनालिसा भारती, बिमल कुमार मिश्र, अभिषेक कुमार झा, प्रभात कुमार प्रांजल सहित जिलाभर के लोगों ने अपनी शुभकामनाएं दी हैं।

कभी साधु हाथी और पशु पक्षियों के मेले के रूप में दुनिया में था विख्यात

अब थियेटरों के कारण जुटती है दर्शकों की भीड़

अनूप ना.सिंह

कार्तिक पूर्णिमा के दिन से एक माह तक चलने वाला विश्व विख्यात हरिहर क्षेत्र (सोनपुर मेला)अब अपने अस्तित्व की जद्दोजहद की लड़ाई लड़ रहा है गंगा गंडक के संगम पर हरिहर नाथ बाबा को जल अर्पण करने के साथ इस मेले की शुरूआत होती है मेला कब से लगता है इसका तो कोई प्रमाण नहीं है जानकार बताते हैं कि आजादी के पहले से ही इस मेले का अस्तित्व रहा है. बिहार की राजधानी पटना से महज 15 किलोमीटर की दूरी पर छपरा जिले के सोनपुर में यह मेला लगता है. हाथियों के मेले के रूप में पूरे विश्व में मेले की पहचान थी.ऐतिहासिक गजग्राह युद्ध की भूमि सोनपुर में विश्व प्रसिद्ध सोनपुर मेला अब पशु मेला की जगह थियेटर मेला बन गया है। 2003 में पशु-पक्षियों की बिक्री पर लगी रोक के बाद साल दर साल मेले की रौनक उजड़ती चली गई। कभी आठ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में लगने वाला यह मेला राज्य सरकार की शिथिलता के कारण मात्र दो वर्ग किलोमीटर में सिमट गया है। दो दशक पहले हाजीपुर के कोनहारा घाट से सारण के पहलेजा घाट तक फैले सोनपुर मेला घूमने में पर्यटकों को तीन से चार दिन लग जाते थे। हर साल हजारों विदेश पर्यटक मेला देखने आते थे। अब पांच से छः घंटे में सोनपुर मेला देखने का कोरम पूरा हो जाता है। सिर्फ कार्तिक पूर्णिमा स्नान के लिए बिहार और उत्तर प्रदेश से जुटने वाले लाखों के भीड़ ही इस मेले को एहसास कराती है कि अब भी मेला जिंदा है। पंजाब की गाय-बैल, आसाम और पश्चिम बंगाल की भैंस और उत्तर भारत के कई राज्यों के घोड़े और हाथी से कभी सोनपुर मेला गुलजार होता था। अब सिर्फ सारण जिले के कुछ लोग गाय और घोड़ा का बाजार लगाते हैं। नब्बे के दशक में सोनपुर के बड़े जमींदारों में गिने जाने वाले बच्चा बाबू का घोड़ा, हाथी, शेर, बाघ, पशु-पक्षी सोनपुर मेला के आकर्षण का बड़ा केंद्र होता था।

हाथियों को लेकर कम होता गया क्रेज

सोनपुर मेले में हाथियों की बिक्री बंद होने के बाद कारोबारियों का क्रेज कम होता चला गया। 2007 के मेले में कारोबारी 77 हाथी लेकर मेले में पहुंचे जो 2014 में घटकर 39 हो गया। 2015 में 17, 2016 में 13 और 2017 में सिर्फ तीन हाथी मेले में दिखाई दिए। 2018 में केवल अनंत सिंह की हथिनी मेले में थी।

धीरे-धीरे उजड़ता चला गया बाजार

खेती की बदली शैली और कृषि आधुनिकीकरण (ट्रैक्टर हार्वेस्टर) ने कभी 35 हजार बैल बेचने वाले सोनपुर मेले में अब महज 100 से 150 बैल आ रहे हैं, वह भी सिर्फ कोरम के नाम पर। भैसों की बुकिंग पर रोक से भैंस बाजार भी खत्म सा हो गया है। हाथी की बिक्री बंद होने के बाद स्थानीय लोग दो से तीन हाथी सिर्फ दिखाने के लिए बाजार में रखते हैं। पशु बाजार के नाम पर विख्यात इस मेले में अब सिर्फ गाय, घोड़े और कुत्ते का बाजार लग रहा है।

पिछले दो वर्षों से पर्यावरण एवं वन विभाग की कड़ाई के कारण पक्षियों का बाजार करीब-करीब खत्म हो गया। लुधियाना और दिल्ली से गर्म कपड़े लाकर बेचने वाले ही अब इस बाजार में बच गए हैं। रात में सांस्कृतिक कार्यक्रम के नाम पर थियेटर देखने वालों की भीड़ इस मेले में जुटती है। आज का सोनपुर मेला बस यही है।

सोनपुर मेले के अस्तित्व को बचाने के लिए आवाज उठा रहे विधायक

सारण के सांसद राजीव प्रताप रूढ़ी मेले के अस्तित्व को बचाने के लिए वर्षों से लड़ाई लड़ रहे हैं। उनका मानना है कि अगर सोनपुर को किसानों के प्रशिक्षण का राजस्तरीय केंद्र, कृषि उपकरणों का राष्ट्र स्तरीय बाजार और एग्रोप्रोसेस्ड इंडस्ट्री का केंद्र बनाया जाए तो फिर से सोनपुर मेला अपने ऐतिहासिक मुकाम पर पहुंच सकता है। वो सोनपुर मेला को ऑटोमोबाइल बाजार का भी केंद्र बनाने के पक्षधर हैं। चूंकि, बिहार की 75 से 80 फीसदी आबादी कृषि से जुड़ी हुई है और बिहार के आम, लीची, मकई, मखाना, केला पूरे देश में प्रसिद्ध हैं ऐसे में सोनपुर मेला को कृषि से जुड़ी उत्पादों का बाजार बनाया जाए तो सोनपुर मेला फिर से गुलजार हो उठेगा।

तवायफो के तंबू से थिएटर तक

आजादी के पहले इस मेले में राजवाड़ो और जमींदारों के तरफ से तवायफो के तंबू लगाए जाते थे जिनकी तरफ से सबसे ज्यादा तंबू लगाए जाते थे उन्हें उस जमाने का सबसे बड़ा रईस माना जाता था कालांतर में तवायफ की तंबू की जगह थिएटर मंडलियों ने स्थान ले लिया बाद में इसका रूप और विद्रुप होता चला गया.

बिहार का एक ऐतिहासिक मंदिर

मोहम्मद गजनी कई कोशिशों के बाद भी नहीं तोड़ पाया था

बिहार के बक्सर जिले के ब्रह्मपुर बाबा ब्रह्मेश्वर नाथ का मंदिर है। मुस्लिम शासक मोहम्मद गजनी ब्रह्मपुर आया था। यहां के लोगों ने गजनी से अनुरोध किया कि इस शिव मंदिर को नहीं तोड़े नहीं तो बाबा उसका विनाश कर देंगे।

इसी बात को लेकर गजनी ने बाबा ब्रह्मेश्वर को चैलेंज किया था। लेकिन भगवान का चमत्कार देख वह वापस लौट गया था। सन 1030 से 1040 के बीच भारत के बड़े भू-भाग पर मुस्लिम शासक मोहम्मद गजनी का राज था।वह जहां भी हमला करता वहां के मंदिरों को तोड़ देता था। गजनी जब ब्रह्मपुर पहुंचा तो लोगों ने उसे चेतावनी दी कि अगर वह मंदिर तोड़ेगा तो बाबा ब्रह्मेश्वर नाथ की तीसरी आंख उसका विनाश कर देगी। गजनी ने कहा कि ऐसे कोई देवता नहीं हैं। अगर हैं, तो मंदिर का प्रवेश द्वार जो पूरब दिशा में है वह रात भर में पश्चिम की ओर हो जाएगा? अगर ऐसा होता है तो वह मंदिर को छोड़ देगा और कभी मंदिर के पास नहीं आएगा।

अगले दिन गजनी जब मंदिर का विनाश करने आया तो दंग रह गया। उसने देखा कि मंदिर का प्रवेश द्वार पश्चिम की तरफ हो गया है। इसके बाद वह वहां से हमेशा के लिए चला गया।

कहा जाता है कि जो भी दरबार में आता है बाबा उसकी मनोकामना पूरी करते हैं। यही कारण है कि हजारों लोग दर्शन के लिए यहां पर आते हैं। यहां आपने आप निकले ब्रह्मेश्वर शिवलिंग का दर्शन होता है।

ब्रह्मेश्वर शिव मंदिर का गर्भगृह बहुत बड़ा है। बहुत कम जगहों पर इतना बड़ा गर्भगृह दिखता है। मंदिर में प्रवेश करते ही आध्यात्मिक ऊर्जा का एहसास होता है। कहा जाता है कि मंदिर की सफाई करने वाले कुष्ट रोगी भी बाबा की कृपा से ठीक हो जाते हैं।

ब्रह्मपुर धार्मिक पर्यटन का लोकप्रिय केंद्र है। बिहार, यूपी और झारखंड के साथ-साथ कई दूसरे राज्यों के लोग बाबा के दर्शन के लिए आते हैं। लगन के समय यहां बहुत भीड़ होती है, जितने भी धर्मशाला हैं सभी बुक रहता हैं।

मंदिर के पास बहुत बड़ा तालाब है। यह तालाब कब बना स्पष्ट नहीं है। इस तालाब की खास बात यह है कि इसमें सालों भर पानी रहता है। मंदिर में पूजा करने वाले लोग यहां स्नान करते हैं।

प्रशासनिक लापरवाही के कारण तालाब की सफाई नहीं हो पाती है, जिसके कारण तालाब का पानी हरा हो गया है। इस तालाब से मंदिर की खूबसूरती बढ़ जाती है।

मंदिर के पुजारी डमरू पांडेय कहते हैं कि पहले बाढ़ के समय गंगा का पानी मंदिर के पास आ जाता था, जिससे तालाब भर जाता था। कई जगहों पर बांध बनने से अब गंगा मंदिर तक नहीं आ पाती हैं।

ब्रह्मपुर के लोग के द्वारा विश्व प्रशिद्ध मवेशियों का मेला लगता है ऐसा कहा जाता है की सोनपुर के बाद यह एशिया का दूसरा सबसे बड़ा मेला है जहाँ पर उत्तर प्रदेश और बिहार के किसान अपने खेती बारी के उदेश्य से मवेशियों की खरीद बिक्री का काम करते है।

यह मेला पुरे साल में एक बार लगता है. जो की फाल्गुन के महीने में लगता है।

जानिए कौन है डॉक्टर विजय राज सिंह

अनूप नारायण सिंह

छपरा जिले के एकमा प्रखंड के सरयूपार गांव के एक गरीब किसान परिवार में जन्म लेने वाले डा. विजयराज सिंह आज बिहार के श्रेष्ठ चिकित्सको में शुमार है. भूख गरीबी काफी करीब से देखने वाले डा सिंह ने बड़े पैकेज वाले नौकरी करने अपेक्षा बिहार को ही अपना कार्य क्षेत्र बनाया . दो दशकों में इन्होंने हजारो गरीबों के सपने ही नहीं पूरे किए हमें दी आशा की एक किरण. डॉ विजय पाल सिंह बिहार के ख्याति प्राप्त चिकित्सक होने के साथ ही साथ बहुयामी व्यक्तित्व के स्वामी जी भी है. ये अखिल भारतीय क्षत्रिय महा सभा के बिहार के प्रदेश अध्यक्ष हैं साथ ही साथ ग्लोबल राज प्रोडक्शन हाउस के माध्यम से इन्होंने एक साथ छह भोजपुरी फिल्मों के निर्माण की प्रक्रिया भी प्रारंभ की है जिसमें से एक फिल्म सच्चाई हमार जिंदगी बनकर तैयार है जिसका प्रदर्शन इस वर्ष ही होना है. पटना के गोला रोड में इनका अस्पताल राज ट्रामा सेंटर चौबीसों घंटे गरीब असहाय मरीजों की सेवा के लिए तत्पर रहता है .अस्पताल में एक साथ 60 से ज्यादा चिकित्सक जुड़े हुए हैं .यहां गंभीर रोगों के इलाज के साथ ही साथ सामान्य रोगों का भी सुचारू पूर्ण ढंग से इलाज होता है. शिक्षा के क्षेत्र में गरीब और ग्रामीण परिवेश के छात्रों को आधुनिक शिक्षा देने के लिए डॉक्टर विजय राज सिंह ने बिहार के हाजीपुर में शांतिनिकेतन नाम से सीबीएसई से संबद्ध 12वीं तक मान्यता प्राप्त विद्यालय की स्थापना की है .फिलहाल इस विद्यालय में 5000 छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं. बिहार के औरंगाबाद में एक भव्य मंदिर का निर्माण भी डॉक्टर विजय राज जी करवा रहे है.जो अपने निर्माण काल से ही चर्चा केंद्र बिंदु में है .इसके निर्माण पर अब तक एक करोड़ से ज्यादा की राशि खर्च हो चुका है . मंदिर के निर्माण में में सहयोग कर सराहनीय कार्य किया है. प्रतिवर्ष दर्जनों गरीब कन्याओं का विवाह करवाना ,सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना भी इनकी आदतों में शुमार है.बातचीत के क्रम मे इन्होने बताया कि उन्होंने गरीबी भूखा अभाव काफी नजदीक से देखा है.उन्होंने खुद के बल पर समाज को आगे बढ़ाने का प्रण कर रखा हैं इसी जज्बे के साथ अपनी ग्लोबल राज ग्रुप ऑफ कंपनी बनाकर चिकित्सा शिक्षा फिल्म निर्माण व विविध क्षेत्र में कार्य करना प्रारंभ किया है. साथ ही साथ में हजारों नौजवानों को रोजगार प्रदान किया है. राजनीति में आने के सवाल पर वे कहते हैं कि अगर आप की नीति सही है तो आप राजनीति में है.सभी दलों में उनके चाहने वाले लोग हैं और सभी दलों के राजनेताओं से वे संबंध रखते हैं .खुद राष्ट्रवादी हैं धार्मिक अनुष्ठानों में भी भाग लेते हैं सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं क्षत्रिय समाज से आते हैं इस कारण समाज के उत्थान के लिए कार्य करते हैं .एक सवाल के जवाब में उन्होंने बताया की हॉस्पिटल स्कूल फिल्म प्रोडक्शन व अन्य 15 इकाइयों के द्वारा प्रतिदिन जो आय होती है उसका 10 फिसदी हिस्सा वे समाज कल्याण के लिए निकालकर अलग रख देते है समाज के उत्थान के लिए सामाजिक कार्य करने वाले लोगों के लिए उनका दरवाजा चौबीस घंटे खुला रहता है .भोजपुरी भाषा में फिल्म निर्माण के क्षेत्र में धमाके के साथ उतरने के सवाल पर उन्होंने कहा कि भोजपुरी दुनिया की सबसे मीठी भाषा है पर कुछ लोग इस भाषा को बदनाम करने और अश्लीलता का पर्याय बनाने में लगे हुए इसी कारण उन्होंने काफी सोच समझ के भोजपुरी फिल्म निर्माण के क्षेत्र में पदार्पण किया है.सच्चाई हमार जिंदगी पहली फिल्म है इसके बाद लगातार बैक टू बैक पांच फिल्मों का निर्माण होना है.

सारण के सपूत शैलेश कुमार सिंह

व्यवसाय समाज सेवा राजनीति के साथ ही अब फिल्म निर्माण के क्षेत्र में उतरे शैलेश किसी परिचय पहचान के मोहताज नहीं .मूल रूप से बिहार के छपरा जिला के बनियापुर सहाजितपुर इलाके के पिपरा गांव के निवासी शैलेश कुमार सिंह ने बहुत ही अल्प समय में अपने दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्मबल के बल पर समाज सेवा राजनीति व्यवसाय फिल्म निर्माण के क्षेत्र में अपनी एक उत्कृष्ट छवि बनाई है बनियापुर विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के टिकट पर विधानसभा का चुनाव लड़ चुके शैलेश राजनीति को समाज सेवा का एक अंग मानते है उनका कहना है कि जब तक राजनीति में स्वच्छ छवि के लोग नहीं आएंगे लोकतंत्र की आत्मा लोक में नहीं बचेगी बनियापुर विधानसभा क्षेत्र में विगत डेढ़ दशकों से लोगों के सुख-दुख के साथी बने शैलेश भूख गरीबी अंधविश्वास ऊंच नीच जात पात जैसे रूढियों को सामाजिक जागृति के बल पर तोड़ने में तो लगे ही हैं इलाके के युवाओं को स्वरोजगार कैसे मिले यह भी इनके जेहन में चल रहा है. शैलेश कहते हैं कि जन सेवा के लिए आपके पास पद हो यह जरूरी नहीं अगर आप इस देश के जागरूक नागरिक और जन समस्याओं के प्रति सजग हैं जो जनता आपको अपना नेता मानने को तैयार इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर बनियापुर विधानसभा क्षेत्र के गांव गांव तक इन्होंने अपने यूथ फोरम की स्थापना की है साथ ही साथ सड़क बिजली पानी शिक्षा स्वास्थ्य अपराध नियंत्रण नशाखोरी पर विराम जैसे मुद्दों को लेकर व्यापक पैमाने पर जन जागरण अभियान चला रहे हैं

गणितज्ञ एमके झा को मिला ग्लोबल एक्सीलेंस अवार्ड 2019

अनूप नारायण सिंह

ग्लोबल एक्सीलेंस अवार्ड 2019 से सम्मानित हुए बिहार के चर्चित गणितज्ञ व झा क्लासेज के प्रबंध निदेशक गणित के जादूगर एमके झा बधाइयों का लगा तांता मुंबई के ग्रांड हयात होटल में आयोजित भव्य कार्यक्रम में बॉलीवुड स्टार माधुरी दीक्षित ने किया सम्मानित. एम के झा को बधाई देने वाले में गुरु डॉक्टर एम रहमान मुन्ना जी भीम सिंह विपिन कुमार सिन्हा पुष्पराज डॉ विजय राज सिंह शैलेश कुमार सिंह भूषण कुमार सिंह बबलू अनूप नारायण सिंह एवं अरनव मीडिया के सभी सहकर्मी शामिल है.अपने अदम्य साहस और आत्मबल के सहारे गणित के जादूगर के रूप में विख्यात चर्चित शिक्षक एमके झा बिहार के श्रेष्ठ शिक्षकों में शामिल हैं जिनसे पढ़ने की तमन्ना लिए हजारों छात्र पटना आते हैं. प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के सर्वश्रेष्ठ संस्थान के रूप में इनका झा क्लासेज आज बिहार में स्थापित है बिहार की राजधानी पटना प्रारंभिक काल से ही शिक्षा के केंद्र बिंदु रही यहां के शिक्षकों का डंका पूरे देश ही नहीं विदेशों तक मे बजता आ रहा है. इसी पटना के नया टोला सेंट्रल बैंक बिल्डिंग के द्वितीय तल पर संचालित होता है झा क्लासेज.

जहां हजारों की तादाद में छात्र विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के लिए गणित पढ़ने इनके पास आते हैं .मूल रूप से ग्राम शाहपुर पंडोल जिला मधुबनी के निवासी एमके झा के पिता श्री तारा कांत झा व्यवसाय मे थे।एककृत बिहार में बोकारो में स्कूली शिक्षा आदर्श मध्य विद्यालय चास बोकारो से तथा दसवीं की शिक्षा राम रूद्र हाई स्कूल जोधाडीह मोड़ बोकारो से हुई 1986 में इन्होंने मारवाड़ी कॉलेज रांची से इंटर की परीक्षा और 1989 में रांची कॉलेज से गणित प्रतिष्ठा में स्नातक की डिग्री ली पढ़ाई समाप्त होने के बाद प्रतियोगिता परीक्षाओं में लगे सर्वप्रथम इनका चयन पटना के एलएन मिश्रा संस्थान के लिए हुआ लेकिन इन्होंने एडमिशन नहीं लिया तत्पश्चात असिस्टेंट स्टेशन मास्टर के रूप में मुंबई रेलवे के लिए चयनित हुए उन्होंने वहां भी ज्वाइन नही किया. उसके बाद असिस्टेंट स्टेशन मास्टर के तौर पर महेंद्र रेलवे बोर्ड के लिए भी चयनित हुए लेकिन इनके मन में बचपन से ही लीक से अलग कुछ कर गुजरने की चाहत थी. जो ज्ञान इनके पास है छात्रों के बीच बांटा जाए तो बिहार से हजारों की तादाद में छात्र विभिन्न सरकारी नौकरियों के लिए चयनित हो सकते हैं. इस जज्बे के साथ 25 वर्षों से छात्रों को पढ़ाने वाले एम के झा के10 हजार से ज्यादा छात्र विभिन्न सरकारी नौकरियों में उच्च पदों तक आसिन है. 1996 में महेंद्रु पोस्ट ऑफिस के पास 4 बच्चों से अपने संस्थान की शुरूआत करने वाले झा वर्ष 1998 में बिहार के प्रतिष्ठित करतार कोचिंग से जुड़े गणित पढ़ाने की कला के कारण छात्रों की भीड़ खिंची चली आती थी .वर्ष 2000 से 2011 तक पटना के गोपाल मार्केट में इन्होंने छात्रों को पढ़ाया तत्पश्चात वर्ष 2012 में करतार कोचिंग छोड़कर इन्होंने खुद का झा क्लासेस नाम से नया टोला सेंट्रल बैंक बिल्डिंग के द्वितीय तल पर अपने संस्थान की स्थापना की. खुद का संस्थान होने के बाद छात्रों से सीधा संवाद कुछ ज्यादा ही होने लगा भीड़ बढ़ने लगी सफलता मिलने लगी और झा क्लासेस बिहार का प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान बन गया. गणित के जादूगर के रूप में प्रसिद्ध एमके झा की प्रसिद्धि आज की तारीख में इतनी है कि विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए तैयारी करने वाले पटना आने वाले छात्र इनके संस्थान में गणित पढ़ना नहीं भुलते. आज भी निर्धन विकलांग छात्रों को उनके संस्थान में नाममात्र के शुल्क पर शिक्षा दी जाती है. इनके संस्थान में लाइव वीडियो क्लासेज की व्यवस्था भी है. सफलता की कहानी इनकी धर्मपत्नी बबीता झा के बिना अधूरी है 25 वर्षों के पढ़ाने के अभियान मे इनका योगदान काफी बेहतर है.संस्थान का प्रबंध ये संभालती ही है साथ ही साथ तथ्यात्मक जरूरतों को भी पूरा करती हैं .उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने वाली बबीता झा छात्रों के आर्थिक स्थिति को देखते हुए उनके लिए आर्थिक आधार पर भी काफी सहूलियत की व्यवस्था करती हैं .इनके संस्थान में पढ़ने वाले छात्र कहते हैं इनके पढ़ाने की तकनीक काफी अलग है जिस कारण से गणित जैसे कठिन विषय भी छात्रों को कंठस्थ हो जाते हैं. जिस तकनीक से पढ़ाते हैं .उसके कारण विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं में गणित के प्रश्न हल करना काफी आसान हो जाता है .इसी कारण छात्रों की दिली तमन्ना रहती है कि वह झा क्लासेज मे जरूर पढ़े. विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित गणित के जादूगर एमके झा को दिल्ली के उपमुख्यमंत्री व शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया पूर्व सीबीआई डायरेक्टर जोगिंदर सिंह तथा देश के प्रतिष्ठित मासिक पत्रिका आउटलुक ने श्रेष्ठअवार्ड से भी सम्मानित किया है. बातचीत के क्रम में उन्होने बताया कि पढ़ने पढ़ाने के अलावा वे कुछ भी नहीं सोचते हैं उन्हें लगता है कि छात्रों के अंदर सब कुछ है बस उसे परोसने की कला सीखनी है. गणित के बारे में छात्रों के दिमाग में बचपन से ही बैठा दिया जाता है कि कठिन है लेकिन तकनीक के माध्यम से पढ़ाते है जिससे छात्रों को लगता है कि अन्य विषय से गणित के सवालों को हल करना काफी आसान है।

समस्तीपुर में सीएम नीतीश ने किया मेडिकल कॉलेज का उद्घाटन, उपमुख्यमंत्री भी रहे मौजूद

समस्तीपुर में सरायरंजन प्रखंड के नरघोघी में मुख्यमंत्री नीतीश ने श्रीराम जानकी मेडिकल कॉलेज का शिलान्यास कर दिया है। डेढ़ साल पहले नीतीश सरकार ने समस्तीपुर में मेडिकल कॉलेज के निर्माण की स्वीकृति दी थी। इसके लिए 21 एकड़ जमीन श्रीराम जानकी मठ द्वारा उपलब्ध कराई गई है।शिलान्यास कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी, विधानसभा अध्यक्ष विजय कुमार चौधरी, स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय, स्थानीय सांसद प्रिंस राज, राजसभा सदस्य रामनाथ ठाकुर व अन्य मौजूद रहे।आपको बता दें कि केंद्र प्रायोजित योजना के तहत श्रीराम जानकी चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल का निर्माण प्रस्तावित है। सरायरंजन प्रखंड में 21 एकड़ भूखंड पर 591.77 करोड़ की लागत से निर्माण कार्य होना है। इसमें केंद्र का अंश 113.40 करोड़ है। जबकि, राज्यांश 478.37 करोड़ है। इस मेडिकल कॉलेज को बनवाने में पूर्व वित्त मंत्री स्व. अरुण जेटली ने बहुत प्रयास किया था।मेडिकल कॉलेज के उद्घाटन के मौके पर समस्तीपुर के नवीन सांसद प्रिंस राज ने कहा कि अब लोगों को इलाज के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा। केंद्र और राज्य सरकार गरीबों की हितैषी है। पीएम नरेंद्र मोदी और सीएम मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में देश और राज्य का विकास हो रहा। इस मेडिकल कॉलेज के स्थान चयन के विरोध में राष्ट्रीय जनता दल के समस्तीपुर विधायक अख्तरुल इस्लाम साहिन विरोह्लध प्रदर्शह्लन कर रहे हैं।

पुलिस को नहीं मिल रहा अनंत सिंह के खिलाफ गवाह, पुलिस खुद देगी गवाही

पुलिस की गवाही का कोई मतलब नहीं

मोकामा के निर्दलीय बाहुबली विधायक अनंत सिंह पर पुलिस पूरी तरह से शिकंजा कसने की तैयारी में जुट गई है. लेकिन उसके सामने सबसे बड़ी समस्या अनंत सिंह के खिलाफ गवाह जुटाना है.पुलिस को नहीं मिल रहा अनंत सिंह के खिलाफ गवाह, पुलिस खुद देगी गवाही. मोकामा के निर्दलीय बाहुबली विधायक अनंत सिंह पर पुलिस पूरी तरह से शिकंजा कसने की तैयारी में जुट गई है. लेकिन उसके सामने सबसे बड़ी समस्या अनंत सिंह के खिलाफ गवाह जुटाना है. अनंत सिंह के पैतृक गांव नदवां के घर से मिले एके-47 और हेंड ग्रेनेड मामले में पुलिस ने चार्जशीट दाखिल कर दिया है. लेकिन इस मामले में अनंत सिंह के खिलाफ गवाही देने के लिए कोई तैयार नहीं है. पटना पुलिस अनंत सिंह के मामले का स्पीडी ट्रायल करवाना चाहती हैं. पुलिस ने जो चार्जशीट दाखिल किया है उसके साथ कई साक्ष्य भी संलग्न किया है. साक्ष्य के तौर पर पुलिस ने एफएसएल रिपोर्ट, अनंत सिंह और लल्लू मुखिया और रणवीर यादव का बयान का पूरा ब्यौरा दिया है. साक्ष्य के तौर पर` अनंत सिंह का पुराना वीडियो भी दिया गया है. यह विडियो कई साल पुराना है.इस पुराने वीडियो में अनंत सिंह किसी को एके-47 रायफल देते हुए दिख रहे हैं. पटना पुलिस कई साल पुराने वीडियो के आधार पर अनंत सिंह को नए मामले में सजा दिलाने की कोशिश में है.

एसएसपी की कुर्सी संभालते ही इस आईपीएस को करना पड़ा एनकाउंटर, लुटेरों को खदेड़ कर दबोचा

मामला बिहार के मुजफ्फरपुर से जुड़ा है जहां शनिवार की रात पुलिस की लुटेरों से मुठभेड़ हुई. इस दौरान दोनों तरफ से कई राउंड फायरिंग हुई. मुजफ्फरपुर. जिले के एसएसपी की कमान संभालते ही जयंतकांत की बाइक लुटेरों के साथ मुठभेड़ हो गई, हालांकि एसएसपी जयंतकांत ने अपना जलवा बरकरार रखा और खदेड़ कर दो बाइक लुटेरों को पिस्टल और लूटी गई बाइक के साथ गिरफ्तार कर लिया. इस दौरान दोनों ओर से कई राउंड फायरिंग भी हुई. घटना जिले के मोतीपुर थाना और पानापुर ओपी के बीच की है

युवक से लूटी थी बाइक और कैश

दरअसल साहेबगंज प्रखंड के कंप्यूटर ऑपरेटर सोनू अपने घर शिवाईपट्टी लौट रहे थे. शनिवार की शाम को मोतीपुर थाना इलाके के रतनपुरा के पास बाइक सवार अपराधियों ने एनएच 28 पर पिस्टल की नोक पर सोनू की बुलेट बाइक छीन ली इसके अलावा □10000 और मोबाइल भी लूट लिए. अपराधी उसके बाद कांटी की ओर फरार हो गए. शनिवार को जिले की कमान थामने के बाद एसएसपी जयंत कांत पश्चिमी इलाके में क्षेत्र भ्रमण पर थे तभी एसएसपी को इस घटना की सूचना मिली.

गश्त के दौरान एसएसपी को मिली सूचना

एसएसपी ने दलबल के साथ लुटेरों के भागने के रूप में पीछा किया और कुछ देर बाद ही लुटेरों को ट्रैक कर लिया. पुलिस की गाड़ी देख लुटेरों ने फायरिंग कर दी लेकिन इससे घबराने के बजाय टीम जयंतकांत ने अपराधियों को ललकार लिया और उनकी ओर भी फायरिंग खोल दी. पुलिस टीम ने खदेड़ कर भाग रहे अपराधी की बाइक में ठोकर मार कर गिरा दिया और एक अपराधी को पिस्टल के साथ गिरफ्तार कर लिया .

एनकाउंटर के दौरान पकड़ा गया अपराधी

पुलिस ने इस घटना को अंजाम देने वाले एक अपराधी को पकड़ा. उसकी निशानदेही पर एक दूसरा अपराधी भी पकड़ा गया. उसके पास से लूटी गई बाइक भी बरामद कर ली गई है. इस मामले में एसएसपी ने दोनों ओर से फायरिंग की पुष्टि की है. उनका कहना है कि पकड़े गए लुटेरे पुलिस कड़ाई से पूछताछ कर रही है. पश्चिमी इलाके में रोड पर लूटपाट करने वाले अपराधियों के पूरे गिरोह को जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा.

पटना में खुला शुक्रिया वशिष्ठ महान गणितज्ञ वशिष्ठ नारायण सिंह के सानिध्य में चलेगा यह संस्थान

अनूप नारायण सिंह

महान गणितज्ञ वशिष्ठ नारायण सिंह को गुमनामी के गर्द गुब्बारों से निकाल कर समाज के मुख्यधारा से जोड़ने के लिए बिहार के कुछ साहसी युवाओं ने उनके नाम से शुक्रिया वशिष्ठ नामक एक संस्थान की शुरूआत की है जिसका शुभारंभ गणितज्ञ वशिष्ठ नारायण सिंह के हाथो किया गया. पटना के आशियाना नगर अभियंता नगर ए/6 में शुक्रिया वशिष्ठ संस्थान का कार्यालय खोला गया है जहां वशिष्ठ नारायण सिंह के ज्ञान विज्ञान को आमजन तक पहुंचाने के लिए एक विशेष अभियान की शुभारंभ की गई है।शुक्रिया वशिष्ठ संस्थान के प्रबंध निदेशक हैं गणितज्ञ वशिष्ठ नारायण सिंह के भतीजे मुकेश कुमार सिंह जबकि इसके सचिव हैं पटना ग्रीन हाउसिंग के प्रबंध निदेशक भूषण कुमार सिंह बबलू इस संस्थान में प्रति वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता परीक्षा का आयोजन कर 40 मेधावी छात्रों को शुक्रिया वशिष्ठ कार्यक्रम के तहत चयनित कर उनके निशुल्क शिक्षा आवास और भोजन की व्यवस्था की जाएगी संस्थान के द्वारा मेडिकल व इंजीनियरिंग के प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी कराई जाएगी. ट्रस्टी भूषण कुमार सिंह बबलू ने बताया कि सीमित संसाधनों के बावजूद हौसले बुलंद है प्रारंभ में 50 छात्रों का लक्ष्य रखा गया है धीरे-धीरे संसाधन बढ़ने पर इस तदाद को बढ़ाया जाएगा .वशिष्ठ नारायण सिंह बिहार की धरोहर है सरकारी उपेक्षा के कारण गुमनामी का जीवन जी रहे इस महान विभूति से बिहारी अस्मिता की पहचान जुड़ी हुई है पूरी दुनिया इनके प्रतिभा का लोहा मानती है पर घर में ही उपेक्षित हैं इसी कारण इस महान विभूति के ज्ञान विज्ञान को आमजन तक पहुंचाने के लिए उनके भतीजे मुकेश कुमार सिंह के साथ मिलकर उन्होंने शुक्रिया वशिष्ठ नामक संस्थान की शुरूआत की है. उन्होंने बताया कि यह संस्थान पूरी तरह से गैर वित्तीय संस्थान होगा जहां किसी भी छात्र से ₹1 का भी अनुदान नहीं लिया जाएगा पूरी व्यवस्था वे खुद कर रहे हैं. आयोजित उद्घाटन सत्र में बिहार राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष श्रीमती दिल मणि मिश्रा वशिष्ठ बाबू के भाई राम अयोध्या सिंह अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा बिहार प्रदेश अध्यक्ष डा विजय राज सिंह समाजसेवी शैलेश कुमार सिंह संतोष कुमार मिश्रा सारण हेल्पलाइन के अनूप नारायण सिंह समाजसेवी विकास चंद्र गुड्डू बाबा प्रोफेसर बीके सिंह अदम्या अदिति अदम्या अदिति गुरूकुल के गुरू डा एम रहमान मुन्नाजी रजनीश राजपूत समेत कई गणमान्य उपस्थित थे.

धार्मिक एकता की अनूठी मिसाल है पटना वाले गुरु डॉक्टर एम रहमान

वेद कुरान के ज्ञाता महज □11 की गुरु दक्षिणा में हजारों छात्रों को विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता दिला चुके पटना के नया टोला गोपाल मार्केट में अदम्या अदिति गुरुकुल चलाने वाले गुरु डॉक्टर एम रहमान धार्मिक एकता की अनूठी मिसाल है. अयोध्या मामले पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत करते हुए डॉक्टर एम रहमान ने कहा कि भारत की आत्मा भारत के संविधान में बसती है हम लोग गंगा जमुना तहजीब के लोग हैं हमने कभी भी देश से इतर कुछ नहीं सोचा है सुप्रीम कोर्ट का जो फैसला आया है उसका हम सभी सम्मान करते हैं गुरु रहमान विगत एक सप्ताह से 50,000 से ज्यादा छात्र छात्राओं और युवाओं को यह शपथ दिला चुके हैं कि सुप्रीम कोर्ट का जो भी फैसला हो उसका सम्मान करना है समाज में नफरत फैलाने वाले लोगों को रोकना है और समाज में एकता बनाए रखना है.आज एक टेलीविजन शो में अपना पक्ष रखते हुए उन्होंने कहा की सोशल मीडिया से लेकर सार्वजनिक जगहों पर भी अब इस मुद्दे पर चर्चा नहीं होनी चाहिए जो फैसला आया है वह देश हित में है और देश के नागरिक इस फैसले का स्वागत करते हैं।

महायोगी आचार्य महाप्रज्ञ की विलक्षण जीवनगाथा

सदियों से भारत वर्ष की यह पावन धरा ज्ञानी-ध्यानी, ऋषि-मुनियों एवं सिद्ध साधक संतों द्वारा चलायी गई उस संस्कृति की पोषक रही है, जिसमें भौतिक सुख के साथ-साथ आध्यात्मिक आनंद की भागीरथी भी प्रवाहित होती रही है। संबुद्ध महापुरुषों ने, साधु-संतों ने समाधि के स्वाद को चखा और उस अमृत रस को समस्त संसार में बांटा। कहीं बुद्ध बोधि वृक्ष तले बैठकर करुणा का उजियारा बांट रहे थे, तो कहीं महावीर अहिंसा का पाठ पढ़ा रहे थे। यही नहीं नानकदेव जैसे संबुद्ध लोग मुक्ति की मंजिल तक ले जाने वाले मील के पत्थर बने। यह वह देश है, जहां वेद का आदिघोष हुआ, युद्ध के मैदान में भी गीता गाई गयी, वहीं कपिल, कणाद, गौतम आदि ऋषि-मुनियों ने अवतरित होकर मानव जाति को अंधकार से प्रकाश पथ पर अग्रसर किया। यह देश योग दर्शन के महान आचार्य पतंजलि का देश है, जिन्होंने पतंजलि योगसूत्र रचा। हमारे देश के महापुरुषों से आए अतिथियों का भी उदारता से सम्मान किया। हमने हर संस्कृति से सीखा, हर संस्कृति को सिखाया। प्राचीन समय से लेकर आधुनिक समय तक अनेकों साधकों, आचार्यों, मनीषियों, दार्शनिकों, ऋषियों ने अपने मूल्यवान अवदानों से भारत की आध्यात्मिक परम्परा को समृद्ध किया है, उनमें प्रमुख नाम रहा है झ आचार्य महाप्रज्ञ। वे ईश्वर के सच्चे दूत थे, जिन्होंने जीवनमूल्यों से प्रतिबद्ध एक आदर्श समाज रचना का साकार किया है, वे ऐसे क्रांतद्रष्टा धर्मगुरु थे, जिन्होंने देश की नैतिक आत्मा को जागृत करने का भगीरथ प्रयत्न किया। वे एक अनूठे एवं गहन साधक थे, जिन्होंने जन-जन को स्वयं से स्वयं के साक्षात्कार की क्षमता प्रदत्त की। वे ऊर्जा का एक पूंज थे, प्रतिभा एवं पुरुषार्थ का पर्याय थे। इन सब विशेषताओं और विलक्षणताओं के बावजूद उनमें तनिक भी अहंकार नहीं था। पश्चिमी विचारक जी. के चर्स्टटन लिखते हैं-ह्यदेवदूत इसलिए आकाश में उड़ पाते हैं कि वे अपनी महानता को लादे नहीं फिरते।ह्ल

आचार्य महाप्रज्ञ को हम बीसवीं एवं इक्कीसवीं सदी के एक ऐसी आलोकधर्मी परंपरा का विस्तार कह सकते हैं, जिस परंपरा को महावीर, बुद्ध, गांधी और आचार्य तुलसी ने आलोकित किया है। अतीत की यह आलोकधर्मी परंपरा धुंधली होने लगी, इस धुंधली होती परंपरा को आचार्य महाप्रज्ञ ने एक नई दृष्टि प्रदान की थी। इस नई दृष्टि ने एक नए मनुष्य का, एक नए जगत का, एक नए युग का सूत्रपात किया था। इस सूत्रपात का आधार आचार्य महाप्रज्ञ ने जहाँ अतीत की यादों को बनाया, वहीं उनका वर्तमान का पुरुषार्थ और भविष्य के सपने भी इसमें योगभूत बने। प्रेक्षाध्यान की कला और एक नए मनुष्यफ्आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व के

जीवन-दर्शन को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए वे प्रयत्नशील थे। उनके इन प्रयत्नों में न केवल भारत देश के लोग बल्कि पश्चिमी राष्ट्रों के लोग भी जीवन के गहरे रहस्यों को जानने और समझने के लिए उनके इर्द-गिर्द देखे गये थे। आचार्य महाप्रज्ञ ने उन्हें बताया कि ध्यान ही जीवन में सार्थकता के फूलों को खिलाने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है।

अपने समय के महान दार्शनिक, धर्मगुरु, संत एवं मनीषी के रूप में जिनका नाम अत्यंत आदर एवं गौरव के साथ लिया जाता है। वे बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध एवं इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ के ऐसे पावन एवं विलक्षण अस्तित्व थे जिन्होंने युग के कैनवास पर नए सपने उतारे। वे व्यक्ति नहीं, संपूर्ण संस्कृति थे। दर्शन थे, इतिहास थे, विज्ञान थे। आपका व्यक्तित्व अनगिन विलक्षणताओं का दस्तावेज रहा है। तपस्विता, यशस्विता और मनस्विता आपके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व में घुले-मिले तत्त्व थे, जिन्हें कभी अलग नहीं देखा जा सकता। आपकी विचार दृष्टि से सृष्टि का कोई भी कोना, कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा। विस्तृत ललाट, करुणामय नेत्र तथा ओजस्वी वाणीफ्ये थे आपकी प्रथम दर्शन में होने वाली बाह्य पहचान। आपका पवित्र जीवन, पारदर्शी व्यक्तित्व और उम्दा चरित्र हर किसी को अभिभूत कर देता था, अपनत्व के घेरे में बाँध लेता था। आपकी आंतरिक पहचान थीफ्अंतःकरण में उमड़ता हुआ करुणा का सागर, सौम्यता और पवित्रता से भरा आपका कोमल हृदय। इन चुंबकीय विशेषताओं के कारण आपके संपर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति आपकी अलौकिकता से अभिभूत हो जाता था और वह बोल उठता थाफ्कितना अद्भुत! कितना विलक्षण!! कितना विरल!!! आपकी मेधा के हिमालय से प्रज्ञा के तथा हृदय के मंदरांचल से अनहद प्रेम और नम्रता के असंख्य झरने निरंतर बहते रहते थे। इसका मूल उद्गम केंद्र थाफ्लक्ष्य के प्रति तथा अपने परम गुरु आचार्य तुलसी के प्रति समर्पण भाव।

आचार्य महाप्रज्ञ ने मानव चेतना के विकास के हर पहलू को उजागर किया। कृष्ण, महावीर, बुद्ध, जीसस के साथ ही साथ भारतीय अध्यात्म आकाश के अनेक संतोंफ्आदि शंकराचार्य, कबीर, नानक, रैदास, मीरा आदि की परंपरा से ऐसे जीवन मूल्यों को चुन-चुनकर युग की त्रासदी एवं उसकी चुनौतियों को समाहित करने का अनूठा कार्य उन्होंने किया। जीवन का ऐसा कोई भी आयाम नहीं है जो उनके प्रवचनों/विचारों से अस्पर्शित रहा हो। योग, तंत्र, मंत्र, यंत्र, साधना, ध्यान आदि के गूढ़ रहस्यों पर उन्होंने सविस्तार प्रकाश डाला है। साथ ही राजनीति, कला, विज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शन, शिक्षा, परिवार, समाज, गरीबी, जनसंख्या विस्फोट, पर्यावरण, हिंसा, जातीयता, राजनीतिक अपराधीकरण, लोकतंत्र की विसंगतियों, संभावित परमाणु युद्ध का विश्व संकट जैसे अनेक विषयों पर भी अपनी क्रांतिकारी जीवन-दृष्टि प्रदत्त की है।

जीवन के नौवें दशक में आचार्य महाप्रज्ञ का विशेष जोर अहिंसा पर रहा। इसका कारण सारा संसार हिंसा के महाप्रलय से भयभीत और आतंकित होना था। जातीय उन्माद, सांप्रदायिक विद्वेष और जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं का अभावफ्ऐसे कारण थे जो हिंसा को बढ़ावा दे रहे थे और इन्हीं कारणों को नियंत्रित करने के

लिए आचार्य महाप्रज्ञ प्रयत्नशील थे। इन विविध प्रयत्नों में उनका एक अभिनव उपक्रम थाफ्ह्यअहिंसा यात्राह्ल। अहिंसा यात्रा ऐसा आंदोलन बना, जो समूची मानव जाति के हित का चिंतन कर रहा था। अहिंसा की योजना को क्रियान्वित करने के लिए ही उन्होंने पदयात्रा के सशक्त माध्यम को चुना। ह्यचरैवेति-चरैवेति चरन् वै मधु विंदतिह्ल उनके जीवन का विशेष सूत्र बन गया था। इस सूत्र को लेकर उन्होंने पाँच दिसंबर, 2001 को राजस्थान के सुजानगढ़ क्षेत्र से अहिंसा यात्रा को प्रारंभ किया, जो गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, हरियाणा, छत्तीसगढ़, दिल्ली एवं महाराष्ट्र में अपने अभिनव एवं सफल उपक्रमों के साथ विचरण करते हुए असंख्य लोगों को अहिंसा का प्रभावी प्रशिक्षण दिया एवं हिंसक मानसिकता में बदलाव का माध्यम बनी। आचार्य श्री महाप्रज्ञ की इस अहिंसा यात्रा में हजारों नए लोग उनसे परिचित हुए। परिचय के धागों में बंधे लोगों ने अहिंसा दर्शन को समझा, आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व को परखा और अहिंसा यात्रा को निर्बाध मानकर उसके राही बने थे।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व से अहिंसा का जो आलोक फैला उससे गुजरात के जटिल से जटिलतर हो रहे सांप्रदायिक हिंसा का माहौल नियंत्रि होने में उस समय क्रांतिकारी बदलाव देखा गया। अहिंसा यात्रा का वह आलोक जाति, वर्ग, वर्ण, प्रांत, धर्म आदि की सरहदों में सीमित नहीं था। यही कारण था कि प्रख्यात मुस्लिम नेता सूफी सैयद बशीउर्रहमान शाह ने भारत और पाकिस्तान के बीच सौहार्दपूर्ण संबंधों की स्थापना के लिए आचार्य श्री महाप्रज्ञ को पाकिस्तान आने का निमंत्राण दिया था। एक व्यापक धर्म क्रांति के रूप में अहिंसा के विस्तार ने नई संभावनाओं के द्वार खोले। जहां राष्ट्र की मुख्य धारा से सीधा जुड़कर अहिंसा यात्रा का उपक्रम एक राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में सक्रिय बना, वहीं दुनिया के अनेक राष्ट्र इस तरह के प्रयत्नों से विश्व में शांति एवं अमन कायम होने की संभावनाओं को आशाभरी नजरों से देखने लगे थे। आचार्य महाप्रज्ञ कहते थे कि हमारी अहिंसा यात्रा का एक बड़ा ध्येय है हिंसा के कारणों का विश्लेषण। हिंसा के दो बड़े कारण हैं अनैतिकता और संवेगों पर नियंत्रण न होना। यदि बचपन से ही संवेग नियंत्रण की बात सिखा दी जाए तो व्यक्ति अच्छा रहेगा, परिवार में शांति रहेगी और समाज का वातावरण भी स्वस्थ रहेगा। आचार्य महाप्रज्ञ के ये विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक है और सदियों तक उनकी प्रासंगिकता बनी रहेगी।

संवेग नियंत्रण के लिए आचार्य महाप्रज्ञ प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराते थे। प्रेक्षाध्यान आचार्य महाप्रज्ञ का ऐसा अवदान है जिसमें उन्होंने आत्मदर्शन को नए युगदर्शन के साथ जोड़ा। यह एक प्रेक्टिकल प्रक्रिया है। प्रेक्षाध्यान के प्रकाश से सैकड़ों-सैकड़ों पथभूलों ने मंजिल तक पहुँचने वाले रास्तों की पहचान पाई है। आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक सभी मोर्चों पर प्रेक्षाध्यान की असंदिग्ध सफलता ने युवा पीढ़ी को अपनी ओर खींचा। अहिंसा प्रशिक्षण की दृष्टि से प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कारगर बनकर प्रस्तुत हुए थे। मन को वश में लाने का अभ्यास अनेक प्रकार का होता है, इन अभ्यासों का नाम ही प्रेक्षाध्यान है। जिस व्यक्ति ने अपने मन को पहले से ही शांति-अशांति, मान-अपमान, सुख-दुख से निर्लिप्त बना लिया है, वही निर्विघ्न शांति में स्थित रह सकता है। जो व्यक्ति काम-क्रोध के वेगों को सह सकता है, वही वास्तव में सुखी है। ऐसे अमोध सुख के स्रोत प्रवाहित करने वाले महानायक आचार्य महाप्रज्ञ भले ही आज हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनका दिया गया बोध हमारा पथदर्शन कर रहा है।

अहिंसा में बहुत बड़ी शक्ति छिपी हुई है, जिसे उजागर करने की भरसक चेष्टा आचार्य महाप्रज्ञ ने की थी। अन्याय का मुकाबला हिंसा से भी किया जा सकता है, मगर उसमें दो खतरे रहते हैं। अन्याय करने वाले की हिंसा से अगर प्रतिकार करने वाले की हिंसा कुछ कम पड़ जाए तो उसकी सारी हिंसा बेकार हो जाती है। दूसरा खतरा यह है कि इस संघर्ष में एक हिंसा विजयी हो जाए तो भी समस्या समाप्त नहीं होती। पराजित पक्ष प्रतिशोध की भावना की आग उर में संजोए अधिक हिंसा और क्रूरता की तैयारी में लग जाता है। प्रतिशोध और हिंसा का जो सिलसिला इससे शुरू हो जाता है, वह लगातार चलता रहता है। वह कभी टूटता नहीं। हिंसा के इस अभिशाप से छुटकारा दिलाने के लिए आचार्य महाप्रज्ञ ने अपना नया और अनोखा अहिंसा का शस्त्र एवं साधन मानव जाति को दिया, जो उनकी अमूल्य देन है, जिससे सदियों तक मानवता उपकृत होती रहेगी। ह्यबैर से बैर नहीं मिटताह्ल, बंदूक के बल पर शांति नहीं आती, हिंसा से हिंसा को समाप्त नहीं किया जा सकताफ्इन बुद्ध वचनों को उन्होंने नया जामा पहनाकर समस्त मानव-जाति को एक तोहफे के रूप में प्रदान किया है। यही उनकी विशेषता थी जो संसार के इतिहास में आज भी एक नई सामुदायिक शक्ति के रूप में दिखाई दे रही है। आचार्य महाप्रज्ञ जितने दार्शनिक थे, उतने ही बड़े एवं सिद्ध योगी भी थे। वे दर्शन की भूमिका पर खड़े होकर अपने समाज और देश की ही नहीं, विश्व की समस्याओं को देखते थे । जो समस्या को सही कोण से देखता है, वही उसका समाधान खोज पाता है। आचार्यश्री जब योग की भूमिका पर आरूढ़ होते थे, तो किसी भी समस्या को असमाहित नहीं छोड़ते। समाधान की नई दृष्टि देते हुए उन्होंने अपने वक्तव्य में कहाफ्ह्यह्यसमाज हो और समस्या न हो, यह कभी संभव नहीं है। एक से दो होने का अर्थ ही है समस्या को निमंत्रण। समस्या हो और उसका समाधान न हो, यह भी संभव नहीं है। मेरे अभिमत से समस्या का समाधान है अनेकांत-दृष्टि। इस दृष्टि का पूरा उपयोग हो तो कोई समस्या टिक नहीं सकती। केवल राजनीति, समाजनीति या धर्मनीति के पास समाधान नहीं मिलेगा।

प्रदूषण को लेकर सरकार सख्त, बिहार में नहीं चलेंगी 15 साल पुरानी गाडियां

बिहार में बढ़ते प्रदूषण के कारण लोगों का जीना मुहाल है. सांस लेने में तकलीफ की समस्या होने के साथ ही कई बीमारियों का भी लोगों को सामना करना पड़ रहा है.इसी को लेकर बिहार सरकार ने अब बड़ा फैसला ले लिया है. पटना समेत बिहार में बढ़ते प्रदूषण को लेकर बिहार सरकार ने बड़ा फैसला लेते हुए 15 साल से पुरानी गाड़ियों पर रोक लगा दिया है.बिहार में बढ़ते प्रदूषण को लेकर बिहार में 15 साल से पुरानी गाड़ियों के चलाने पर रोक लग गई है. बिहार सरकार ने पर्यावरण को बचाने को लेकर ये बड़ा फैसला लिया है. बिहार में प्रदूषण की स्थिति को देखते हुए सीएम ने अपने आवास पर बैठक बुलाई थी जिसमें ये फैसला लिया है. बैठक के बाद मुख्य सचिव दीपक कुमार ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि बिहार की राजधानी पटना समेत विभिन्न जिलों में प्रदूषण की

हालत बेहद खराब हो चुकी है.बता दें कि सीएम नीतीश कुमार लगातार पर्यावरण को लेकर अपनी चिंता जाहिर करते रहे हैं. कई बार उन्होंने पर्यावरण बचाने को लेकर लोगों में जागरूकता फैलाने की बात कही है. पिछले दिनों पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए सीएम नीतीश कुमार ने जल जीवन हरियाली अभियान की भी शुरूआत की है.

फिर से कराना होगा प्रदूषण जांच

मुख्य सचिव दीपक कुमार ने कहा कि सरकारी गाड़ियों पर रोक लगाया जा रहा है. चाहे वह निगम की ही गाड़ी क्यों न हो. पूरे राज्य में मंगलवार से यह लागू हो जाएगा. 15 साल से पुराने व्यावसायिक वाहनों पर पटना में प्रतिबंध रहेगा. 15 साल से पुरानी निजी गाड़ियों को फिर से प्रदूषण जांच कराना होगा.साथ ही कल से पूरे बिहार में सघन प्रदूषण जांच चलाया जाएगा. साथ ही ये आदेश भी जारी किया गया है कि कंस्ट्रक्शन के सभी कामों को ढ़क कर किया जाना चाहिए. वहीं वाहनों से धूल भरे सामान की ढुलाई भी ढ़ककर ही की जानी चाहिए.

शिक्षा का कोरियाई मॉडल और सरकारी स्कूलों की जमीनी हकीकत

मप्र की कमलनाथ सरकार प्रदेश में शालेय शिक्षा को कौशल विकास के साथ जोड़ने के लिये दक्षिण कोरिया का मॉडल अपनाना चाहती है ।इसके लिये मप्र के चुनिंदा 35 अफसरों और शिक्षकों का एक दल इन दिनों दक्षिण कोरिया के दौरे पर गया है जो वहां स्टीम एजुकेशन सिस्टम का अध्ययन करेगा और मप्र में इसे कैसे लागू किया जा सकता है इसे लेकर एक रिपोर्ट सरकार को सौपेगा।स्टीम सिस्टम का आशय साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग, आर्ट्स और मैथ्स बेस्ड शिक्षा प्रणाली से है इसका मूल उद्देश्य किताबी ज्ञान को कौशल विकास के साथ जोड़ने से है। कोरिया में यह सिस्टम बेहद सफल साबित हुआ है इसी सिस्टम को अपनाकर इस छोटे से देश ने तकनीकी के मामले में वैश्विक पहचान अर्जित की है।

आज कोरिया इलेक्ट्रॉनिक उपकरण से लेकर सूचना तकनीकी और प्रोधोगिकी के मामले में अव्वल बना हुआ है।भारत से महज दो साल पहले औपनिवेशिक शासन से आजाद हुआ यह देश आज परिणामोन्मुखी शिक्षा के जरिये आर्थिक और तकनीकी महाशक्ति बनने के मामले में एक मिसाल है।कमलनाथ सरकार का यह नवाचार सिद्धांतय तो स्वागत योग्य ही है लेकिन कोरिया और भारत की सामाजिक आर्थिक सरंचना में बड़ा बुनियादी अंतर है यह हमें नही भूलना चाहिए।यही नही राजनीतिक रूप से शिक्षा कोरियाई शासकों के लिये वोट बैंक का स्त्रोत नही है इसलिये यह कहना जल्दबाजी ही होगा की कोरियन मॉडल को अपनाकर मप्र में ढर्रे से उतरी स्कूली शिक्षा का कुछ भला हो सकेगा।असल में कमलनाथ जिस मॉडल को अपनाने की सोच रहे है उसे सख्त प्रशासन ,दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति और नागरिक बोध के साथ ही हांसिल किया जा सकता है।

भारत के हिंदी भाषी राज्यों में यह सभी कारक आज भी बेहद कमजोर है। जिन बीमारू राज्यों के लिये आजादी के बाद से ही शिक्षा उच्च प्राथमिकता पर लिए जाने की जरूरत थी वहां यह विषय कभी भी सरकारों के लिये चिंता का मामला नही रहा है। मप्र ,उप्र, बिहार,राजस्थान जैसे राज्यों में शिक्षा तंत्र पूरी तरह से अफसरशाही के हवाले है।मप्र में पिछले 25 बर्षो से जिस तरह के प्रयोग किये गए है उसने इस प्रदेश को एक प्रयोगशाला बनाकर रख दिया है।शिक्षा संविधान में राज्य सूची का विषय होने के कारण कोई एकीकृत नीति आज तक प्रदेशों में लागू नही हो सकी है।यही कारण है कि देश भर में अनगिनत शिक्षक पदनाम प्रचलित है।मप्र में शिक्षाकर्मी, संविदा शिक्षक, गुरुजी, सहायक शिक्षक, उच्च शिक्षक, व्याख्याता, औपचारिकेतर शिक्षक, निम्न श्रेणी शिक्षक,सहायक अध्यापक, वरिष्ठ अध्यापक,अतिथि शिक्षक जैसे शिक्षक सिस्टम का हिस्सा है।प्राथमिक शिक्षा के लिये निगरानी तंत्र अलग है मिडिल तक के लिये अलग फिर मिडिल से इंटरमीडिएट तक की निगरानी के लिये अलग सिस्टम है।

मप्र में राज्य का अपना शिक्षक कैडर है वही स्थानीय निकायों के शिक्षक अलग है।एक सँचालनलाय शिक्षा विभाग का है दूसरा राज्य शिक्षा केन्द्र है।दोनों के लिये अलग अलग सेटअप है अलग आईएएस अफसर डायरेक्टर है।केंद्र सरकार राज्यों के लिये सर्व शिक्षा मिशन औ आरटीई के तहत जो धन भेजती है उसे खर्च करने के लिये अलग लोग है और राज्य की निधि

से जो धन शालेय शिक्षा को आबंटित होता है उसके लिये अलग आयुक्त है।एक नया मिशन कक्षा 8 से 12 के लिये राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा मिशनह्व भी केंद्र सरकार चलाती है इसके लिये एक तीसरा दफ्तर भी मप्र में स्थापित है।समझा जा सकता है कि किस बेतरतीबी के साथ मप्र में शिक्षा व्यवस्था की निगरानी का सरकारी सिस्टम का बना हुआ है।हाल ही में सरकार ने निकायों के शिक्षकों को शिक्षा विभाग में संविलियन किया है लेकिन इसके बाबजूद प्रदेश में में नियमित और इन एक लाख से अधिक शिक्षकों के बीच वेतन से लेकर सेवा शर्तों को लेकर बीसियों विसंगतियां मौजूद है लगातार ये शिक्षक धरना,आंदोलन, प्रदर्शन करते रहते है।मप्र में सरकारी शिक्षकों की भर्ती के लिए भी समय समय पर नियम बदलते रहे है पहले बगैर डीएड, बीएड किये लोगों को सीधी भर्ती कर नोकरी पर रख लिया गया फिर अब उन्हें सरकारी खर्च पर प्रशिक्षित किया जा रहा है।इसके बाबजूद प्रदेश में हजारों अयोग्य शिक्षक सिस्टम का हिस्सा बने हुए है हाल ही में ये शिक्षक सरकार द्वारा आयोजित दक्षता संवर्धन परीक्षा में किताब सामने रखकर शुद्ध नकल भी नही कर पाए।प्रदेश में शिक्षकों के तबादलों की कोई मानक नीति नही है हाल ही में कमलनाथ सरकार ने ऑनलाइन सॉफ्टवेयर के जरिये हजारों शिक्षकों के ट्रांसफर किये जिससे हर जिले में सैंकड़ो स्कूल शिक्षक विहीन हो गए।

सरकार के स्तर से भी ऐसी नीतियां बनाई गई है कि सरकारी स्कूलों में पढ़ाई या कौशल विकास के लिये कोई माहौल ही न बन पाएं।सरकारी शिक्षक राज्य सरकार की अधिकतर योजनाओं का सर्वे करते है।पिछले एक दशक से एक ब्लाक के लगभग चार सौ सरकारी शिक्षक तो निर्वाचन आयोग के अधीन बीएलओ के रूप में काम करते रहते है क्योंकि निर्वाचन बूथ के नजदीकी स्कूल का एक शिक्षक स्थाई रूप से बीएलओ के रूप से काम कर रहा है।जनगणना से लेकर तमाम तरह के सर्वेक्षण भी सरकारी शिक्षकों से कराए जाते है।सरकार ने स्कूलों में जो लोकप्रिय प्रयोग किये है उनकी जिम्मेदारी भी शिक्षकों पर डाल रखी है मसलन मध्यान्ह भोजन को बनबाने से लेकर वितरण,साफ सफाई से लेकर साइकिल वितरण, छात्रवृत्ति, निःशुल्क गणवेश और पाठ्यपुस्तक,सभी काम शिक्षकों की अग्रणी भागीदारी से ही पूर्ण हो पाते है।

सरकारी स्कूलों के लिये सर्व शिक्षा अभियान से इमारतें तो बड़ी संख्या में बना दी गई लेकिन इनमें से 80 फीसदी ग्रामीण शालाओं में न बिजली कनेक्शन है न पेयजल की सुविधा।न साफ सफाई के लिये चपरासी और न रोजाना की जानकारियां भेजने बनाने के लिये कोई बाबू।समझा जा सकता है कि सरकारी स्कूलों में मास्टर जी को क्या क्या करना पड़ता है।जबकि छोटे से छोटे प्राइवेट स्कूल में भी इस बात का ख्याल रखा जाता है कि टीचर सिर्फ पढ़ाने पर ध्यान लगाए ताकि उसके स्कूल का रिकॉर्ड बेहतर हो सके।सरकारी स्कूलों में इससे ठीक उलट कहानी है सरकारी अफसर जो जानकारी मांग रहे है वह समय पर जाए ,दोपहर का भोजन,गणवेश, साइकिल ,किताबें बगैर व्यवधान के बंट जाएं इस ध्येय को आगे रखकर लोग काम करते है। जाहिर है स्कूल शिक्षा की गुणवत्ता के लिये कोई मनोविज्ञान न सरकार के स्तर पर काम करता है न

शिक्षक वर्ग का।नतीजा हाल ही में नीति आयोग,मानव संशाधन, और विश्व बैंक की एक सयुंक्त रिपोर्ट में परिलक्षित हुआ है।देश के 20 राज्यों के सरकारी एजुकेशन सिस्टम में छात्रों की समझ और सीखने की क्षमताओं को लेकर जारी रैंकिंग में मप्र 15 वे औ छत्तीसगढ़ 13 वे स्थान पर है।ह्वद सक्सेस ऑफ अवर स्कूल एजुकेशन क्वालिटी इंडेक्सह्वमें केरल का नम्बर पहले स्थान पर है।

यानि हकीकत है कि मप्र में सरकारी स्कूलों के लाखों बच्चे कुछ भी नही सीख पा रहे है यह रिपोर्ट बताती है कि कक्षा 9 में दर्ज बच्चे गणित के जोड़ घटाव,हिंदी वर्णमाला और सामान्य उच्चारण तक नही जानते है।कमलनाथ सरकार ने जिस कोरियाई मॉडल को मप्र में अपनाने की पहल की है उसके लिये सबसे पहले प्रदेश में जमीनी कार्य संस्कृति विकसित करने की आवश्यकता है।शिक्षा तंत्र को अफसरशाही के शिकंजे से बाहर निकाले बिना किसी आदर्श को अपनाया जाना उसकी विफलता की गारंटी पहले से ही घोषित करने जैसा है।राज्य और केंद्र के बीच नीतिगत स्तर पर महज धन के जारी होने का रिश्ता रहना चाहिये धन के साथ केन्द्र के मार्गदर्शी सिद्धांत लागू करने की बाध्यता भी भृष्टाचार की जड़ है।

बेहतर होगा राज्य अपना एकीकृत शिक्षा मॉडल लागू करें जिसमें प्राइमरी से इंटरमीडिएट तक नीति निर्माण, पर्यवेक्षण, निगरानी, शास्ति के लिये एक ही तंत्र हो और सभी शिक्षा संवर्ग से आते हो।सरकार के स्तर पर शिक्षकों के वर्गभेद समाप्त किये जायें और यह सुनिश्चित किया जाए कि शिक्षक सिर्फ पढ़ाने के लिये है उन्हें चुनाव के अलावा अन्य कार्य से मुक्त रखा जाए। स्कूलों के नाम पर मॉडल स्कूल,एक्सीलेंस स्कूल,एकलव्य स्कूल,आदर्श स्कूल जैसे प्रयोग भी बन्द होना चाहिये क्योंकि यह भी विषमताओं को जन्म देते है।राज्यों में शिक्षा विभाग के मुखिया शिक्षको के मध्य से ही आना चाहिये और केवल प्रमुख सचिव स्तर पर ही आईएएस अफसरों की नियुक्ति का प्रावधान हो।इन बुनियादी सुधारों के बगैर कोरियाई मॉडल को अपनाया जाना फिर एक नया प्रयोग ही साबित होगा जैसे कि दो दशकों से लगातार जारी है।क्योंकि कौशल विकास तो तभी संभव है जब बच्चे बुनियादी अक्षरज्ञान में निपुण हो जो फिलहाल इस मामले में सिफर है।

वायु प्रदूषण के चलते जहरीली गैस के चैम्बर बनते शहर बने चुनौती

देश की राजधानी दिल्ली व एनसीआर का क्षेत्र दीपावली के त्यौहार के बाद से एकबार फिर मीडिया की जबरदस्त चचाओं में शामिल है। हर बार की तरह इस बार भी चर्चा की वजह है दिल्ली में बढ़ता वायु प्रदूषण, अपने जानलेवा वायु प्रदूषण के लिए विश्व में प्रसिद्ध हो गयी देश की राजधानी दिल्ली दीपावली के बाद से काले धुएं के बादलों के आगोश में छिपी हुई है। वायु प्रदूषण के चलते लोगों को भगवान सूर्यदेव के दर्शन बहुत ही मुश्किल से हो पा रहे हैं।

लेकिन हम है कि फिर भी सुधारने का नाम नहीं लेते हैं अपने ही हाथों से अपने प्यारे चमन में आग लगा लेते हैं और स्वर्ग सी भूमि को स्वयं ही प्रदूषित करके नरक बना लेते हैं। हम सभी अपने चारों तरफ देखे तो ईश्वर की बनाई इस अद्भुत दुनिया के निराले प्राकृतिक नजारों को देखकर हमारा तन-मन प्रफुल्लित हो जाता है। भगवान ने हमको प्रकृति की गोद में हर तरफ कल-कल करती नदियां, प्राकृतिक संगीतमय झरने, मनमोहक प्राकृतिक सौन्दर्य युक्त पहाड़, तरह-तरह के सुंदर जीव-जंतु, सुंदर फूल, कंदमूल-फल, तरह-तरह के अनाज, बेल-लताएं, हरे-भरे छोटे और विशालकाय वृक्ष, प्यारे-प्यारे चहचहाते पक्षी आदि से परिपूर्ण साक्षात स्वर्ग रूपी सुंदर संसार दिया है, यह वो संसार है जो आदिकाल से और आज भी हम सभी इंसानों के आकर्षण का हमेशा केंद्र बिंदु रहा है। लेकिन आज इंसान ने अपनी जिज्ञासा और नई-नई खोज की अभिलाषा में जब से प्रकृति के कार्यों में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया है, तब से पर्यावरण की हालात दिन-प्रतिदिन चिंताजनक होकर बेहद प्रदूषित होती जा रही है। आज देश में हालात यह हो गये हैं कि देश में बढ़ते वायु प्रदूषण के चलते दिन आबोहवा जहरीली होने के चलते हमारे शहर व गांव तक भी गैस चैम्बर में तब्दील हो रहे है। विज्ञान के द्वार उपलब्ध उन्नत तकनीक के बाद भी आजकल सभी लोगों को सांस लेने के लिए स्वच्छ आक्सीजन तक मिलना दुश्वार होता जा रहा है। आज स्थिति यह हो गयी है कि हम अपने परिवारों, दोस्तों व परिचितों का बहुत ख्याल रखते हैं, परंतु जब बात पर्यावरण के संरक्षण और उसके ध्यान रखने की आती है तो हम केवल प्रथ्वी दिवस, पर्यावरण दिवस, गांधी जयंती, आदि पर वृक्षारोपण करके या फिर सरकार प्रायोजित स्वच्छ भारत अभियान चला करके पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपने दायित्वों की इतिश्री कर लेते है। लेकिन अब समय आ गया है कि हमको पृथ्वी को प्रदूषण से मुक्त करने के बारे में ठोस कारगर पहल कागजों से निकलकर धरातल पर करनी होगी तब ही हम प्रकृति का संरक्षण करके हर तरह के प्रदूषण से बच सकते हैं।

वैसे तो आज जहरीली होती आबोहवा ने दुनिया भर के लोगों को परेशान कर रखा है, लेकिन हमारे प्यारे देश भारत पर इसका असर कुछ ज्यादा ही गम्भीर रूप से होता नजर आ रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में वायु प्रदूषण की वजह से 20 लाख लोग हर वर्ष असमय काल का ग्रास बन जाते हैं जो बेहद चिंताजनक स्थिति हैं। हर वर्ष की तरह ही इस बार भी दीपावली के पावन पर्व को हर्षोल्लास से मनाने के बाद, लोगों को घरों के अंदर व बाहर सड़कों पर हर जगह आंखों में जलन से लेकर सांस लेने तक में तकलीफ हो रही है। प्रदूषण के चलते कुछ लोगों को तो अस्पताल जाकर उपचार तक कराना पड़ रहा है। हालांकि फिर भी देश में बहुत सारे लोग ऐसे हैं जो रोजमर्रा के जीवन संघर्ष में रोजीरोटी कमाने के जुगाड़ व काम की आपाधापी में वायु प्रदूषण से होने वाली परेशानी को अनदेखा कर अपने कर्तव्यों का निर्वाह लगातार करते रहते हैं। वायु प्रदूषण पर नजर रखने वाले विशेषज्ञों के मुताबिक वैसे तो अब वायु प्रदूषण हर वक्त हर पल हम लोगों के जीवन को चुनौती दे रहा है, लेकिन यह हर वर्ष दीपावली के पावन पर्व के बाद ऊपर हवा में सामान्य से दस गुना तक बढ़ जाने के चलते सभी को स्पष्ट नजर आने लगती हैं। सोचनीय बात यह है कि आज वायु प्रदूषण के चलते हर छोटे बड़े शहर की आबोहवा में गम्भीर बीमारियों को जन्म देने वाले विषैले प्रदूषक तत्वों का भंडार मंडरा रहा है। लेकिन इसमें भी कोई शक नहीं कि इस बार लोगों के कुछ जागरूक होने की वजह से और हवा चलती रहने की वजह से दिल्ली व एनसीआर में दीपावली पर वायु प्रदूषण पिछले वर्षों की तुलना में कुछ कम हुआ है। लेकिन अगर हम वायु प्रदूषण के लिए केवल दीपावली की आतिशबाजी को जिम्मेदार ठहराएंगे तो यह नाइंसाफी होगी। इतना जरूर हैं कि हर वर्ष दीपावली पर होने वाली आतिशबाजी के बाद हवा में प्रदूषण इस कदर बढ़ जाता हैं कि वो एकदम सबके लिए एक बेहद चुनौती पूर्ण गंभीर समस्या बन जाता है और आम लोगों को दिक्कत होने के चलते सभी को नजर आने लगता है।

यहाँ उल्लेखनीय है कि वायु प्रदूषण की गम्भीर समस्या से निपटने के लिए पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालयह्ल ने राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनसीएपी) शुरू कर रखा है। यह सरकार की एक मध्यमकालिक पंचवर्षीय कार्य योजना है जिसमें देश के 102 शहरों में पीएम 2.5 और पीएम 10 (सूक्ष्म धूल कण) के स्तर में 20-30 प्रतिशत की उल्लेखनीय कमी करने के लक्ष्य रखे गये हैं। इन 102 शहरों में से 84 शहरों ने अपनी-अपनी कार्य योजनाएं पहले ही पेश कर दी हैं। एनसीएपी का मुख्य उद्देश्य देश भर में वायु प्रदूषण को नियंत्रण में रखते हुए उसमें उल्लेखनीय कमी सुनिश्चित करना है। क्योंकि आज हमारे देश में जिस तरह से दिन-प्रतिदिन वायु प्रदूषण बढ़ता जा रहा है उसका निदान करना आमजन के साथ-साथ सरकार के लिए भी

बहुत बड़ी चुनौती है। क्योंकि देश में अब वायु प्रदूषण का स्तर दिन-प्रतिदिन बेहद घातक व जानलेवा होता जा रहा है। जो की हम सभी देशवासियों के जानमाल व स्वास्थ्य के लिये बेहद खतरनाक साबित हो रहा है। जिस तरह से हाल के वर्षों में बहुत ही तेजी से हमारे देश का वायुमंडल जहरीले गैस चैम्बर में तब्दील होता जा रहा है वह चिंता का विषय है। लेकिन फिर भी हम सभी देशवासी व सरकार इस ज्वंलत समस्या का कारगर समाधान ना करके , कबूतर की तरह आँख बंद करके बेफिक्र बैठे हुए है, यह स्थिति सोचनीय है।

आज देश में जहरीली होती आबोहवा की वजह से साँस, एलर्जी सम्बन्धी व अन्य प्रकार की तरह-तरह की गम्भीर बीमारियों का खतरा हम सभी देशवासियों पर बहुत तेजी से मंडरा रहा है। जहरीली हवा के चलते लोगों की रोग-प्रतिरोधक क्षमता घटने से व गम्भीर बीमारियों के बढ़ने से देश में मृत्युदर में काफी तेजी से इजाफा हुआ है। प्रदूषण की वजह से दम तोड़ते लोगों के आकडों में साल दर साल बहुत ही तेजी से वृद्धि हो रही है। जहरीले वायु प्रदूषण की भयावहता का अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि आज हमारे देश का हर छोटा व बड़ा शहर एक गैस चैम्बर के रूप में परिवर्तित होता जा रहा हैं, जिसको अगर जल्दी ही नियंत्रित नहीं किया गया तो भविष्य में बहुत बड़ी संख्या में देश के लोग वायु प्रदूषण की वजह से असमय काल के ग्रास बन जायेंगे। प्रदूषण के इस मसले पर कुछ समय पहले विश्व प्रसिद्ध अमेरिका के दो संस्थान हेल्थ इफेक्ट्स इंस्टिट्यूट (ळएक) एवं इंस्टिट्यूट फॉर हेल्थ मैट्रिक्स एंड इवैल्यूएशन (क्लटए) ने हाल ही में विश्व भर में वायु की गुणवत्ता से सम्बंधित आकडों पर अपनी एक विस्तृत रिपोर्ट जारी की थी। जिस रिपोर्ट का शीर्षक था झ्र स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर-2019 इस रिपोर्ट के अनुसार विश्व भर में वायु प्रदूषण से होने वाली 5 मिलियन मौतों में से 50% मौत केवल भारत और चीन में ही होती है जो कि बहुत ही भयावह स्थिति को दशार्ने वाले आकड़े हैं। इस विस्तृत रिपोर्ट में कहा गया है कि लंबे समय तक घर से बाहर रहने या घर में वायु प्रदूषण के चलते वर्ष 2017 में स्ट्रोक, डायबिटीज, हार्ट अटैक, फेफड़े के कैंसर या फेफड़े आदि की गम्भीर बीमारियों से विश्व में लगभग 50 लाख लोगों की मौत हुई है। इस रिपोर्ट के अनुसार आज भारत में वायु प्रदूषण अब स्वास्थ्य के लिए सबसे खतरनाक जोखिमों के तीसरे पायदान पर पहुँच गया है, जो कि अब देश में मौत का तीसरा सबसे बड़ा गम्भीर कारक बन गया है। जो देश में धूम्रपान से होने वाली मौतों के ठीक ऊपर है। रिपोर्ट के आंकडों के अनुसार वर्ष 2017 में असुरक्षित प्रदूषित वायु के संपर्क में आने से 6,73,100 मौतें बा ढट2.5 के संपर्क में आने के कारण हुई और 4,81,700 से अधिक मौतें भारत में घरेलू वायु प्रदूषण के कारण हुई थी। 2017 में भारत की लगभग 60% आबादी घरेलू प्रदूषण के संपर्क में थी। आंकड़ों पर गौर करे तो आज हमारे देश की अधिकांश आबादी 10 के वायु गुणवत्ता दिशा-निर्देश के ऊपर ढट2.5 सांद्रता वाले क्षेत्रों में रहती है तथा केवल 15% आबादी ही हलड के कम-से-कम कड़े लक्ष्य 35 के नीचे 2.5 सांद्रता वाले क्षेत्रों में रहती है। इस रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि यदि वायु प्रदूषण इसी प्रकार बरकरार रहता है तो भविष्य में लोगों के सामने बहुत ही गम्भीर स्वास्थ्य संकट उत्पन्न होंगे जिससे भविष्य में लोगों की जीवन प्रत्याशा (एक व्यक्ति के औसत जीवनकाल) में 20 महीने कम हो जाएगी।इस रिपोर्ट में जब भारत की वायु गुणवत्ता का अध्ययन किया गया है, तो पाया कि विश्व में सबसे अधिक भारत में वायु प्रदूषण की वजह से लोगों की मृत्यु हो रही हैं जो कि भविष्य में देशहित के लिए ठीक नहीं है। यहाँ उल्लेखनीय है कि नाइट्रोजन, सल्फर ऑक्साइड और कार्बन खासकर पीएम 2.5 जैसे वायु प्रदूषक तत्वों को असमय मौत का एक बहुत बड़ा कारक माना जाता है। ठीक उसी प्रकार केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने अपनी रिपोर्ट में जिन शहरों को सबसे अधिक प्रदूषित शहर माना है। लेकिन फिर भी सरकार ना जानें क्यों उन शहरों के वायु प्रदूषण के संदर्भ में आयी रिपोर्टों को खास तवज्जो नहीं देती हैं, जिसके चलते देश में ना तो सही ढंग से प्रदूषण नियंत्रण हो पा रहा है ना ही सही आंकड़े सभी देशवासियों के सामने आ रहे हैं। लेकिन विदेशी संस्थाओं की रिपोर्ट में दी गयी इस बात से तो सहमत हुआ जा सकता है कि वायु प्रदूषण की वजह से देश में होने वाली मौतों की जो संख्या व इस रिपोर्ट में दी गई है उसकी संख्या कम या ज्यादा तो हो सकती हैं, लेकिन यह भी कड़वा सत्य है कि वायु प्रदूषण के चलते देश के शहर दिन-प्रतिदिन जहरीले गैस के चैम्बर बनते जा रहे है और उससे अब लोग असमय काल का ग्रास बन रहे हैं। इस सच्चाई से अब ना तो सरकार और ना ही आम-आदमी मुँह मोड़ सकता हैं। क्योंकि अब यह सबको समझ आ गया है कि वायु प्रदूषण एक बहुत ही गम्भीर पर्यावरणीय समस्या है जिसका जल्द से जल्द कारगर समाधान करने के लिए सरकार को आम-जनमानस के सहयोग से प्रभावी कदम उठाने होंगे, वरना इस जहरीले वायु प्रदूषण के चलते देश में लोगों की आये-दिन जान जाती रहेंगी। इतना कुछ होने के बाद भी आज देश में वायु प्रदूषण को लेकर बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि दिल्ली सरकार को छोडकर अब तक देश के बाकी राज्यों की तमाम सरकारों व आम-जनमानस ने वायु प्रदूषण की इस समस्या को कभी गम्भीरता से नहीं लिया है जो कि भविष्य के लिए बहुत ही घातक स्थिति है। देश में आज भी हालत यह है कि वायु प्रदूषण कम करने की कोशिशें केवल देश के चंद बड़े शहरों दिल्ली, मुम्बई आदि जैसे बड़े-बड़े महानगरों तक केन्द्रित रहीं हैं। इस गम्भीर समस्या के मसले पर सरकारों ने छोटे शहरों व गांवों के निवासियों को भगवान भरोसे छोड़ दिया है जो लोगों के स्वास्थ्य के लिए घातक स्थिति है। यह हालात तब है जब वर्ष 2016 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दुनिया के 20 सबसे प्रदूषित शहरों की सूची जारी की थी, उनमें भारत के 10 शहर शामिल थे। फिर भी अभी तक सरकार ने छोटे शहरों व गांवों के प्रदूषण रोकने के लिए कोई ठोस कारगर पहल नहीं की है। सबसे अचरज की बात यह है कि ना तो हम व ना ही स्थानीय प्रशासन अपने शहरों में वायु प्रदूषण का अन्दाजा ठीक से नहीं लगा पा रहे हैं, तो इसकी वजह से आम जनता की सेहत पर पड़ने वाले कुप्रभावों का अन्दाज हम ठीक प्रकार से कैसे लगा पाएँगे? इसके लिये जरूरी बुनियादी ढाँचे के अभाव की स्थिति में हम वैश्विक स्तर पर किये जा रहे इन विदेशी आकड़ों पर विश्वास करके वायु प्रदूषण से निपटने के लिए प्रभावी कदम उठा सकते हैं, जब तक कि हमारा ढाँचा प्रभावी रूप से विकसित नहीं हो जाता है तब तक हमारे पास विदेशी आकड़ों व रिपोर्ट पर विश्वास करने के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं बचता है। लेकिन यह भी कटु सत्य है कि देश में भविष्य में जब प्रभावी संसाधन हो जायेंगे और हम वास्तव में अपने छोटे-छोटे शहरों और गाँवों के प्रदूषणों के आंकड़े संग्रहित करेंगे तो सच्चाई इस विदेशी रिपोर्ट के आंकड़ों से भी कहीं और अधिक गम्भीर व भयावह होगी। ऐसे में पर्यावरण मंत्रालय के लिये तब तक इस तरह की विदेशी रिपोर्ट को देश में वायु प्रदूषण कम करने के लिए प्रभावी कदम उठाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। जिससे की आने वाले समय में देश में जहरीले वायु प्रदूषण को नियंत्रित किये जाने की दिशा में कारगर प्रभावी कदम उठाने में मदद मिल सकेगी। आज हम सभी लोगों का यह नैतिक कर्तव्य है की जिस पृथ्वी और पर्यावरण में हम रहते है उसका संरक्षण व सुरक्षा स्वयं अच्छे ढंग से करें और उसे प्रदूषित न होने दे। लेकिन बड़े दुःख की बात है की आज का इंसान इतना स्वार्थी हो गया है की पर्यावरण की तरफ वह कोई ध्यान नही दे रहा है। आज हम लोग केवल अधिक से अधिक मुनाफा कमाने के लिए देश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों अव्यवस्थित ढंग से दोहन कर रहे है, जिसके लिए हम अंधाधुंध पेड़ काट रहे है, गृहकार्य, कृषि व फैक्ट्री के लिए भूमिगत जल का जिस तरह से बेहिसाब दोहन कर रहे है यह स्थिति सभी देशवासियों के लिए बेहद चिंताजनक है। आज देश में अव्यवस्थित औद्योगिक विकास, शहरीकरण और विकास के नाम पर आज हर दिन हम लोग अपने हाथों से पर्यावरण को दूषित कर रहे है। आज प्रदूषण के चलते देश की आबोहवा में रोजाना कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा तेजी से बढ़ती जा रही है। लेकिन अब समय आ गया है कि सरकार को आमजनमानस के सहयोग से इस ज्वंलत समस्या का स्थाई समाधान ढूंढ कर दीर्घकालिक निदान करना चाहिए।साथ ही देश में अब वह समय भी आ गया है की जब हम सभी देशवासी संकल्प ले कि प्रकृति से हम केवल लेंगे ही नही बल्कि प्राकृतिक संसाधनों व प्रकृति की सुरक्षा के लिए प्रभावी कदम उठाकर प्रकृति को कुछ वापिस भी अवश्य करेंगे, इस संकल्प से ही भविष्य में प्रकृति व पर्यावरण की सुरक्षा हो सकती है।

हम सभी को समझना होगा कि आजकल हमारे देश के सभी शहरों में तरह-तरह का इतना प्रदूषण और शोर है की पक्षी तक भी वहां से पलायन करने लगे है। अब पक्षियों के नाम पर शहरों में सिर्फ कुछ गिने चुने चंद प्रजाति के पक्षी ही देखने को मिलते है। आज शहर व गाँव में तरह-तरह के प्रदूषण की वजह से लोग आयेदिन गम्भीर बीमारियाँ से ग्रसित हो रहे है। प्रदूषण के चलते शहर का तो हर दूसरा व्यक्ति किसी न किसी प्रकार के रोग से ग्रसित हो गया है। देश की राजधानी दिल्ली व उसके आसपास के इलाकों में तो अब इतना वायु प्रदूषण बढ़ गया की लोगों का साँस लेना मुश्किल हो गया। इसलिए अब समय आ गया है कि हम सभी देशवासी सरकार के साथ मिलकर फाईलों से बाहर आकर धरातल पर पर्यावरण के सरंक्षण व सुरक्षा के लिए हर संभव ठोस कारगर उपाय करें। ना कि कभी दीपावली की आतिशबाजी , कभी पराली जलाने, कभी वाहनों के धुएं के चलते प्रदूषण , कभी औधोगिक ईकाईयों से या कभी अत्यधिक निर्माण कार्यो का चलते गम्भीर प्रदूषण हो रहा है पर बात टाल कर अपनी जिम्मेदारी से इतिश्री करें।

एसपी के निर्देश पर सदर पुलिस ने अंकित को किया गिरफ्तार

किशनगंज स्मैक बेचने और सेवन करने का आरोपी अंकित गुप्ता को पुलिस ने गिरफ्तार कर पूछताछ के बाद जेल भेज दिया है।कार्रवाई सोमवार की शाम आरोपी के लाइन पारा स्थित घर पर हुई।अंकित पांच महीने से फरार चल रहा था।उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने कई बार छापेमारी की परंतु वह बंगाल में दुबका रहा।सोमवार की शाम आरोपी के घर पर होने की सूचना जैसे ही पुलिस को मिली थानाध्यक्ष राजेश तिवारी व अनुसंधानकर्ता संजय यादव ने टीम के साथ घर पर छापेमारी कर उसे गिरफ्तार कर लिया। पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने कहा कि आरोपी पूर्व में पुलिस को चकमा देकर भागने में सफल रहा था।आरोपी युवक बंगाल के दलकोला से स्मैक लाकर शहर में बेचता था।उसके खिलाफ सदर थाना में नारकोटिक्स एक्ट के तहत मामला भी दर्ज है।पूछताछ में आरोपी ने अपने अन्य सहयोगियों के नाम बताए हैं, जिसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस छापेमारी कर रही है।पुलिस कप्तान श्री आशिष ने सदर थाना को स्मैक बेचने वालों और इससे जुड़े लोगों के विरुद्ध कठोर कार्यवाई करने का निर्देश दिया है।पुलिस कप्तान श्री आशिष ने कहा कि अपराध व अपराधी नहीं पनपे इसके लिए समाज को भी आगे आने की जरुरत है, नई पीढी के युवा वर्ग को नशा कारोबारी द्वारा नशे की दलदल में फंसाया जाता हैं जिससे युवा वर्ग आगे चलकर अपराध करने की कोशिश करता है।जरूरत है समाज के लोगों को आगे आने की, जहाँ भी नशा कारोबारी सप्लाई करते नजर आए अविलंब इसकी सूचना स्थानीय पुलिस को दें।

पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने कहा कि आरोपी पूर्व में पुलिस को चकमा देकर भागने में सफल रहा था।आरोपी युवक बंगाल के दलकोला से स्मैक लाकर शहर में बेचता था।उसके खिलाफ सदर थाना में नारकोटिक्स एक्ट के तहत मामला भी दर्ज है।पूछताछ में आरोपी ने अपने अन्य सहयोगियों के नाम बताए हैं, जिसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस छापेमारी कर रही है।पुलिस कप्तान श्री आशिष ने सदर थाना को स्मैक बेचने वालों और इससे जुड़े लोगों के विरुद्ध कठोर कार्यवाई करने का निर्देश दिया है।पुलिस कप्तान श्री आशिष ने कहा कि अपराध व अपराधी नहीं पनपे इसके लिए समाज को भी आगे आने की जरुरत है।

बिहार में शिक्षा का अलख जगा रहे विपिन कुमार सिन्हा

अनूप नारायण सिंह

बिहार की राजधानी पटना में विगत 13 वर्षों से 15,000 से ज्यादा छात्रों को अंग्रेजी शिक्षा दे चुके हैं विपिन कुमार सिन्हा इनके द्वारा पढ़ाए गए 5000 से ज्यादा छात्र छात्रा विभिन्न सरकारी नौकरियों में अंतिम रूप से चयनित हो चुके शिक्षा का अलख जगा रहे विपिन कुमार सिन्हा की कहानी बाधा पर विजय के सामान है विषम परिस्थितियों में अपने पथ पर अडिग रहते हुए उन्होंने शिक्षा क्षेत्र में एक अनूठी मिसाल कायम की है.पिता श्री कृष्ण नंदन प्रसाद सिन्हा और माता श्रीमती उषा सिन्हा के ज्येष्ठ पुत्र विपिन कुमार सिन्हा मूल रूप से नवादा जिला के विष्णुपुर गोविंदपुर के रहने वाले है.वर्ष 2005 में इन्होंने अंग्रेजी रीजनिंग मैथ और प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी कराने के लिए पटना के बाजार समिति इलाके के मुसल्लहपुर हाट मे श्रेष्ठ कोचिंग की शुरूआत की .दों छात्रों से प्रारंभ हुआ श्रेष्ठ कोचिंग 13 वर्षों के सफर सफर नामे के बाद आज पटना ही नहीं बिहार का सर्वश्रेष्ठ कोचिंग संस्थान बन चुका है. बाजारवाद को तोड़ते हुए गरीब और मेधावी छात्रों को भाषा का ज्ञान देने के लिए विपिन कुमार सिन्हा पूरी तरह तत्पर है जहां आज पटना के कोचिंग संस्थानों पर बाजारवाद पूरी तरह हावी है वहीं इनके संस्थान में नाम मात्र का शुल्क छात्रों से लिया जाता है. 15000 से ज्यादा छात्रों को अंग्रेजी भाषा में पारंगत कर चुके विपिन कुमार सिन्हा के लगभग 5 से ज्यादा छात्र छात्राएं सरकारी नौकरियों में अंतिम रूप से चयनित हो चुके है. सजगता को सफलता का विपिन कुमार सिन्हा कहते हैं कि बिहार के छात्र-छात्राओं में प्रतिभा की कमी नहीं उनमें सबसे बड़ी कमी अंग्रेजी भाषा की कमजोरी को लेकर होती है और इसी हीन ग्रंथि से ग्रसित होते मेघावी छात्र भी सफलता प्राप्त नहीं कर पाते. विपिन कुमार सिन्हा की स्कूली शिक्षा पटना के जे डी पाटलिपुत्र हाई स्कूल इंटर बीएन कॉलेज व पटना कॉलेज से एम ए तक की पढ़ाई की. पिता कृष्ण नंदन वर्मा सरकारी नौकरी में थे घर में किसी तरह का आभाव नही था. कॉलेज की पढ़ाई खत्म होने के बाद सरकारी सेवा के अपेक्षा इन्होंने शिक्षा सेवा को चुना. बाजार वाद में फंसे पटना की कोचिंग संस्थानों के बीच श्रेष्ठ कोचिंग संस्थान की स्थापना कर नाम मात्र के फीस पर इन्होंने छात्रों को पढ़ाना शुरू किया 2005 के यादों को कुरेदते हुए वे कहते हैं कि 2 छात्रों से शुरू हुआ अभियान आज हजारों छात्रों के बीच पहुँचा है। विपिन कुमार सिन्हा कहते हैं कि पटना के कोचिंग संस्थानों पर इन दिनों बाजारवाद कुछ ज्यादा ही हावी है प्रचार तंत्र के बल पर छात्रों को बरगलाने की कोशिश की जाती है .ग्रामीण परिवेश से आने वाले और खासकर बिहार के अधिकांश छात्रों के सामने अंग्रेजी भाषा के ज्ञान का अभाव होता है और उसके बिना तो आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में सफल हो ही नही सकते हैं.भाषा की बुनियाद को मजबूत बनाने के लिए छात्रों को वे हर संभव मदद करते हैं और इसका परिणाम भी सामने आता है किरण प्रकाशन से इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है .बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रतिदिन यह खुद 2 से 3 घंटे पढ़ते हैं . इनकी धर्मपत्नी बंदना कृष्णा नेशनल पब्लिक स्कूल की डायरेक्टर है. जो बाजार समिति में स्थित है. श्रेष्ठ कोचिंग संस्थान में 6 से 7 माह में छात्रों को अंग्रेजी भाषा मैं पूरी तरह से परागत कर दिया जाता है. प्रत्येक 15 दिनों पर टेस्ट का आयोजन होता है एस एम एस के माध्यम से छात्रों को टेस्ट का परिणाम बताएं जाते है. बेहतर परिणाम लाने वाले छात्र छात्राओं को पारितोषिक देकर उनका मनोबल भी पढ़ाया जाता है. अपने स्कूल के दिनों को याद करते हुए कहते हैं कि के अंग्रेजी के शिक्षक अवध बाबू का उनके जीवन पर खासा प्रभाव पड़ा। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा पूरी तन्मयता के साथ मेहनत करने से ही सफलता मिलती है. संस्थान के 13 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में उन्होंने कहा कि उन्होंने तो सिर्फ पेड़ लगाया था इसे वट वृक्ष छात्रों की सफलता ने बनाया .उनका अभियान आगे भी जारी रहेगा. कई राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित यहां अनूठे शिक्षक अपने संस्थान श्रेष्ठ कोचिंग के माध्यम से बिहार के छात्रों को सर्वश्रेष्ठ बनाने का अभियान चला रहे हैं.

मुख्यमंत्री मंत्री सात निश्चय योजनाएं ग्राम पंचायत कटोरिया में गतिमान

आयुष्मान भारत योजना हेतु अधिकारियों की पहल

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बांका जिले के कटोरिया प्रखंड के ग्राम पंचायत कटोरिया- के विभिन्न वाडों मे मुख्यमंत्री सात निश्चय योजना मुखिया प्रदीप कुमार गुप्ता के पहल से गतिमान दिख रहा है. इसी क्रम में बार्ड नं 9 मे बर्षो से लंबित सडक का पी सी सी सडक के निर्माण सेएक ओर जहां इस बार्ड के निवासीयो में हर्ष ब्याप्त है .बल्कि इस सडक से और कई बार्ड जैसे 8 और 4 बार्ड के लोगो को भी इसका लाभ मिलेगा इन बार्डो के सम्पर्क से यह नया पीसीसी रोड जुडगया है.इस संदर्भ में मुखिया प्रदीप कुमार गुप्ता ने वताया कि इस पीसी सी रोड का निर्माण सात निश्चय योजना के तहत बार्ड क्रियान्वयन समिति केबार्ड बिक्रम राम और बार्ड सचिव योगेश कुमार के द्वारा कराया गया .इस सडक कै र्निमाण बार्ड निवासी पुरूषोत्तम पांडे के घर से लेकर अखिलानन्द सिंह के घर तक किया गया जिसकी लम्वाई 220 फीट है .साथ ही लागत राशि 3,32,690 है.इस बार्ड मे महादलित अति पिछडा समुदाय के लोग निवास करते हैं जों बर्षो से उपेक्षा का शिकार था .परन्तु इस सडक के र्निमाण से बार्ड निवासीयों खुशी का माहौल हैं अव उन्हे बरसात के दिनो में कीचड,एवं जल जमाव का सामना नही करना पडेगा.

मुखिया जी ने आगे वताया कि बार्ड क्रियान्वयन समिति के द्वारा बार्ड नं 8 में सडक र्निमाण का कार्य किसी कारण वश बंद था,अपनी देख रेख में उसे पूर्ण कराने की ओर अग्र सारित किया हूं अपितु तीन दिनो में इसका कार्य पूरा हो जाएगा.

वार्ड नं 7 के निर्माणाधीन सड़क का दृश्य

निर्मित सड़क का दृश्य

जीने की आस

दिन छूट जाता है
रात भर जाती है
तेरे दीदार की
आस पड़ जाती है ।
काहे की उलझन
काहे की प्यास है
बस जानू इसे ,
यही तो बात है ।
बरबस चकोर सा मै
ताकता रह जाता हूँ।
तू अब आई अब आई,
यही झांकता रह जाता हूं ।।
और अब ना तरसाओ,
आकर आस बंधाओं।
क्या मैं तुझसे हूं,
क्या तू मुझमें हो।
दिन छूट जाता है
रात भर जाती है।।
बड़ा अंधेरा दिखता है
राह भी अंजानी है।
भटक गया हूँ मै,
तेरे आस की ठानी है।।
मैं बालक अनजाने
राह से घायल हूं।
अंधकारों को अब ,
मिटा दो आद्या।।
तुझ पर जो आश्वस्त
हो चला निश्चिंत
बस जीने की
आस जो बढ़ जाती है।।
- राहुल, बांका

मंदार रत्न सम्मान से सम्मानित हुए जिलाधिकारी कुंदन कुमार

पापहरणी सरोवर में भव्य महाआरती का आयोजन

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

जय मंदार के गूंज से गुजायमान हुआ सम्पूर्ण मंदार क्षेत्र .वेद-पुराणो में वर्णित मंदार पर्वत धार्मिक दृष्टिकोण से अति महत्वपूर्ण माना जाता रहा है.इसके तराई मे अवस्थित पापहरणी सरोवर भी कई धार्मिक आस्थाओं से जुडी है.कहा जाता है कि.इस सरोवर स्नान करने से सारे पाप धुल जाते हैं.प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो.राखाल दास बनर्जी ने मंदार पर्वत पर अंकित शिलालेखोम का सूक्ष्म अध्ययन किया था.उन्होनें एक शिलालेख केआधार पर लिखा है कि मंदार पर्वत के नीचे पापहरणी सरोवर को गुप्त वंश के राजा आदित्य सेन की धर्म पत्नी कोण देवी ने खुदवाया था. इसी मंदार की तराई मे अवस्थि पापहरणी सरोवर से देवउत्थान एकादशी के दिन मंदार का भव्य महाआरती काआयोजन किया गया.साथ ही पापहरणी सरोवर के मध्य अवस्थित लक्ष्मीनारायण मंदिर का उन्नीसवां बार्षिकोत्सव मनाया गया.इसमें सुल्तानगंज से आए जान्हवीं गंगा महाआरती सभा के महामंत्री राजीव कुमार झा के नेतृत्व में पंडित कृष्णा मिश्रा ,पंडित रजनीश मिश्रा, पंडित नवीनझा, पंडित देव कुमार,पंडित गुलशन कुमार के द्वारा सामवेदी मंत्रोच्चारण के साथ मंदार का भव्य महाआरती का अतिलविहंगम दृश्य प्रस्तुत किया गया.भक्ति भजनों से पूरा मंदार क्षेत्र में भक्तिमय कालमागौल ब्याप्त था.इस अवसर पर भारी संख्या मे श्रद्धालु पुहचें थे .करीव एक धंटे तक मंदार महाआरती का कार्यक्रम चलता रहा.इससे पहले प्रातः में भगवान को नए पारंपरिक बस्त्रधारण करा कर उनकी पूजाअर्चना की गई.लक्ष्मी नारायण मंदिर प्रबंधन समिति के सदस्य ऱाजाराम अग्रवाल एवं उनकी पत्नी नीताअग्रवाल पूजा पर यजमान के रूप में बैठे थे पुजारी भवेश झा के द्वारा विधि विधान पूर्वक पूजा कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया.

पापहरणी सरोवर में महाआरती करते पंडितगण

मंदार रत्न सम्मान

मंदार की तराई मे अवस्थित पापहरणी सरोवर के तट पर महाआरती के विहंगम दृश्य को साक्षी मानते हुए .लक्ष्मी नारायण मंदिर धार्मिक न्यास समिति के द्वारा पापहरणी सरोवर के समीप बने भब्य मंच पर कुंदन कुमार, जिलाधिकारी, बांका. को मंदार रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया.जिलाधिकारी द्वारा चलाए जा रहे उन्नयन कार्यक्रम एवं मंदार के लिए उन के द्वारा किये गए श्रृजनात्मक प्रयासोंएवं बांका जिले को विश्व मानस पटल पर विख्यात करने हेतु इन्हे यह सम्मान से सम्मानित किया गया. साथ ही मंदार का मोमेंटो ,सम्मान पत्र व अंग वस्त्र से सम्मानित किया गया.

मंदार रत्न सम्मान प्राप्त करते जिलाधिकारी कुंदन कुमार

आज का दिन काफी शुभ है. ऐसा संयोग है कि मंदार में चार करोड़ की लागत से बनने आर्ट एंड काफ्ट विलेज की स्वीकृति मिली हैं भक्ति मे ही शक्ति होती है. आज मंदार का जो नजारा दिख रहा है.इसमे सव का योगदान सराहनीय है.अगर सवों की सहभागीगिता निरंतर होती रहेगी तो तो मंदार का विहंगम दृश्य विश्व पटल पर देखने को मिलेगा.

कुंदन कुमार
जिलाधिकारी, बांका

पेशनरों को सेवान्त लाभ दिलाने में बांका प्रखंड जिले मे अब्बल

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बांका जिले के ११ प्रखंडों मे सेबांका प्रखंड पेशनरों की सुधि ले कर सेवान्त लाभ दिलाने में जिले मे अब्वल रहे हैं .बर्तमान समय मे जिले के विभिन्न कार्यालयों से

सेवानिबृत हुए सरकारी कर्मी को पेशन हेतु दर दर की खाक छाननी पडती थी.इस संदर्भ मे प्रखंड बिकास पदाधिकारी बांका बिजय कुमार चन्द्र ने चर्चित बिहार को बताया कि इसका कारण सेवा पुस्तिका काअद्यतन नही होगो .सेवा काल मे लिए गए वित्तीय सेवा का निस्पादन नही होना या किसी खास कारण वश सेवा अवधि मे कागजी प्रक्रिया का दुरूस्त नही होना भी माना जा सकता है.परन्तु वर्तमान समय में सरकार के द्वारा जिले के प्रत्येक सरकारी कर्मी जो विभिन्न विभाग से सेवानिबृत हो चुके या होने बाले हैं ,की सुधि लेने हेतु सरकार से निंदेशन समय समय पर प्राप्त होने से इस प्रक्रिया मे तेजी आई है.,तथापि कुछ तकनीकि ब्यवधान के कारण भी बिलंभ होने कीआशंका रहती हैं .परन्तुअव इसमे गति आ गई है.इसक्रम में इन्होने बताया कि बांका प्रखंड कार्यालय से सेवानिबृत होने बाले सभी कर्मी यों को सेवान्त लाभ प्राप्त वाली सारी प्रक्रिया पूरी कर ली गई है .तथा कुछेक सेवानिबृति के कई बर्षो बाद भी पेशन का लाभ नही मिल रहा था .परन्तु अव यह नियमित हो गया हैं.इसक्रम में चन्द्रेश्वरी बैठा(पंचायत सचिव)का 2016 से, अक्षय कुमार सिंह (प्रखंड कृषि पदाधिकारी)राजेन्द्र प्र.मंडल (पंचायत सचिव) 2018 से अनंत चन्द्र नन्दी(पंचायत सचिव) 2017 से तथा सुशील टुटु (पंचायत सचिव) 2016 से इन सभी सेवा निबृत कर्मी यों को पेंशन प्राप्त नही हो रहा था ,जो कि अव नियमित हो चुका है.

इसके साथ ही प्रखंड विकास पदाधिकारी ने वताया कि बिभाग मे बैसे सभी खाते को बंद कर उस राशि को सरकारी कोष मे जमा कर दिया जिसमे पूर्व मे खुले १२ पासबुक एवं १२ कैश बुक को बंद कर दिया गया जे कि अपने अस्तित्व मे थी जिसका कोई उपयोग नही था.हां अगर सावधानी नही बरती जाय तो इस बात से इंकार नही किया जा सकता कि इससे वित्तीय अनिमित्तता हो सकती थी.इसे गंभीरता से लेते हुए .इन्होने इसखाते को बंद कर इसमे जमा रकम को सरकारी कोष मे जमा कर एक कर्तव्यनिष्ट पदाधिकारी होने का परिचय दिया.

बांका प्रखंड कार्यालय से पूर्व मे सेवानिबृत हो ने वोले बहुत से कमीर्यों का पेंशन कई तकनीकि व्यवधान से लंबित था.जिसे अपने अधिनस्त कमीर्यों एवं वरीय अधिकारीयों के सहयोग से निस्पादित करलिए जाने से सेवानिबृत कमीर्यों को पेंशन का लाभ मिलना प्रारंभ हो गया है .साथ ही पूर्व में खुले १२ विभागीय खाते को बंद कर उस राशि को सरकारी कोष मे जमा कर दिया गया है.,जो ब्यवहरित नही होकर अपने अस्तित्व में था.

मुख्यमंत्री ग्राम परिवहन मेला में कई लाभुकों को मिला लाभ

आर.एम .के मैदान मे मेला का था आयोजन

लाभुकों को मेला मैदान में वाहन की चाबी सौंपते जिलाधिकारी कुंदन कुमार

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

ग्रामीण इलाको के युवाओं को रोजगार से जोडने के लिए शुरू की गई मुख्यमंत्री ग्राम परिवहन योजना का लाभ दिलाने हेतु परिवहन बिभाग के द्वारा परिवहन मेला काआयोजन स्थानीय आर .एम .के. हाई स्कूल के मैदान मे किया गया.जिसका उद्घाटन जिलाधिकारी कुंदन कुमार ,पुलिस कप्तान अरबिंद कुमार गुप्ता एव प्रशिक्षु आई.ए.एस व सदर एस .डी.ओ मनोज चौधरी के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया.हलाकि ग्राम परिवहन योजना के प्रति क्षेत्र के युवा उदासीन ही नजर आए.जो योजना के लिए चयन होने के बाबजूद वाहन की खरीद नही कर पा रहे हैं.

उद्घाटन के उपरान्त अपने संवोधन मे जिलाधिकारी कुंदन कुमार ने कहा कि मुख्यमंत्री ग्राम परिवहन योजना सरकार कीएक महत्वाकांक्षी योजना है,जो खास कर वेरोजगार युवाओ के उत्थान के लिए शुरू की गई है.लेकिन योजना के प्रति क्षेत्र के युवा उदासीन हैं.चयन के बाद भी कईयों ने वाहन कीखरीद नही की है.उनसे अपील करते है कि 11 नम्बवर तक अपने अपने वाहन की खरीद कर लें .जिलाधिकारी नेआगे वताया कि पूरे राज्य सहित बांका जिखरीदमें बेरोजगार एवं शिक्षित बेरोजगारों की बडी संख्या हैं.लेकिन एइस योजना से उनकी बेरोजगारी काफी हद तक कम की जा सकती है.इसके लिए युवाओं को आगे आना होगा.

परिवहन मेला में कुल ३१ लाभुमकों के खाते मे ३१ लाख भेज दिए गए.जवकि इस योजना के तहत ३४ लाभुंको का चयन किया गया.जवकि ३४१ लाभुकों के स्थान पडे. हैं रिक्त. जिले में मुख्यमंत्री ग्राम पकिवहन योजना के तहत कुल 925 लक्ष्य के विरूद्ध अव तक प्रथम,द्वितीय ,एवं तृतीय चरण मे 584 लाभुकों का चयन किया गया.इसमे अव तक महज 245 लाभुकों ने ही वाहन खरीदी है.जवकि चयन के बाबजूद 239 लाभुकों ने अव तक वाहन की खरीद नही की है. इसकेअलावे अभी भी बांका जिले में मुख्यमंत्री ग्राम परिवहन योजना के ३४१ स्थान रिक्त पडे. हैं.योजना की रिक्तियों मे शंभुगंज- पहले पायदान पर हैं., बाराहाट47 ,बेलहर में 52 ,फुल्लीडुमर में 28, कटोरिया मे 26, अमरपुरलमे 29, रजौन मे 25, बौंसी मे 29, चांदन में 17 , धोरैया में 16, एवं बांका मे 09 फीसदी रिक्तियाँ है. इस अवसर पर पुलिस कप्तान, अरबिंद कु.गुप्ता, प्रशिक्षु समाहर्ता, परिवहन पदाधिकारी, एम .भी.आई. अनुमंडलाधिकारी, मनोज कु चौधरी सहित सभी प्रखंड बिकास पदाधिकारी उपस्थित थे.

शातिर शराब तस्कर को हथियार कारतूस के साथ पुलिस ने किया गिरफ्तार

प्रेसवार्ता के दौरान अपराधियों की जानकारी देते एसपी अरविंद कुमार गुप्ता

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बांका जिले के बाराहाट थाना क्षेत्र के मोतीहाट के समीप वाहन जाँच के दौरान हथियार के साथ एक शातिर शराब तस्कर को गिरफ्तार करने मे पुलिस को सफलता मिली जवकि दो शातिर मौके बारदात से भागने में सफल रहा.गिरफ्तार तस्कर सिन्टु कुमार पिता ललन प्रसाद यादव जो स्टेशन चौक मधेपुरा का रहने बाला बताया जाता है.जवकि लालटुऔर संतोष वह भी मधेपुरा का रहने बाला है.भागने मे सफल रहा. पुलिस अधीक्षक अरबिन्द कुमार गुप्ता ने प्रेस कॉन्फ्रेस कर बताया कि मेरे निंदेश के आलोक मे बाराहाट थाना के पुलिस पदाधिकारी,पुलिस बल के साथ बाराहाट मोतीहाट के पास वाहन चेकिंग कर रहे थे.वाहन चेंकिंग के दौरान दुमका (झारखंड) की ओर से विना नम्बर की एक लाल रंग की क्यूड गाडी (चार चक्का)आ रही थी.पुलिस द्वारा वाहन चेंकिंग करते देख कर गाडी को घुमाकर पुनः दुमका झारखंड की तरफ सभी शातिर भागने लगे .उस वाहन को भागता देख वाहन चेकिंग कर रहे पुलिस पदाधिकारीएवं पुलिस बल के द्वारा पीछा करते हुए वाहन को पकड. लिया गया.इसके बाद गाडी की तलाशी ली गई,तो इस क्रम में 200 एम.एल का मसालेदार शराब का 1400 पाउच एक पिस्टल ,तीन गोलीयाँ एवं एक मोवाईल फोन की वरामदगी हुई.पुलिस कप्तान ने आगे बताया कि गिरफ्तार तस्कर के बिरूद्ध मद्य निषेध अधिनियम के तहत कार्यवाई करने के साथ साथ आम्स एक्ट के तहत भी कार्यवाई की जाएगी.साथ ही फरार तस्कर को भी जल्द गिरफ्तार तर लिया जाएगा.फरार बदमाश की कुंडली खंगाली जा रही है.जो मोस्ट बांटेड हैं .कई मामलों मे इनकी संलिप्तता उजागर हुई है,दुमका से मधेपुरा शराब की बिक्री करने हेतु ले जा रहा था.मधेपुरा सहित अन्य कई जिलो की पुलिस को इनलोगों की तलाश थी.इनके बिरूद्ध कई मीमले बिभिन्न थानों मे लंबित हैंइस प्रेस कॉन्फ्रेस मे बाराहाट थानाध्यक्ष परिक्षित पासवान ,एस.डी.पी.ओ.दिनेश चन्द्र श्रीवास्तव,एव अन्य पुलिस कर्मी उपस्थित थे.

बीसीसीआई के नए अध्यक्ष दादा

सौरव गांगुली को भारतीय क्रिकेट के महाराजा के तौर पर जाना जाता है। अब उनकी इस पदवी के साथ पद भी महाराजा वाला जुड़ गया है। वह देश की क्रिकेट की शीर्ष संस्था बोर्ड ऑफ कंट्रोल फॉर क्रिकेट इन इंडियाह्न के नए बॉस बन गए हैं। हालांकि विधिवत तौर पर इसकी घोषणा आगामी 23 अक्टूबर को बोर्ड की सालाना मीटिंग में होने वाले चुनाव के बाद होगी, लेकिन इस ओहदे पर उनका विराजमान होना तय है। कारण बोर्ड के अध्यक्ष पद के लिए सौरव चंडीदास गांगुली अकेले उम्मीदवार हैं। इसलिए उनका निर्विरोध चुना जाना निश्चित है। दुनिया के सबसे अमीर और शक्तिशाली क्रिकेट बोर्ड का अध्यक्ष और वह भी निर्विरोध चुने जाने से उनकी जिम्मेदारियां भी काफी बढ़ गई हैं। ऐसा बेवजह भी नहीं है क्योंकि वह भारतीय क्रिकेट का चेहरा बदलने वाले क्रिकेटर रहे हैं।

उन्होंने सन 2000 में भारतीय टीम की बागडोर ऐसे समय में संभाली जब उसपर मैच फिक्सिंग का काला साया मंडला रहा था। अपने जुझारूपन और नेतृत्व क्षमता के दम पर महज 6 माह में उन्होंने टीम इंडिया की तस्वीर व तकदीर, दोनों बदलकर रख दी। उसी साल केन्या में खेली गई चैम्पियंस ट्रॉफी में भारत ने फाइनल तक का सफर तय किया। हालांकि भारत खिताबी भिड़ंत में न्यूजीलैण्ड के हाथों हार गया लेकिन इसमें कप्तान गांगुली के साथ-साथ पूरी टीम की फाइटिंग स्प्रिट उभरकर सामने आई। गौरतलब है कि फिक्सिंग स्कैंडल के बाद पहली बार भारतीय टीम ने किसी आईसीसी टूनार्मेंट में हिस्सा लिया था।

फिर चाहे वह घरेलू मैदान में ऑस्ट्रेलिया के विरुद्ध मिली कामियाबी हो या फिर 2002 की श्रीलंका के साथ चैम्पियंस ट्रॉफी का संयुक्त खिताब जीतना। गांगुली की कप्तानी ने हिंदुस्तानी क्रिकेट के लिए नए रास्ते खोल दिए। नैटवेस्ट सीरीज-2002 के लार्ड्स में खेले गए उस फाइनल मैच की तस्वीरें भला क्रिकेट प्रेमी कैसे भूल सकते हैं, जब बेहद रोमांचक मैच में मिली जीत के बाद गांगुली ने जोश के मारे पवेलियन में अपनी टी-शर्ट उतार कर लहरानी शुरू कर दी। यही वह लम्हा था जब दुनिया ने गांगुली की नेतृत्व क्षमता का लोहा माना। उसके बाद गांगुली की सबसे बड़ी सफलता 2003 के विश्व कप में टीम इंडिया को फाइनल तक पहुंचाना रही। सौरव गांगुली ने पांच साल टीम इंडिया की कप्तानी की। इस दौरान कामियाबी की कई इबारतें लिखीं।

उन्होंने न केवल सचिन तेंदुलकर, वीरेंद्र सहवाग, राहुल द्रविड़, वीवीएल लक्ष्मण और अनिल कुंबले सरीखे दिग्गज खिलाड़ियों को एक सूत्र में पिरोया, बल्कि हरभजन सिंह, जहीर खान, युवराज सिंह और मोहम्मद कैफ जैसे युवाओं खिलाड़ियों की फौज तैयार की। नए-पुराने खिलाड़ियों का यह गठजोड़ दुनिया की किसी भी टीम को धूल चटाने का माद्दा रखता था। साथ ही व्यक्तिगत योगदान के जरिए भी टीम को गाइड करते रहे। कुल 424 अंतरराष्ट्रीय मैचों में 18,575 रनों का भारी-भरकम स्कोर और 132 विकेट उनके बेजोड़ खेल की नजीर है। संयोगवश दादा को टीम इंडिया की तरह ही बीसीसीआई की भी कमान ऐसे समय में सौंपी गई, जब सुप्रीम कोर्ट की सख्ती और कमेटी ऑफ एडमिनिस्ट्रेटर (सीओए) की मनमानी से बोर्ड की संस्कृति दूषित हुई है।

ऐसे में एक बार फिर भारतीय क्रिकेट को दादा की आवश्यकता है। ऐसे में गांगुली के बोर्ड अध्यक्ष बनने को क्रिकेट जगत में एक सकारात्मक संदेश के रूप में देखा जा रहा है। बोर्ड के इतिहास में यह दूसरा अवसर है, जब किसी पूर्व कप्तान को शीर्ष पद की जिम्मेदारी दी जा रही है। इससे पहले विजयनगरम के महाराजकुमार को यह गौरव हासिल रहा है। हालांकि यह जरूरी नहीं है कि एक अच्छा क्रिकेटर अच्छा प्रशासक भी साबित हो। जस्टिस लोढ़ा कमेटी की सिफारिशों के अनुसार बीसीसीआई के नए नियम में छह वर्ष की मुद्दत पूरी करने वाली किसी प्रदेश या बोर्ड के पदाधिकारी को तीन साल के कूलिंग ऑफह्न में जाना पड़ेगा। क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बंगाल के अध्यक्ष पद पर पांच साल से अधिक समय से विराजमान होने के नाते उनके पास बीसीसीआई अध्यक्ष पद के लिए महज 10 माह का समय है। इतने कम समय में वैसे भी किसी से करिश्मे की उम्मीद करना बेमानी है लेकिन गांगुली के कद और पद को देखते हुए ऐसी उम्मीदें परवान चढ़ना लाजमी हैं।

वीरेंद्र सहवाग ने बताया- सौरव गांगुली को लेकर एक भविष्यवाणी हुई सच, एक अभी बाकी

सौरव गांगुली बीसीसीआई के 39वें अध्यक्ष हैं, वो भारतीय इतिहास में महज दूसरे कप्तान हैं जिसे ये गौरव हासिल हुआ हैसौरव गांगुली के बीसीसीआई अध्यक्ष बनने के बाद वीरेंद्र सहवाग ने एक दिलचस्प खुलासा किया है. टीम इंडिया के पूर्व ओपनर वीरेंद्र सहवाग ने कहा कि उन्होंने 13 साल पहले ही गांगुली के बीसीसीआई अध्यक्ष बनने की भविष्यवाणी कर दी थी. वीरेंद्र सहवाग ने ये भी कहा कि उन्होंने एक दिन गांगुली के सीएम बनने की भविष्यवाणी भी की है, जिसका सच होने का इंतजार वो बेसब्री से कर रहे हैं.

सहवाग की भविष्यवाणी की कहानी

वीरेंद्र सहवाग ने इंडियन एक्सप्रेस में अपने कॉलम में खुलासा किया, 'जब मैंने पहली बार सुना कि गांगुली बीसीसीआई के अध्यक्ष बनने वाले हैं तो मुझे साल 2007 की बात याद आ गई जब हम साउथ अफ्रीका दौरे पर थे. केपटाउन टेस्ट के दौरान मैं और वसीम जाफर जल्दी आउट हो गए थे. सचिन नंबर 4 पर बल्लेबाजी करते थे, लेकिन वो नहीं गए. तभी गांगुली को नंबर 4 पर बल्लेबाजी के लिए कहा गया. वो गांगुली की कमबैक सीरीज थी और उनपर दबाव था, लेकिन जिस तरह से उन्होंने बल्लेबाजी की और दबाव को झेला, वो सिर्फ गांगुली ही कर सकते थे.'

सहवाग ने 2007 में गांगुली के बीसीसीआई अध्यक्ष बनने की बात कही थी

सहवाग ने आगे लिखा, 'उस दिन हम सभी खिलाड़ियों को ड्रेसिंग रूम में लगा कि अगर हम खिलाड़ियों में अगर कोई बीसीसीआई प्रेसिडेंट बन सकता है तो वो दादा ही हैं. मैंने ये भी कहा था कि एक दिन वो बंगाल के मुख्यमंत्री भी बनेंगे. एक भविष्यवाणी तो पूरी हो गई, और एक बाकी है.

गांगुली की वजह से चमका करियर

वीरेंद्र सहवाग ने ये भी कहा कि उनके करियर में सौरव गांगुली का बेहद अहम योगदान रहा. सहवाग ने कहा कि उनके मिडिल ऑर्डर बल्लेबाज से ओपनर बनने के पीछे गांगुली थे. गांगुली ने उन्हें ओपनिंग करने के लिए कहा और साथ में ये भी भरोसा दिया कि उन्हें खुद को साबित करने के भरपूर मौके दिए जाएंगे.

गांगुली ने बनाया था सहवाग को ओपनर

गांगुली ने उन्हें कहा था कि टीम में सिर्फ ओपनिंग की जगह खाली है, मिडिल ऑर्डर में बल्लेबाजी करने के लिए उन्हें इंतजार करना पड़ेगा. गांगुली ने उन्हें भरोसा दिया था कि एक अगर वो ओपनर के तौर पर तीन-चार पारियों में फेल रहे तो वो उन्हें मिडिल ऑर्डर में मौका देंगे. गांगुली के कहने के बाद सहवाग का करियर की चमक गया. उन्होंने वनडे और टेस्ट दोनों फॉर्मेट में अपने तूफानी बल्लेबाजी से कई रिकॉर्ड बनाए और तोड़े.

भारतीय दर्शकों को भाता हॉलीवुड

इस साल भारत में प्रदर्शित हो चुकीं या होनेवाली हॉलीवुड की तीन दर्जन फिल्में देशी सिनेमा को ठोस चुनौती दे रही हैं। कुछ समय से जोकरह्ल और लायन किंगह्ल की धूम है। पिछले साल भारतीय भाषाओं में डब की गयीं और असली अंग्रेजी वाली हॉलीवुड की फिल्मों ने टिकट खिड़की पर हुए समूचे कारोबार में लगभग एक-तिहाई की हिस्सेदारी हासिल की थी। इस हिसाब को देखकर भले ही बॉलीवुड या दक्षिण भारतीय सिनेमा उद्योग अभी भी इत्मिनान में रहे कि बाजार का बड़ा हिस्सा उसके पास है तथा कुछ सुपर-डुपर फिल्मों की कमाई से हॉलीवुड फिल्मों को पीछे छोड़ा जा सकता है, किंतु इसके साथ यह भी देखा जाना चाहिए कि भले ही बाहर की फिल्में हिंदी, तमिल और तेलुगु में डब हों या अंग्रेजी में हों, उन्हें बहुत कम थिएटर और परदे मिलते हैं।

हमारे यहां की ब्लॉकबस्टर फिल्में हजारों परदों पर एक साथ रीलीज होती हैं। दस साल पहले तक विदेशी फिल्में कारोबार में तीन-चार फीसदी ही जगह बना पाती थीं। साल 2017 में इन फिल्मों ने 650 करोड़ के आसपास कमाया था, पर अगले ही साल यह आंकड़ा नौ सौ करोड़ से अधिक जा पहुंचा। पिछले साल कुल पांच दर्जन से ज्यादा हॉलीवुड फिल्में भारत में दिखायी गयी थीं। ऐसा लगता है कि तीन दर्जन फिल्में ही पिछले साल की कमाई को पीछे छोड़ देंगी। उल्लेखनीय है कि पिछले साल 228 हिंदी फिल्में ही रिलीज हुई थीं। हमारे देश में अभी नौ हजार के आसपास परदे हैं और इस तादाद में हर साल आठ-नौ फीसदी की बढ़त हो रही है।

ऐसे में हॉलीवुड फिल्में भी अधिक परदों तक पहुंच बनाना चाहेंगी। अब तो पहले की तरह भाषा की बंदिश भी नहीं है और दर्शकों ने डब फिल्मों को भी सर-आंखों पर बैठाया है। सोशल मीडिया और इंटरनेट पर फिल्म देखने के प्लेटफॉर्म के विस्तार ने भी दर्शकों की रूचि बढ़ायी है। मीडिया में भी उन फिल्मों पर खूब चर्चा होती है। हालांकि सेन्सरशिप और भारतीय परिवेश से कथानक का अलग होना हॉलीवुड के लिए एक बड़ी बाधा है, लेकिन इससे पार पाना कोई बहुत मुश्किल काम नहीं है। वे फिल्में अपने प्रचार पर भी खर्च बढ़ाने लगी हैं। साल 2018 में टेलीविजन पर फिल्मों के प्रचार पर 285 करोड़ का खर्च हुआ था। इसमें से अंग्रेजी फिल्मों ने 18 फीसदी दिया था। ये फिल्में डब भाषाओं से इतर भाषाओं में भी ट्रेलर रिलीज करने लगी हैं। हॉलीवुड सितारे प्रचार के लिए भारत आने लगे हैं तथा विभिन्न कंपनियों ने अपना दफ़्तर भी खोल लिया है। हॉलीवुड के इस स्थानीयकरण की प्रक्रिया से हमारे उद्योगों को सावधान हो जाना चाहिए। सिनेमा उद्योग को इंटरनेट ओवर द टॉपह्ल चैनलों से भी कड़ा मुकाबला है। यहां वेब सीरीज का जलवा उफान पर है और सिनेमा की अच्छी प्रतिभाएं उधर का रूख कर रही हैं। हॉलीवुड फिल्मों के लिए भी वे अच्छी कमाई का माध्यम बन रहे हैं। हिंदी फिल्मों का बड़ा माध्यम टेलीविजन भी है, पर यहां दक्षिण भारत की डब की गयी फिल्मों की बाढ़ सी आ गयी है। कुछ भारतीय फिल्में अमेरिका, यूरोप और चीन के बाजार में कमाई कर रही हैं, पर उन बाजारों पर हमारी इंडस्ट्री का ध्यान कम ही है। घरेलू बाजार में एक बड़ी चुनौती होती है कि रिलीज के तीन-चार दिनों में बढ़िया कमाई हो जाए, ताकि हफ़्ता-दो हफ़्ता थिएटर में फिल्में रहें भी और कमायें भी, लेकिन इस मोर्चे पर भी बड़े शहरों में हॉलीवुड कभी-कभी हावी हो जाता है।

ऐसी स्थिति में स्टार सिस्टम के भरोसे यानी दो- चार सुपरस्टारों के कांधे पर कब तक दो सौ-पांच सौ करोड़ कमाने का खेल खेला जाता रहेगा? घिसी-पिटी कहानियों से दर्शकों को कब तक बहलाया जाता रहेगा? हॉलीवुड की फिल्मों की वेराइटी जोरदार है। वहां थ्रिलर, साइंस-फिक्शन, सुपरहीरो, फैंटेसी, कार्टून, ऐतिहासिक आदि हर श्रेणी की फिल्में उम्दा तकनीक और कथानक के साथ पेश की जा रही हैं। हमारा युवा, जो सिनेमा का सबसे बड़ा दर्शक है, वह वैश्विक संस्कृति से परिचित है और उसका स्वाद लेना चाहता है। जब उसे अपने सिनेमा में मजा नहीं आयेगा, तो वह हॉलीवुड या इंटरनेट का रूख करेगा ही। हमारी फिल्में विज्ञापन पर बहुत खर्च करती हैं। इससे मुनाफा बंट जाता है। इन तमाम पहलुओं पर हमारे फिल्मकारों को गंभीरता से सोचना चाहिए।

महानायक, कल भी आज भी

अमिताभ बच्चन कहा करते हैं कि वे कभी सुपरस्टार नहीं रहे और न ही वे इसमें भरोसा करते हैं। यह बयान उनकी विनम्रता का परिचायक हो सकता है या अपनी हस्ती के बारे में निश्चिंत होने का सूचक। लेकिन सच यही है कि सौ साल से अधिक के भारतीय सिनेमा के इतिहास में लोकप्रियता के उस शिखर तक कोई और अभिनेता नहीं पहुंच सका, जिस मुकाम पर बच्चन पहुंचे और बने रहे। इतना ही नहीं, उन्होंने सिनेमा को बदलने तथा पॉपुलर कल्चर पर असर डालने में भी बड़ी भूमिका निभायी। पचास सालों की इस यात्रा में राजनीतिक और व्यावसायिक कारणों से उन्हें विवादों का सामना भी करना पड़ा तथा अलग-अलग तरह के संघर्षों से गुजरना पड़ा है।

जैसा कि परदे पर उनके किरदारों के साथ होता है, असली जिंदगी में भी कभी मजबूत और कभी कमजोर नजर आते हैं। मनुष्य होने के नाते ऐसा होना सामान्य भी है। अमिताभ बच्चन के इस सामान्य होने से उनका सिनेमा का महानायक होना और भी चमकदार और मिथकीय हो जाता है। उन्हें सिनेमा के सबसे बड़े सम्मान दादासाहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किये जाने की घोषणा के बाद से एक बार फिर उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं और विवादित आयामों पर चर्चा हो रही है। लेकिन बेहतर यही है कि इस सम्मान के संदर्भ में उनके सिनेमाई योगदान और उपलब्धियों की चर्चा हो, विवादों और परदे से बाहर की बातों को किसी और दिन के लिए छोड़ दिया जाए।

यह अपने आप में किसी चमत्कार से कम नहीं है कि

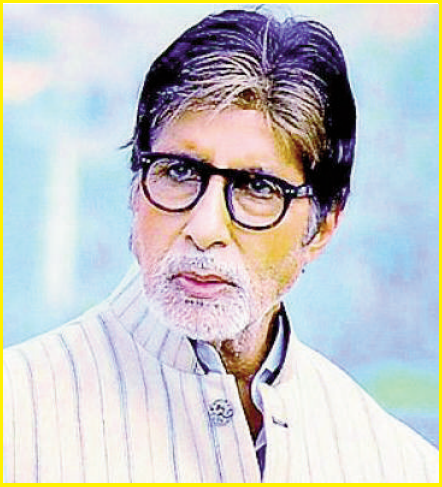

साधारण शक्ल-सूरत और सामान्य से अधिक लंबाई का एक दुबला-पतला लड़का ग्लैमर की उस दुनिया का सबसे चमकदार सितारा साबित हुआ। इसी के साथ यह भी याद किया जाना चाहिए कि उनकी जिस आवाज की वजह से उसे रेडियो में नौकरी नहीं मिल सकी थी, वह आवाज इस देश की सबसे जानी-पहचानी आवाज बन गयी। कहा जाता है कि जब अमिताभ बच्चन मायानगरी पहुंचे, तो पिता हरिवंश राय बच्चन के कहने पर फिल्मकार-साहित्यकार ख्वाजा अहमद अब्बास से मिले। अब्बास ने उनके पिता को लिखा कि उन्होंने ऐसी खराब जगह अपने बेटे को क्यों भेज दिया। इस पर प्रसिद्ध कवि ने कहा कि जिस जगह अब्बास जैसे लोग हों, वह जगह खराब नहीं हो सकती। अमिताभ बच्चन के करियर की शुरूआत मृणाल सेन की फिल्म भुवन शोमह्न में सूत्रधार के रूप में हुई, जिसमें सिर्फ उनकी आवाज थी। यह फिल्म भारत में समानांतर फिल्मों की शुरूआत मानी जाती है। फिर उन्होंने अब्बास और ऋषिकेश मुखर्जी के निर्देशन में अभिनय किया। उसके बाद ज्योति स्वरूप, सुनिल दत्त और एस. रामानाथन के साथ काम किया।

लेकिन प्रशंसाओं के बावजूद सफलता अभी दूर ही थी। साल 1973 में सलीम खान और जावेद अख्तर ने अमिताभ बच्चन को ध्यान में रखकर जंजीरह्न की कथा और पटकथा लिखी। इस फिल्म को प्रकाश मेहरा ने निर्देशित किया। इसी के साथ सिनेमा के परदे पर एंग्री एंग मैनह्न का अवतार हुआ और इस किरदार ने नायक को रोमांस और मासूमियत के दायरे से निकाल कर जनता के सत्ता और शासन के खिलाफ आक्रोश का प्रतिनिधि बनाकर खड़ा कर दिया। उस दौर के भारत में आजादी के बाद का आशावाद बिखर रहा था।

शासन लचर और लापरवाह होता जाता था तथा लोग हताश और निराश। सत्ता हो या समाज में पैठ बनाये शोषक, आम जन के लिए न्याय हासिल करने के लिए यह एंग्री एंग मैनह्न लड़ने पर उतारू था। इस लड़ाई में वह नैतिकता और वैधानिकता को भी ठेंगे पर रख सकता था। लक्ष्य को पाने के लिए गलत और बेईमान भी हो सकता था। सत्तर और अस्सी के दशक में अमिताभ बच्चन ने प्रकाश मेहरा और मनमोहन देसाई के निर्देशन में ऐसे किरदार को बार-बार निभाया।

छठ पर्व ,गुरूनानक जयंती, इद-उल मिलादीउ के शुभ अवसर पर समस्त देशवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

पुतुल कुमारी
पूर्व सांसद
बांका

छठ पर्व ,गुरूनानक जयंती, इद-उल मिलादीउ के शुभ अवसर पर समस्त देशवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

प्रदीप कुमार गुप्ता
मुखिया
ग्राम पंचायत
कटोरिया
जिला- बांका